राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस समूह

मध्यप्रदेश राजस्थान हरियाणा छत्तीसगढ़ महाराष्ट्र से प्रकाशित

डाक पंजीयन क्रं. 173/15-17 | 5 बार्सिलोना ने 28वीं बार जीता ला-लीगा | सम्पादकीय | पाकिस्तान से तनाव के बीच बीएसएफ... | तुर्किए की फर्म से अडाणी ने पार्टनरशिप खत्म की | 5

वर्ष 11 अंक 351 E-mail: dholpur@hotmail.com फरीदाबाद, शनिवार 17 मई 2025 ई-पेपर के लिए लॉगऑन करें -www.hindustanexpress.online मूल्य 2.00 रुपया, पृष्ठ 8

ऑपरेशन सिंदूर का दुनिया भर में संदेश देने सर्वदलीय नेताओं को भेजेगी सरकार

सर्वदलीय नेताओं को भेज सकती है विदेश

आर.एन.एस

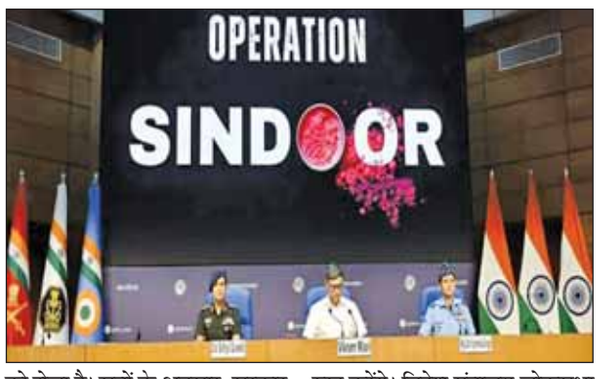

नई दिल्ली। ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत कूटनीतिक कदम आगे बढ़ा रहा है। मोदी सरकार अब ऑपरेशन सिंदूर का संदेश दुनिया तक पहुंचाना चाहती है। जिसके लिए केंद्र सरकार आने वाले दिनों में कई देशों में सर्वदलीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल भेजने की योजना बना रही है। सूत्रों ने बताया कि इसके लिए सरकार ने कई विपक्षी सांसदों से संपर्क किया है और उन्हें विश्व की राजधानियों में भेजी जाने वाली टीमों का हिस्सा बनने के लिए आमंत्रित किया है। सरकार विदेशों में विशेष दूत भेजने के बारे में सोच रही है, ताकि यह बताया जा सके कि भारत किस तरह एकजुट है और पहलगाम में आतंकवादी हमले को झेला है। सूत्रों के अनुसार, सरकार अलग-अलग समूह बनाने के बारे में सोच रही है, मुख्य रूप से संसदीय स्थायी समितियों से शुरुआत करके, जो प्रभावी रूप से यह दर्शा सकें कि पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादी संगठनों के हमले के बाद भारत एकजुट है। सूत्रों ने बताया कि वे सबसे पहले यूरोप और खाड़ी देशों का रुख करेंगे। विदेश मंत्रालय लोकसभा और राज्यसभा सचिवालयों के साथ मिलकर इस प्रैक्टिस में भाग लेने वाले सांसदों की सूची तैयार कर रहा है। इसका एक उद्देश्य यह भी है कि प्रभावी ढंग से यह संदेश दिया जाए कि भारत पर पहले हमला हुआ था, और उसने जवाबी कार्रवाई करते हुए पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में नौ आतंकी ठिकानों पर हमले किए। इसी प्रकार के अभ्यास 1994 में तथा पुनः 2008 में पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादी समूहों और नेटवर्कों द्वारा भारत पर किये गए हमलों के बाद किये गये थे।

संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने कई विपक्षी सांसदों को फोन करके राष्ट्रीय हित में प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा बनने के लिए आमंत्रित किया है। बताया जा रहा है कि सरकार जिन सांसदों के संपर्क में है, उनमें कांग्रेस के शशि थरूर और सलमान खुर्शीद, एनसीपी (एसपी) की सुप्रिया सुले , टीएमसी के सुदीप बंद्योपाध्याय, एआईएमआईएम के असदुद्दीन ओवैसी , डीएमके की कनिमोझी और बीजेपी के बीजे पांडा शामिल हैं। खुर्शीद पूर्व विदेश मंत्री हैं, जबकि थरूर विदेश मामलों की संसदीय स्थायी समिति के अध्यक्ष हैं।

भारतीय सेना ने दिखायी ऐतिहासिक शौर्य, पराक्रम और वीरता : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

मुख्यमंत्री तिरंगा यात्रा में हुए शामिल-पूरा इंदौर हुआ देश भक्ति से ओतप्रोत

अपने शौर्य और पराक्रम से वीरता की अप्रतिम गाथा रचने वाले भारत के वीर सैनिकों के सम्मान में निकली तिरंगा यात्रा

हर तरफ हुआ भारत माता की जय और वंदे-मातरम् का उदघोष

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में अब नए दौर का शक्तिशाली भारत दिखाई दे रहा है। ऑपरेशन सिंदूर से हमारी तीनों सेना ने अपने साहस, शौर्य, पराक्रम और वीरता से दुश्मनों को करारा जवाब दिया है। भारतीय सेना ने दुश्मन को अल्प समय में ऐतिहासिक जवाब दिया है। ऑपरेशन सिंदूर से पूरी दुनिया ने हमारी ताकत, एकजुटता और अत्याधुनिक हथियारों का उपयोग देखा है। आतंकवादियों के मंसूबों को भी नाकाम किया गया है। कोई भी ताकत अब भारत को आगे बढ़ने से नहीं रोक सकती। हम सब सेना को सम्मान देने के लिए इस यात्रा में एकत्रित हुए हैं। लगातार तिरंगा यात्राओं से सेना के प्रति सम्मान व्यक्त किया जा रहा है। यह यात्रा जिला से लेकर पंचायत स्तर तक लगातार जारी रहेगी। उन्होंने इंदौर की तिरंगा यात्रा को ऐतिहासिक बताया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शुक्रवार को इंदौर में अपने शौर्य और पराक्रम से वीरता की अप्रतिम गाथा रचने वाले भारत के वीर सैनिकों के सम्मान में अपार जोश और उल्लास के साथ निकली तिरंगा यात्रा में शामिल हुए।इन्दौर में तिरंगा यात्रा बड़ा गणपति से प्रारंभ हुई और गोराकुण्ड, खजुरी बाजार होते हुए ऐतिहासिक महत्व के राजबाड़ा पर सम्पन्न हुई। यात्रा में मुख्यमंत्री डॉ. यादव विशेष रथ में सवार थे। उन्होंने हर तरफ हाथ हिलाकर नागरिकों का अभिवादन किया। यात्रा से पूरा शहर राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत हो गया और पूरा आसमान भारत माता की जय और वंदे-मातरम् के उदघोष से गुंजायमान रहा। यात्रा में बच्चों से लेकर वृद्धों तक हर आयु वर्ग के लोगों की भागीदारी रही। यात्रा में हर धर्म, हर जाति और हर वर्ग के लोग इस यात्रा में शामिल हुये और उन्होंने अपने राष्ट्रप्रेम की झलक बिखरते हुए सेना के प्रति अपना सम्मान व्यक्त किया।

यात्रा में नगरीय विकास एवं आवास मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय, जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट, सांसद श्री शंकर लालवानी तथा सुश्री कविता पाटीदार, महापौर श्री पुष्यमित्र भार्गव, पूर्व लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन, विधायकगण श्री रमेश मेंदोला, श्री गोलू शुक्ला, श्रीमती मालिनी गौड़, श्री महेंद्र हार्डिया, श्री मनोज पटेल, श्री सुमित मिश्रा तथा श्री श्रवण चावड़ा सहित अन्य जनप्रतिनिधि भी साथ थे।

महापुरुषों की प्रतिमा पर माल्यार्पण

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने तिरंगा यात्रा के प्रारंभ में बड़ा गणपति पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। उन्होंने तिरंगा यात्रा के समापन के बाद लोकमाता देवी अहिल्या बाई होलकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि प्रदेश में लोकमाता देवी अहिल्याबाई होलकर की 300वीं जयंती मनाई जा रही है। यह संयोग है कि 20 मई को तिथि के अनुसार उनकी जयंती है और विवाह की वर्षगांठ भी है। साथ ही उनके ससुर मल्हारराव होलकर की पुण्यतिथि भी है। इसको देखते हुए 20 मई को इंदौर के राजवाड़ा में कैबिनेट की बैठक आयोजित की जा रही है। इसी दिन से पूरे प्रदेश में 10 दिनी उत्सव का आयोजन भी शुरू किया जा रहा है। इसका समापन भोपाल में भव्य रूप से 31 मई को किया जाएगा। प्रदेश में 10 दिनी उत्सव के तहत जगह-जगह कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

ऑपरेशन अभी खत्म नहीं हुआ है और जो कुछ भी हुआ वह सिर्फ एक ट्रेलर था : राजनाथ सिंह

आर.एन.एस

भुज। भुज एयरफोर्स स्टेशन पर वायुसेना के जवानों को संबोधित करते हुए सिंह ने कहा, ÷हमने पाकिस्तान को प्रोबेशन पर रखा है। अगर उसका व्यवहार सुधरता है तो ठीक है, नहीं तो उसे कड़ी से कड़ी सजा दी जाएगी। ऑपरेशन सिंदूर अभी खत्म नहीं हुआ है। जो कुछ भी हुआ वह तो बस ट्रेलर था। जब सही समय आएगा तो हम दुनिया को पूरी तस्वीर दिखाएंगे। रक्षा मंत्री ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान जान गंवाने वालों को श्रद्धांजलि दी तथा घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। सिंह ने कहा, भुज 1965 और 1971 में पाकिस्तान के खिलाफ हमारी जीत का गवाह रहा है और आज फिर यह पाकिस्तान के खिलाफ हमारी जीत का गवाह बना है। मुझे यहां उपस्थित होकर गर्व महसूस हो रहा है।

ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारतीय वायुसेना की सराहना करते हुए उन्होंने कहा, ऑपरेशन सिंदूर के दौरान आपने जो कुछ भी किया, उससे सभी भारतीयों को गर्व हुआ है - चाहे वे भारत में हों या विदेश में। पाकिस्तान में पोषित आतंकवाद को कुचलने के लिए भारतीय वायुसेना के लिए सिर्फ 23 मिनट ही काफी थे। कल ही मैंने श्रीनगर में हमारे बहादुर सैन्यकर्मियों से मुलाकात की थी। आज मैं यहां वायु सेना के जवानों से मिल रहा हूं। कल मैं उत्तरी क्षेत्र में हमारे जवानों से मिला था और आज मैं देश के पश्चिमी भाग में वायु सेना के जवानों और अन्य सुरक्षाकर्मियों से मिल रहा हूं। मैं दोनों मोर्चों पर उच्च जोश और ऊर्जा देखकर उत्साह महसूस कर रहा हूं। मुझे विश्वास है कि आप भारत की सीमाओं को सुरक्षित रखेंगे। राजनाथ सिंह ने आगे कहा, ब्रह्मोस मिसाइल की ताकत को पाकिस्तान ने भी स्वीकार कर लिया है। हमारे देश में एक पुरानी कहावत है, दिन में तारे देखना। मेड इन इंडिया ब्रह्मोस मिसाइल ने रात के अंधेरे में दिन का उजाला दिखाया। मेरे लिए ये कहना गलत नहीं होगा कि लोगों को नाश्ता करने में जितना समय लगता है, आपने उतना समय दुश्मनों से निपटने में लगा दिया। आपने दुश्मनों की धरती पर जाकर मिसाइलें गिराईं। इसकी गूंज सिर्फ भारत की सीमाओं तक ही सीमित नहीं रही, बल्कि पूरे विश्व ने इसे सुना। वो गूंज सिर्फ मिसाइलों की नहीं थी, बल्कि आपकी और भारतीय सशस्त्र बलों के जवानों की बहादुरी की भी थी। ऑपरेशन सिंदूर 7 मई को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के जवाब में शुरू किया गया था, जिसमें 26 लोगों की जान चली गई थी।

ऑपरेशन सिंदूर प्रधानमंत्री के दृढ़ निश्चय, सटीक खुफिया जानकारी को दर्शाता है : अमित शाह

आर.एन.एस

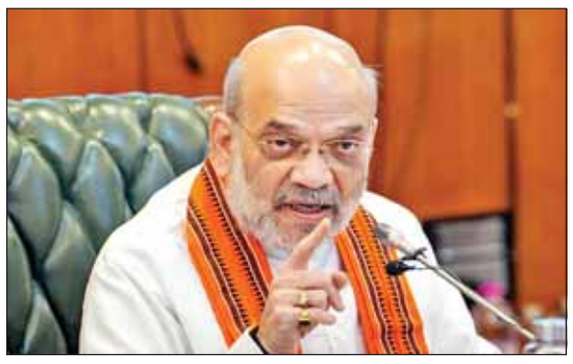

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को कहा कि ऑपरेशन सिंदूर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दृढ़ संकल्प, विभिन्न एजेंसियों द्वारा सटीक खुफिया जानकारी जुटाने और भारतीय सशस्त्र बलों की अचूक मारक क्षमता का प्रतिबिंब है। उन्होंने विभिन्न एजेंसियों के बीच खुफिया जानकारी साझा करने के लिए दिल्ली में एक नए बहु-एजेंसी केंद्र का उद्घाटन करने के बाद यह बात कही। शाह ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर मोदी के दृढ़ संकल्प, विभिन्न एजेंसियों द्वारा सटीक खुफिया जानकारी जुटाने और हमारे सशस्त्र बलों की अचूक मारक क्षमता का प्रतिबिंब था। खुफिया ब्यूरो के तहत बहु-एजेंसी केंद्र की स्थापना 26/11 के मुंबई आतंकवादी हमलों के बाद की गई थी, जिसका उद्देश्य कानून प्रवर्तन में शामिल विभिन्न हितधारकों के बीच समय पर जानकारी साझा करना था।

रक्षा बजट में 50 हजार करोड़ बढ़ाने का प्रस्ताव

नई दिल्ली। पाकिस्तान के खिलाफ ऑपरेशन सिंदूर के बाद केंद्र सरकार रक्षा बजट में 50,000 करोड़ रुपए बढ़ा सकती है। रक्षा मंत्रालय ने सरकार को फंड बढ़ाने का प्रस्ताव दिया है, जिसे संसद के नवंबर-दिसंबर के दौरान शीतकालीन सत्र में मंजूरी मिल सकती है। मीडिया रिपोर्ट्स में सरकारी सूत्रों के हवाले से यह जानकारी दी गई है। इसमें बताया गया है कि इस फंड से नए हथियार, गोला-बारूद और तकनीक खरीदी जाएंगी। साथ ही सेना की दूसरी जरूरतें, रिसर्च और डेवलमेंट पर भी खर्च किया जाएगा। बढ़ोतरी के बाद रक्षा मंत्रालय का ओवरऑल बजट 7 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा हो जाएगा। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 1 फरवरी को पेश किए गए 2025-26 के बजट में सशस्त्र बलों के लिए रिकॉर्ड 6.81 लाख करोड़ रुपए का बजट दिया था। इस साल रक्षा बजट पिछले साल की तुलना में करीब 9.5त्न ज्यादा है। केंद्र ने 2024-25 में सशस्त्र बलों के लिए 6.22 लाख करोड़ रुपए दिए थे। क्रू मोदी के नेतृत्व में भाजपा सरकार के पहले बजट 2014-15 में रक्षा मंत्रालय को 2.29 लाख करोड़ रुपए दिए गए थे।

मंत्री विजय शाह को बर्खास्त करने की मांग पर अड़े कांग्रेसी

केस में सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई टली, अगली सुनवाई 19 मई को

आर.एन.एस

भोपाल। मध्यप्रदेश के मंत्री विजय शाह द्वारा कर्नल सोफिया कुरैशी पर आपत्तिजनक टिप्पणी मामले में सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई 19 मई तक स्थगित कर दी है। शाह ने मध्यप्रदेश हाईकोर्ट के उस फैसले को चुनौती दी है, जिसमें उन पर एफआईआर दर्ज करने का आदेश दिया गया था। इससे पहले शुक्रवार को सुनवाई के दौरान मंत्री शाह के वकील ने कोर्ट से कहा कि हमें कुछ दस्तावेज दायर करने हैं। कोर्ट ने इसकी अनुमति दे दी। वहीं, कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी ने एक्स पर लिखा- बीजेपी अपने इन नेताओं पर कार्रवाई करने की जगह उन्हें बचाने में पूरा जोर लगा रही है। वह ऐसा करके हमारी सेना और देशवासियों को क्या संदेश देना चाहती है?

मध्यप्रदेश के नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार के नेतृत्व में कांग्रेस विधायकों का प्रतिनिधिमंडल आज राज्यपाल से मिला। प्रतिनिधिमंडल ने राज्यपाल को ज्ञापन सौंपकर मंत्री विजय शाह को बर्खास्त करने की मांग की। इसके बाद कांग्रेसी विधायक काले कपड़ों में राजभवन के बाहर धरने पर बैठ गए। बाद में उन्हें पुलिस ने जबरन उठाया और गिरफ्तार करके ले गई। हालांकि, थोड़ी देर बाद उन्हें रिहा कर दिया गया।

एस जयशंकर ने तालिबान सरकार को शुक्रिया कहा!

नई दिल्ली। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने गुरुवार रात अफगानिस्तान के कार्यवाहक विदेश मंत्री मावलवी आमिर खान मुत्ताकी से फोन पर बातचीत की। जयशंकर ने पहलगाम आतंकी हमले की निंदा करने के लिए मुत्ताकी को शुक्रिया कहा। अफगानिस्तान ने पाकिस्तान के उन आरोपों को खारिज कर दिया था, जिनमें कहा गया था कि भारतीय मिसाइलों ने अफगानिस्तान को टारगेट किया। जयशंकर ने इस बात के लिए भी अफगान सरकार का शुक्रिया किया। यह भारत और अफगानिस्तान की तालिबान सरकार के बीच मंत्री स्तर की पहली बातचीत थी। जयशंकर ने कहा कि भारत और अफगान लोगों के बीच जो पुराना दोस्ताना रिश्ता है, उसे दोहराया गया और भविष्य में इसे कैसे आगे बढ़ाया जाए, इस पर बातचीत हुई।

जीवन के व्यवहारिक पक्ष में अनुशासन का विशेष महत्व : स्वामी अवधेशानंद जी

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

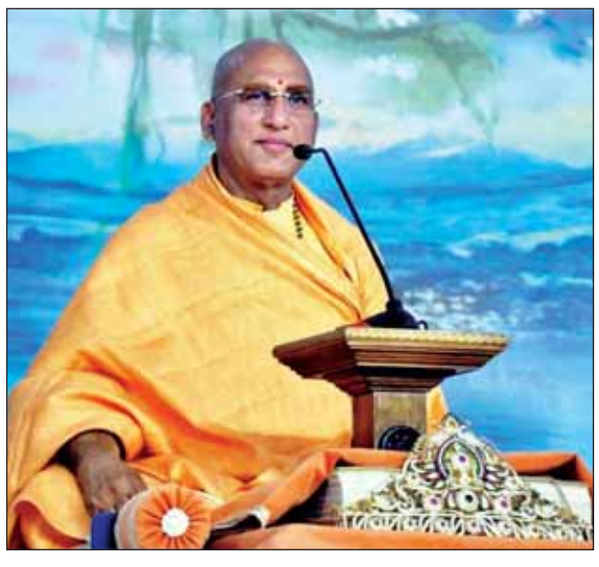

हरिद्वार। श्रीमत् परमहंस, परिव्राजकाचार्य, श्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ, जूनापीठाधीश्वर, आचार्य महामण्डलेश्वर, अनंत श्री विभूषित स्वामी अवधेशानंद गिरिजी महाराज ने कहा कि- मनुष्य जीवन की सफलता केवल उसकी प्रतिभा, बुद्धिमत्ता या बाह्य संसाधनों पर निर्भर नहीं करती, अपितु यह उस आंतरिक अनुशासन और संयम पर आधारित होती है, जो जीवन को दिशा और स्थिरता प्रदान करता है। अनुशासन वह मूलभूत तत्व है, जो व्यक्ति को उसकी क्षमताओं का पूर्ण उपयोग करने में सक्षम बनाता है। स्वामी जी ने कहा कि जिस व्यक्ति ने इन्द्रियों पर नियंत्रण, समय का आदर और आचरण की मर्यादा को आत्मसात् कर लिया, उसके लिए इस संसार में कुछ भी असम्भव नहीं है। इतिहास साक्षी है कि सत्य और अनुशासन के पथ पर चलने वालों ने ही महानता को प्राप्त किया है। स्वामी ने कहा कि- जब हम जीवन की मर्यादाओं और संयम का उल्लंघन करते हैं, तो हमारा नैतिक बल क्षीण हो जाता है। सफलता हमसे दूर होने लगती है, और हम अपने ही विकारों के बंदी बन जाते हैं। अतः यह आवश्यक है कि हम अपने भीतर एक ऐसा अनुशासन विकसित करें, जो बाह्य प्रेरणाओं से नहीं, बल्कि आत्मबोध और आचरण की शुद्धता से संचालित हो। स्वामी श्री अवधेशानंद जी ने कहा कि - प्राकृतिक जगत भी इस सत्य को प्रकट करता है। हर नदी की नियति समुद्र तक पहुँचना है, परन्तु वही नदियाँ अपने लक्ष्य तक पहुँचती हैं, जो तटबंधों का अनुशासन बनाए रखती हैं। जो नदी अपने किनारों को तोड़ देती है, वह मार्ग भटक जाती है और अपने लक्ष्य से विमुख हो जाती है। इसी प्रकार, मानव जीवन भी उसी समय सार्थक बनता है, जब वह सीमाओं में रहकर अपने कर्तव्यों का पालन करता है।

भगवान विष्णु के सहस्त्रनामों में एक नाम है – 'नियमो यमः ..'। इसका अर्थ है कि परमात्मा, जो सर्वशक्तिमान हैं, वे भी नियमों और अनुशासन में बँधे हुए हैं। जब ईश्वर स्वयं भी नियमों का पालन करते हैं, तो हमें यह विचार करना चाहिए कि मनुष्य के लिए अनुशासन कितना आवश्यक है। स्वामी जी ने कहा कि - जीवन के व्यवहारिक पक्ष में भी अनुशासन का विशेष महत्व है। समय पर नींद लेना, संतुलित आहार और नियमित दिनचर्या न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखते हैं, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक स्थिरता भी प्रदान करते हैं। गहरी और सम्यक निद्रा से शरीर में नवचेतना उत्पन्न होती है, पाचन शक्ति संतुलित रहती है, और हमारी ऊर्जा पुनः जाग्रत होती है। स्वामी श्री अवधेशानंद जी ने कहा कि - अतः यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आत्म-अनुशासन ही मनुष्य की सफलता का मूलमंत्र है। संयम, मर्यादा और नियमों का पालन कर ही हम उस ऊँचाई तक पहुँच सकते हैं, जहाँ जीवन सार्थक, शान्तिपूर्ण और प्रेरणादायी बनता है। स्वामी जी ने कहा कि - हमारी यह सदिच्छा होनी चाहिए कि हम जीवन के प्रत्येक क्षण में अनुशासन, संयम और मर्यादा को न केवल अपनाएं, बल्कि उन्हें अपने चरित्र का स्थायी अंग बना लें। यही पथ हमें व्यक्तिगत उन्नति और सामाजिक समरसता की ओर ले जायेगा।

कश्मीर : दो अभियानों में छः आतंकवादी ढ़ेर

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर में पिछले तीन दिनों में हुए दो एनकाउंटर में छह आतंकवादी ढेर कर दिए गए हैं। सेना-पुलिस ने शुक्रवार को जॉइंट प्रेस कांफ्रेंस में बताया कि, कश्मीर में आतंकवाद के खिलाफ ऑपरेशन जारी है।त्राल और शोपियां में 2 एनकाउंटर में आतंकी मारे गए। एक ऑपरेशन ऊंचे पहाड़ी इलाकों में हुआ, एक ऑपरेशन गांव में हुआ। सुरक्षाबलों ने सावधानी से दोनों जगह टेररिस्ट को मारा। सेना ने कहा- सभी सिक्योरिटी फोर्सेस के बीच का कॉर्डिनेशन अच्छा था और ये ऑपरेशन उसका प्रमाण हैं। आने वाले समय में भी ये कॉर्डिनेशन बना रहेगा। जम्मू और कश्मीर से आतंकवाद का सफाया कर देंगे। लोगों का भी धन्यवाद करेंगे कि उनके सहयोग के बिना इस तरह की सफलता मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन थी। एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए मेजर जनरल धनंजय जोशी (जीओसी विक्टर फोर्स) ने कहा कि दक्षिण कश्मीर में दो बड़े आतंकवाद विरोधी अभियान चलाए गए। मेजर जनरल जोशी ने संवाददाताओं को बताया, 'सीआरपीएफ, सेना और जम्मू कश्मीर पुलिस ने मिलकर केल्लर (शोपियां) और त्राल (पुलवामा) में इन अभियानों को अंजाम दिया और छह आतंकवादियों को मार गिराया गया। यह केवल सुरक्षा बलों के आपसी समन्वय से ही संभव हो सका।'

हॉन्गकॉन्ग में कोरोना के 31 मामले सामने आए

सिंगापुर अलर्ट पर, चीन-थाईलैंड में भी बढ़ सकते है मामले

हॉन्गकॉन्ग। हॉन्गकॉन्ग और सिंगापुर में फिर से कोरोना वायरस के मामले बढ़ने लगे हैं। हॉन्गकॉन्ग में 3 मई तक कोरोना संक्रमण के 31 मामले सामने आ चुके हैं। इनमें कई मौतें भी शामिल हैं। सिंगापुर ने भी कोविड अलर्ट जारी करते हुए इस साल कोरोना के मामलों पर अपना पहला अपडेट जारी किया है। सिंगापुर में अप्रैल के आखिरी हफ्ते कोरोना के केसों की संख्या 11,110 थी, जो मई के पहले हफ्ते बढ़कर 14,200 हो गई है। इसमें 28त्न का इजाफा हुआ है। यहां मामलों में 28त्न का इजाफा हुआ है। इस साल अब तक कोरोना के 14200 मामले सामने आ चुके हैं। वहीं, रोजाना आधार पर अस्पतालों में भर्ती होने वाले मरीजों की संख्या 30त्न तक बढ़ गई है। स्वास्थ अधिकारियों ने चेतावनी दी है कि महामारी एक बार फिर से विकराल रूप ले सकती है और इसका असर एशिया के बाकी हिस्सों में भी देखने को मिल सकता है। हॉन्गकॉन्ग में संक्रामक बीमारियों के स्वास्थ्य अधिकारी अल्बर्ट अउ के मुताबिक कोरोना वायरस के मामले बहुत तेजी से बढ़ रहे हैं। उन्होंने बताया कि सांस लेने की तकलीफ वाले मरीजों के कोविड पॉजिटिव पाए जाने का चांस इस साल के हाई पर पहुंच गया है।

भारतीय राजनीति की 'मिसाल जोड़िया'

अतुल मलिकराम
(राजनीतिक रणनीतिकार)

एक कहावत है कि जोड़ियां आसमान से बन कर आती हैं, लेकिन यह कहावत केवल शादी-विवाह तक ही सीमित है क्योंकि बात जब राजनीति की हो तो दो लोगों के बीच में साझा रणनीति और सूझबूझ अहम हो जाती है। भारतीय राजनीति का इतिहास उन जोड़ियों से भरा पड़ा है, जिन्होंने अपने साझा विजन, नेतृत्व और रणनीतिक कौशल से देश की दिशा और दशा को आकार दिया। ये जोड़ियां न केवल अपनी पार्टी के लिए बल्कि पूरे राष्ट्र के लिए प्रेरणा का स्रोत बनीं। पंडित नेहरू-महात्मा गांधी की वैचारिक साझेदारी से लेकर नरेंद्र मोदी-अमित शाह की आधुनिक रणनीति तक, इन जोड़ियों ने भारतीय राजनीति को एक स्वर्णिम राह पर आगे बढ़ाया।

सर्व ज्ञात है कि स्वतंत्रता संग्राम में गांधी-नेहरू की जोड़ी ने भारत को एकजुट करने में अभूतपूर्व भूमिका निभाई। गांधीजी का अहिंसा और सत्याग्रह का दर्शन जन-जन तक पहुंचा, तो नेहरू ने अपने आधुनिक और समाजवादी दृष्टिकोण से कांग्रेस को संगठित किया। गांधी की नैतिक शक्ति और नेहरू की वैश्विक सोच ने भारत को आजादी की राह पर अग्रसर किया। यह जोड़ी विचारधारा और कार्यान्वयन के तालमेल का प्रतीक बन गई।

इसी क्रम में अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी की राजनीतिक जोड़ी भी आती है, जिन्हे भारतीय राजनीति में एक ऐतिहासिक और प्रभावशाली साझेदारी के रूप में जाना जाता है। दोनों भारतीय जनता पार्टी के संस्थापक नेताओं में से थे और उन्होंने पार्टी को राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वाजपेयी और आडवाणी की जोड़ी की सफलता का आधार उनकी अलग-अलग लेकिन पूरक नेतृत्व शैली थी, जैसे वाजपेयी हिंदुत्व के विचारों को समर्थन देते थे, लेकिन उनकी छवि ऐसी थी कि गैर-भाजपा दल और अल्पसंख्यक समुदाय भी उन पर भरोसा करते थे। उनकी कविताएं और वक्तृत्व कला ने उन्हें जनता का प्रिय नेता बना दिया था, जो आज भी कायम है। दूसरी ओर आडवाणी एक अनुशासित और रणनीतिक नेता थे। उन्होंने भाजपा को संगठनात्मक रूप से मजबूत किया और हिंदुत्व को केंद्र में रखकर पार्टी की विचारधारा को प्रचारित किया। 1998 में वाजपेयी के नेतृत्व में भारत ने पोखरण में परमाणु परीक्षण किया, जिसमें आडवाणी का समर्थन महत्वपूर्ण था। वहीं 1999 कारगिल युद्ध के दौरान वाजपेयी की कूटनीति और आडवाणी की आंतरिक सुरक्षा नीतियों ने भारत को मजबूत स्थिति में रखा।

ऐसी ही एक जोड़ी साउथ में भी उभरी। जयललिता और एम. जी. रामचंद्रन (एमजीआर) की जोड़ी। जो तमिल सिनेमा और राजनीति, दोनों में एक ऐतिहासिक और चर्चित जोड़ी बनकर उभरी। दोनों का रिश्ता न केवल पेशेवर था, बल्कि व्यक्तिगत और राजनीतिक स्तर पर भी गहरा प्रभाव डालने वाला था। एमजीआर ने 1972 में फिल्मों को अलविदा कहकर राजनीति में कदम रखा और अखिल भारतीय अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (एआईएडीएमके) की स्थापना की। 1982 में उन्होंने जयललिता को अपनी पार्टी में शामिल किया। एक वाकया बेहद प्रचलित है कि 1987 में एमजीआर की मृत्यु के बाद, जयललिता को उनके अंतिम दर्शन तक करने से रोकने की कोशिश की गई। इसके बावजूद, जयललिता 21 घंटे तक उनके शव के पास खड़ी रहीं। यह घटना राजनीति में गुरु-शिष्य के रिश्ते की एक मिसाल बनी। एमजीआर ने मिड-डे मील योजना को फिर से शुरू किया था। जयललिता ने भी ऐसी जन-केंद्रित योजनाओं को बढ़ावा दिया। एमजीआर के दिखाए मार्ग का ही नतीजा था कि जयललिता ने अम्मा कैंटीन, अम्मा मिनरल वॉटर, और अन्य जनकल्याणकारी योजनाओं के जरिए जनता के बीच 'अम्मा' के रूप में अपनी पहचान बनाई और तमिलनाडु की छह बार मुख्यमंत्री बनीं।

कांशीराम और मायावती के रूप में गुरु शिष्य की एक और जोड़ी है जिसे भारतीय राजनीति में दलित और वंचित वर्गों के उत्थान के लिए एक महत्वपूर्ण गठजोड़ की तरह देखा जाता है। कांशीराम की शिष्या, यानी मायावती 1977 में उनसे जुड़ीं थी। कांशीराम ने 1984 में बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की स्थापना की, जिसका उद्देश्य दलित, आदिवासी, ओबीसी और अल्पसंख्यकों को संगठित कर सत्ता में लाना था। कांशीराम और मायावती ने सामाजिक न्याय और दलित सशक्तिकरण पर जोर दिया। कांशीराम का नारा 'जाति तोड़ो, समाज जोड़ो' और 'वोट हमारा, राज तुम्हारा, नहीं चलेगा' ने वंचित वर्गों को जागृत करने में अहम भूमिका निभाई। पार्टी की कमान जब मायावती के हाथ आई तो उन्होंने इसे आगे बढ़ाते हुए गठबंधन और सामाजिक समीकरणों के जरिए शून्य से शिखर तक का सफर तय किया। गुरु कांशीराम के दिखाए मार्ग पर चलते हुए मायावती ने 1995, 1997, 2002 और 2007 में उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया। उनकी लोकप्रियता इस कदर बढ़ी कि 2007 में बसपा ने पूर्ण बहुमत हासिल किया, जो उनकी और कांशीराम की रणनीति की बड़ी जीत मानी जाती है।

वर्तमान में आधुनिक भारत के शिल्पी के रूप में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह की जोड़ी वैश्विक चर्चा का विषय है। इस जोड़ी ने भारतीय जनता पार्टी को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। मोदी का करिश्माई नेतृत्व, प्रभावी जनसंपर्क और विकास का विजन जहां जनता के बीच लोकप्रिय हुआ, वहीं अमित शाह की संगठनात्मक प्रतिभा और रणनीतिक दूरदर्शिता ने पार्टी को हर स्तर पर मजबूत किया। 2014 और 2019 के लोकसभा चुनावों में उनकी साझेदारी ने बीजेपी को प्रचंड बहुमत दिलाया और क्षेत्रीय स्तर पर भी पार्टी का विस्तार किया। बीजेपी के चाणक्य के नाम से मशहूर अमित शाह ने कई मौकों पर यह स्वीकारा है कि नरेंद्र मोदी के साथ उनका रिश्ता एक मजबूत, विश्वास-आधारित और लक्ष्य-उन्मुख साझेदारी के रूप में विकसित हुआ है। मोदी ने भी कई मौकों पर शाह की संगठनात्मक क्षमता, राजनीतिक कुशाग्रता और नीतिगत निर्णयों में योगदान की सराहना की है। उदाहरण के लिए, जब शाह ने गृह मंत्री के रूप में धारा 370 को हटाने जैसे कठिन फैसलों को लागू किया, तो मोदी ने इसे एक ऐतिहासिक कदम बताते हुए शाह की दृढ़ता और नेतृत्व की प्रशंसा की।

कुल मिलाकर देखें और कुछ अपवादों को छोड़ दें तो भारतीय राजनीति में जोड़ियां अक्सर कारगर ही साबित हुई हैं। चाहे वह गांधी-नेहरू का वैचारिक तालमेल हो या मोदी-शाह की रणनीतिक साझेदारी, इन जोड़ियों ने अपने समय की चुनौतियों को अवसर में बदला हैं। ये जोड़ियां हमें सिखाती हैं कि नेतृत्व, रणनीति और विश्वास का सही मेल किसी भी संगठन को नई ऊंचाइयों तक ले जा सकता है। इसमें कोई दो राय नहीं कि ये जोड़ियां भारत में भविष्य के नेताओं के लिए प्रेरणा बनी रहेगी।

अखिल भारतीय जायसवाल सर्ववर्गीय महासभा में राजनैतिक प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने राजाराम शिवहरे

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

भोपाल। हैहय क्षत्रिय कल्चुरी समाज में राष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय राजाराम शिवहरे को अखिल भारतीय जायसवाल सर्ववर्गीय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजकिशोर मोदी द्वारा राजनैतिक प्रकोष्ठ का राष्ट्रीय अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। राजाराम शिवहरे ने समाज सेवा कि शुरुआत टीटी नगर ईकाई भोपाल में महामंत्री के रूप में की इस के बाद उन्हें जिला सभा में सचिव, संभागीय महासभा का सचिव नियुक्त किया गया। इसके पश्चात युवा हैहय क्षत्रिय कल्चुरी कलार समाज का प्रदेश अध्यक्ष चुना गया। राष्ट्रीय महासभा में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष आदि आदि पदों पर मनोनयन किया गया। राजाराम शिवहरे ने सभी पदों पर पूरी ईमानदारी और निष्ठा से काम किया है। समाज सेवा और राजनीति के क्षेत्र में लंबे समय से कार्यरत रहे हैं। उनके कार्यों और मेहनत को देखते हुए अखिल भारतीय जायसवाल सर्ववर्गीय महासभा के राष्ट्रीय संरक्षक प्रकाश चौधरी, अशोक जायसवाल, प्रदीप जायसवाल, अजय जायसवाल की सहमति से राष्ट्रीय अध्यक्ष राजकिशोर पापा मोदी ने

सम्पूर्ण भारत में फैले कल्चुरी राजवंश के विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के सांसद, विधायक, महापौर, नगर पालिका, नगर परिषद, नगर पंचायत, जिला पंचायत, जनपद पंचायत के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, पार्षद, सरपंच एवं पंच आदि राजनैतिक लोगों को एक मंच पर लाने का चुनोति पूर्ण दायित्व सौंपा है। इस चुनोति पूर्ण कार्य को राजाराम शिवहरे पूरी सक्षमता के साथ पूरा करने में सफल रहेंगे ऐसा सभी पदाधिकारियों ने विश्वास भी जताया है। समाज के साथ साथ भारतीय जनता पार्टी मध्यप्रदेश ने भी उन्हें पिछड़ा वर्ग मोर्चा में प्रदेश मंत्री की जिम्मेदारी दी है। इसके अलावा पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के विधानसभा क्षेत्र बुधनी और लोकसभा क्षेत्र विदिशा में भी चुनाव के दौरान वे सक्रिय रहे हैं। लोकसभा चुनाव में तो उन्हें शिवराज सिंह चौहान के संसदीय क्षेत्र का प्रभारी भी भारतीय जनता पार्टी पिछड़ा वर्ग मोर्चा द्वारा बनाया गया था। इसी तरह भोपाल संसदीय क्षेत्र के प्रत्याशी आलोक शर्मा एवं नर्मदापुरम संसदीय क्षेत्र के प्रत्याशी दर्शन सिंह चौधरी के लिए भी घर-घर जाकर सघन संपर्क कर मतदाताओं से समर्थन मांगा और उनकी जीत सुनिश्चित कराई। इसी तरह भोपाल में महापौर चुनाव के समय राजाराम शिवहरे को मंत्री विश्वास सारंग ने मध्य विधानसभा चुनाव प्रचार अभियान की कमान सौंपी थी, जिसको उन्होंने पूरी निष्ठा के साथ पूरा किया और भोपाल महापौर श्रीमती मालती राय की जीत सुनिश्चित कराई। भाजपा संगठन द्वारा जब भी राजाराम शिवहरे को जो जिम्मेदारी सौंपी गई, उसका निर्वाह उन्होंने पूरी मेहनत और ईमानदारी और निष्ठा के साथ किया है। उक्त जानकारी सुधाकर राऊत कलार समाज भोपाल ने दी।

कल भोपाल में चिंतन बैठक में शामिल होंगे डॉ. अखिलेश पटेल

मध्य प्रदेश में अपना दल (एस) को मजबूत करने की रणनीति पर जोर

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

भोपाल। अपना दल (एस) के राष्ट्रीय महासचिव 'युवा मंच' डॉ. अखिलेश पटेल 18 मई को भोपाल में आयोजित चिंतन बैठक में हिस्सा लेंगे। इस महत्वपूर्ण बैठक की अध्यक्षता राजनीतिक रणनीतिकार डॉ. अतुल मलिकराम करेंगे, जिसमें मध्य प्रदेश प्रभारी आर.बी. सिंह पटेल सहित पार्टी के प्रमुख नेता शामिल होंगे। बैठक का मुख्य उद्देश्य मध्य प्रदेश में पार्टी की संगठनात्मक ताकत को बढ़ाना और आगामी रणनीतियों को मूर्त रूप देना है। डॉ. अखिलेश पटेल ने बैठक के तीन प्रमुख एजेंडों पर प्रकाश डालते हुए कहा, 'हमारा पहला लक्ष्य मध्य प्रदेश की टीम को अधिक प्रभावी और ताकतवर बनाना है। इसके साथ ही, हमें सदस्यता अभियान को तेजी से आगे बढ़ाना है तथा पार्टी के मुद्दों

को प्राथमिकता से जन-जन तक पहुंचाने के लिए ठोस कदम उठाने हैं। इस बैठक में इन बिंदुओं पर विस्तृत रणनीति तैयार की जाएगी।'

गौरतलब है कि राजधानी भोपाल में लगातार दूसरे महीने पार्टी की बैठक, मध्य प्रदेश में पार्टी के एक नए दौर की शुरुआत का संकेत दे रही है, जिसमें संगठन विस्तार और जनता के बीच पार्टी की पैठ बढ़ाने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। वहीं डॉ. अखिलेश पटेल के नेतृत्व में युवा मंच की सक्रियता से पार्टी को नई ऊर्जा मिलने की उम्मीद भी की जा रही है।

पोर्टल अपडेट नहीं होने से सरप्लस सूची में अनेक विसंगतियां, अतिशेष प्रक्रिया निरस्त की जाए

मप्र शिक्षक संघ की बैठक में दोषपूर्ण अतिशेष प्रक्रिया का विरोध, चतुर्थ समयमान, संभागीय निर्वाचन एवं प्रांतीय अभ्यास वर्ग की जानकारी दी

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता स्थापित की जा सके इसके लिए सरप्लस शिक्षकों को कमी वाले स्कूलों में पदस्थ करने अतिशेष प्रक्रिया शुरू की गई। लेकिन आला अधिकारियों की मनमानी से हर बार सूची में विसंगतियां छोड़ दी जाती है। इस बार भी एजुकेशन पोर्टल 3.0 पर जानकारी अपडेट किए बिना हजारों शिक्षकों को नियम विरुद्ध सरप्लस बताकर मनमानी की जा रही है। जिससे चंबल अंचल के मुरैना भिंड व श्योपुर जिले की सूची में शामिल 70 प्रतिशत शिक्षक प्रताड़ित हैं। कई शिक्षकों ने इसमें धांधली की आशंका जताई हैं। इस पूरी प्रक्रिया को तुरंत निरस्त किया जाए। यह बात मप्र शिक्षक संघ के संभागीय अध्यक्ष डॉ नरेश सिंह सिकरवार ने कही। वे संभागीय कार्यालय पर संगठन की बैठक में शामिल शिक्षकों की समस्याओं को संबोधित कर रहे थे। बैठक में शिक्षक समस्याओं जैसे विसंगतिपूर्ण अतिशेष सूची को रद्द करने, चतुर्थ समयमान, नियुक्ति दिनांक से वरिष्ठता देने की मांग के मुद्दे जोर शोर से उठाए गए। डॉ. सिकरवार ने कहा कि शिक्षक समाज

को दिशा देने वाला स्तंभ होता है। उनके साथ ऐसी मनमानी पूर्ण प्रक्रिया को अपनाना न केवल शिक्षकों के अधिकारों का हनन है, बल्कि शिक्षा व्यवस्था को भी नुकसान पहुंचाने वाला कदम है। अतिशेष प्रक्रिया की समीक्षा आवश्यक है। जब तक सभी आंकड़े अद्यतन और प्रमाणित न हो जाएं, तब तक कोई सूची जारी करना तर्कसंगत नहीं है। जो शिक्षक रिटायर हो चुके हैं वे भी स्कूलों में पदस्थ बताए गए हैं। शिक्षकों की नियुक्ति दिनांक से लेकर उनके विषय तक में गड़बड़ी समाने आ रही है। पूरी प्रक्रिया पर अनिमियता का आरोप लगाते हुए मप्र शिक्षक संघ ने असंतोष व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि मप्र शिक्षक संघ शिक्षा, छात्र , शिक्षक हित में नीतिगत युक्तियुक्तकरण का समर्थक हैं। लेकिन इसके नाम पर शिक्षकों के साथ अन्याय नहीं किया जाना चाहिए। इस पूरी प्रक्रिया को रद्द किया जाए। और पोर्टल अपडेट कर अद्यतन जानकारी के आधार पर सूची तैयार की जाए।

बैठक में मुख्य रूप से रामबरन सिंह पायथा, विमलेश कुमार यादव, रघुराज परमार, डॉ. हरेंद्र सिंह तोमर, रामावतार सिंह चंबल, सतंजय मिश्रा, जगदीश शर्मा, कमलेश शर्मा, तिलक सिंह, नरेंद्र सिकरवार, रूप सिंह, भुवनेश्वर यादव, कुलदीप कुलश्रेष्ठ, राजेंद्र शर्मा, भुवनेश्वर यादव, रामसेवक शर्मा, मंगल मौर्य, जगमोहन सेमिल सहित अनेक पदाधिकारी शामिल रहे।

हाईस्कूल में अनुष्का जिला टॉपरों में, दिव्या 12वीं में अव्वल

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/अम्बाह। जीनियस पब्लिक स्कूल, अंबाह ने सीबीएसई परीक्षा 2024-25 में एक बार फिर शानदार प्रदर्शन किया है हाईस्कूल और हायर सेकेंडरी दोनों वर्गों में विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट अंक हासिल किए है। कक्षा 10वीं में अनुष्का तोमर ने 95.6 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय में प्रथम स्थान पाया। वह मुरैना जिले में तीसरे और अम्बाह शहर में पहले स्थान पर रहीं। अनुष्का रविन्द्र सिंह तोमर की पुत्री हैं। अन्य विद्यार्थियों में तनिष्का अग्रवाल ने 94.8 प्रतिशत, सिया गुप्ता ने 94.6 प्रतिशत, संस्कृति वर्मा ने 94.4 प्रतिशत, अर्जुन वर्मा ने 92.6 प्रतिशत, अमन राठौर ने 91.6 प्रतिशत, मांशी अग्रवाल ने 91.2 प्रतिशत, तेजस्वी दीक्षित ने 89 प्रतिशत, योगेश उपाध्याय ने 87 प्रतिशत और अन्वेषा सिंह ने 86.8 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। कक्षा 12वीं में दिव्या राठौड़ ने 89.4 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय में टॉप किया। वह भागीरथ राठौर की पुत्री हैं। मंशु गोले ने 86.8 प्रतिशत, पिंकी तोमर ने 83.2 प्रतिशत, देवेश ऋषिकेश राठौड़ ने 81.4 प्रतिशत और अमित सिंह ने 80 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। विद्यालय प्रबंधन ने सभी विद्यार्थियों को बधाई दी। कहा कि यह सफलता शिक्षकों की मेहनत, नियमित अभ्यास और विद्यार्थियों की लगन का परिणाम है। विद्यालय ने फिर साबित किया कि जीनियस केवल नाम नहीं, बल्कि एक परंपरा है।

कैट ने तुर्की, अजरबैजान देशों से आयात निर्यात का किया विरोध

ग्वालियर में स्वदेशी जागरण मंच के साथ मिलकर कैट करेगा ऑन लाइन व्यापार का विरोध

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

ग्वालियर। कॉन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के राष्ट्रीय संगठन मंत्री भूपेन्द्र जैन ने आज नई दिल्ली में कैट की राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक में भाग लिया और बताया कि कैट ने राष्ट्रीय स्तर पर पाकिस्तान का सहयोग करने वाले तुर्की एवं अजरबैजान देशों से आयात निर्यात का घोर विरोध किया है और ये किसी प्रकार का व्यापार नहीं किया जायेगा। भूपेन्द्र जैन के साथ प्रदेश उपाध्यक्ष राजकुमार गुप्ता, महामंत्री विवेक जैन, डॉ.सौरभ खण्डेलवाल, कविता जैन, रीनागांधी ने भी बैठक में भाग लिया।

इस अवसर पर पूर्व केन्द्रीय मंत्री स्मृति ईरानी, स्वदेशी जागरण मंच के राष्ट्रीय संयोजक सतीश कुमार, कैट के राष्ट्रीय अध्यक्ष बी.सी. भरतिया, राष्ट्रीय महामंत्री एवं सांसद प्रवीन खण्डेलवाल सहित देश भर के सेकडों व्यापारी उपस्थित थे।

दिल्ली के होटल ललित में आयोजित इस राष्ट्रीय व्यापारिक सम्मेलन में निर्णय हुआ है कि हम इन दोनों देशों से तीन प्रकार का व्यापार बंद करेंगे। पहला आयात निर्यात, दूसरा किसी भी फिल्म की सूटिंग इन देशों में नहीं होगी, तीसरा कोई भी पर्यटन के क्षेत्र में इन देशों से संपर्क नहीं रखे जायेगे। शीघ्र ही स्वदेशी जागरण मंच और कैट मिलकर अमेजन फिलप कार्ड एवं अन्य ऑन लाइन कंपनियों का विरोध करेंगे एवं छोटे कारोबारियों के व्यापार कों बचाने के लिये राष्ट्रीय स्तर पर आन्दोलन होगा।

अज्ञात बदमाश ने की हवाई फायरिंग, शटर पर मिले गोली के निशान

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/अम्बाह। बीती रात अम्बाह के लेन रोड क्षेत्र में उस समय हड़कंप मच गया जब एक अज्ञात व्यक्ति ने एक मकान के पास हवाई फायरिंग कर दी। घटना रात करीब 12:15 बजे की बताई जा रही है। फायरिंग की आवाज़ सुनकर घर के मालिक ओमवीर सिंह पुत्र रामवीर सिंह तोमर (उम्र 57 वर्ष) घबरा गए और तत्काल बाहर निकलकर स्थिति का जायजा लिया।

ओमवीर सिंह ने बताया कि वह घर के अंदर सो रहे थे, जबकि परिवार के अन्य सदस्य ऊपर की मंजिल पर थे। अचानक गोली चलने की आवाज़ सुनाई दी जिससे उनके प्राण संकट में पड़ गए। जब वह बाहर आए तो वहां कोई दिखाई नहीं दिया। सुबह होने पर उन्होंने घर के बाहर लगे शटर पर गोली लगने जैसे निशान देखे और सीसीटीव्ही फुटेज की भी जांच कराई। इस मामले की शिकायत फरियादी ने अंबाह थाने में दर्ज कराई है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच प्रारंभ कर दी है। घटना की गंभीरता को देखते हुए पुलिस आसपास के इलाके की छानबीन में जुट गई है।

थाना प्रभारी के निर्देश पर एफआईआर दर्ज कर जांच अधिकारी किसान सिंह (सहायक उप निरीक्षक) को मामले की जांच सौंपी गई है। एफआईआर दर्ज करने वाले प्रधान सिपाही माधो सिंह ने बताया कि प्रथम दृष्टया मामला हवाई फायरिंग का प्रतीत होता है और जल्द ही दोषी व्यक्ति की पहचान कर उसे पकड़ा जाएगा।

स्वास्थ्य, शिक्षा, संस्कार, सदाचार और समरसता सिखाते हैं संयुक्त परिवारः सुधीर आचार्य

संयुक्त परिवार दिवस पर हुई संगोष्ठी

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/अम्बाह। मध्य प्रदेश राज्य आनंद संस्थान की पहल पर आचार्य आनंद क्लब द्वारा संयुक्त परिवार दिवस के उपलक्ष में ब्राइट कैरियर अकादमी में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें संयुक्त परिवार की प्रासंगिकता विषय पर वक्ताओं ने अपने विचार रखें। संगोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. प्रगति शर्मा ने की। इस अवसर पर आचार्य आनंद क्लब के अध्यक्ष अरविंद मावई, जिला सम्पर्क समन्वयक बालकृष्ण शर्मा और विषय प्रवक्ता डॉ. सुधीर आचार्य मंचासीन थे। कार्यक्रम उपरांत संयुक्त परिवार का संचालन कर रही महिलाओं का सम्मान भी किया गया। इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए सुधीर आचार्य ने कहा कि वर्तमान पीढ़ी में आचरण सभ्यता और संस्कारों को लेकर जो समस्याएं खड़ी हुई हैं उन बहुत सी

समस्याओं के निदान और समाधान संयुक्त परिवार प्रणाली में हैं। संयुक्त परिवार में रहते हुए बच्चों को मोबाइल की लत से छुटकारा मिलता है क्योंकि संयुक्त परिवार में बच्चों की संख्या ठीक-ठाक होने से बच्चे आपस में घुल मिलकर खेलते हैं और इस तरह खेलने से वह शारीरिक और मानसिक रूप से भी स्वस्थ रहते हैं। बच्चों का चारित्रिक विकास होता है वह आपसी रिश्तों को सहजता से समझ पाते हैं और उनके प्रति दायित्व का भाव निर्मित होता है। संयुक्त परिवार के दादा-दादी, चाचा-चाची ,भैया-भाभी, साथ हिल मिलकर जीवन संघर्ष के अनेक पाठ,अनुभव बच्चों को बातों बातों में सुनते रहते हैं, जिसे बच्चे बहुत कुछ सीखते हैं। इसी प्रकार दादा-दादी और नाना-नानी की कहानियां उनके जीवन को दिशा देने का कार्य करती हैं। इसलिए स्वास्थ्य, शिक्षा, संस्कार, सदाचरण और समरसता बढ़ाने में संयुक्त परिवारों का योगदान रहता है। डॉ. प्रगति शर्मा ने वर्तमान में परिवारों का स्वरूप बदलते हुए कहा कि वर्तमान समय में हम एकाकी होते जा रहे हैं इस कारण अनेक समस्याएं बढ़ रही है और समाज विसंगतियों के भंवर में फंसते जा रहे हैं। संचालन राहुल गुप्ता ने और आभार रविश कांत कटारे ने किया।

जिला कांग्रेस कमेटी के नेतृत्व में जगदीश देवड़ा का पुतला जलाया

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के निर्देशानुसार जिला कांग्रेस कमेटी मुरैना के अध्यक्ष मधुराज तोमर एवं शहर अध्यक्ष दीपक शर्मा के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा के द्वारा भारतीय सेना को नतमस्तक करने पर विवादास्पद टिप्पणी देने यह बयान सेना में सेवारत सभी कर्मचारियों के लिए बड़ा अपमानजनक है एवं मान सम्मान के विपरीत है बयान से सभी देशवासियों में आक्रोश है। अशोभनीय टिप्पणी करने के विरोध में समूचे प्रदेश की तरह मुरैना जिला मुख्यालय पर पुरानी कलेक्ट्रेट के दरवाजे पर समूचे पुलिस बल को दरकिनार कर पुतला दहन किया गया। जिला कांग्रेस कमेटी ने एक स्वर में मांग की एक के बाद एक मंत्रियों के द्वारा गलत बयानबाज़ी की जा रही है, जिस पर पार्टी का कोई अंकुश नहीं है ऐसे मंत्रियों को तत्काल मंत्रिमंडल से बर्खास्त किया जाए और अक्षम्य अपराध टिप्पणी के लिए माफी मांगी जावे। यह सेना के साथ-साथ सभी देशवासियों का अपमान है यह अपमान बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। इस

अवसर पर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष मधुराज तोमर ने स्पष्ट रूप से मांग की के विजय शाह एवं जगदीश देवड़ा को मंत्रिमंडल से तत्काल बर्खास्त किया जाए और कठोर से कठोर अनुशासनात्मक कार्यवाही की जावे। साथ ही बर्खास्त कर मंत्री पद से हटाया जाए। भारतीय सेना आज तक के इतिहास में कभी किसी के सामने नतमस्तक नहीं हुई है ना कभी होगी ।शहर जिला अध्यक्ष दीपक शर्मा ने अपने वक्तव्य में कहा कि यह अशोभनीय टिप्पणी समूचे सेना का अपमान है भारतीय सेना का अपमान है सेना का मनोबल गिराने जैसी बात है यह बयान बिल्कुल बर्दाश्त नहीं किया जाएगा । मुरैना विधायक दिनेश गुर्जर ने कहा कि केंद्र सरकार के द्वारा अमरीका के दबाव में युद्ध विराम किया मोदी सरकार के निर्णय से देश में आक्रोश व्याप्त है उन्होंने आज जोड़कर कभी प्रदेशवासियों आह्वान किया कि ऐसी सरकार को जड़ से उखाड़ कर फेंक देना चाहिए। पुतला दहन में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मुरैना विधायक दिनेश गुर्जर के साथ नगर निगम में प्रतिपक्ष की नेता विनीत कंसाना, रामलखन डंडौतिया, राजेंद्र यादव, सतपाल कुशवाहा, हरीश पाठक, प्रवक्ता जितेंद्र डंगस, किसान कांग्रेस नेता, रईस खान, नरेश यादव, अब्दुल रहमान, धर्मेंद्र गुर्जर, गौरव चतुर्वेदी, गजेंद्र सिंधी, रामू टुंडेलकर, दीपक सोलंकी, राजेश राठोर, नरोत्तम माहौर, रामस्वरुप माहौर, दिलीप कंसाना, विनोद यादव, रामजीलाल माहौर, विनोद यादव, बंगाली जाटव, विपिन चौहान, सोनू जोनवार आदि मौजूद थे।

पुलिस की साइबर ठगी के मामले में प्रदेश की सबसे बड़ी सफलता

- ग्वालियर एसएसपी धर्मवीर सिंह के नेतृत्व में 10 आरोपी यूपी से पकड़े

ग्वालियर। रामकृष्ण मिशन आश्रम के सचिव के साथ 2.5 करोड़ रुपए की आनलाइन ठगी करने वाले 10 आरोपियों को स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम ने लखनऊ से पकड़ा है। इस मामले में 9 आरोपियों को पुलिस पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है। पुलिस ने 9 आरोपियों को उज्जैन, दिल्ली से गिरफ्तार करने के बाद अब 10 आरोपियों को यूपी के लखनऊ से पकड़ने में सफलता हासिल की है। पुलिस की गिरफ्त में आये आरोपीगण अपने नाम पर बैंक खाता खुलवाने वाले व्यक्तियों को सेविंग एकाउंट पर तीस हजार व करेंट एकाउंट पर एक लाख रूपये देते थे। पुलिस को जांच में पता चला है कि ठगी की राशि में से 30 लाख रुपए लखनऊ के इंडसइंड बैंक में ट्रांसफर हुए थे। इसकी पड़ताल करने पुलिस की एसआईटी लखनऊ पहुंची तो पुलिस को पता चला कि जिस अकाउंट में रुपए ट्रांसफर हुए हैं, उसके होल्डर ने अपना खाता कमीशन पर ठगों को दे रखा था। खाता खुलवाने से लेकर ठगी की रकम निकालने के रैकेट में शामिल 10 ठगों को एसआईटी की टीम ने घेराबंदी कर गिरफ्तार कर लिया है। शुक्रवार को सभी आरोपियों को लेकर पुलिस की टीम ग्वालियर आई और उनसे पूछताछ शुरू कर दी है।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक धर्मवीर सिंह ने बताया कि रामकृष्ण मिशन आश्रम के सचिव महाराज स्वामी स्वप्रदीप्तानंद के साथ डिजीटल एरेस्ट के नाम पर ढाई करोड़ की ठगी करने वाले 10 आरोपियों को स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम ने उत्तर प्रदेश के लखनऊ से पकड़ा है। इन ठगों के पकड़े जाने से पहले एसआईटी ने 9 आरोपियों को अलग अलग राज्यों से गिरफ्तार किया था। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री सिंह ने बताया कि शहर के सबसे बड़े डिजिटल अरेस्ट के मामले को उन्होंने गंभीरता से लिया और इस मामले की जांच के लिये एसआईटी गठित की। जांच पड़ताल के दौरान एसआईटी टीम को पता लगा कि रामकृष्ण मिशन आश्रम से ठगे गए रुपयों में से 30 लाख रुपए की बड़ी राशि उत्तर प्रदेश के लखनऊ स्थित इंडसइंड बैंक में ट्रांसफर हुए थे। पुलिस टीम ने जब अपनी जांच को आगे बढ़ाया तो पता लगा कि यह करंट अकाउंट है और रूद्र इंटरप्राइजेज के नाम से बनी फर्म के नाम पर है। इसके बाद एसआईटी की टीम लखनऊ पहुंची तो यहां पता चला कि अकाउंट होल्डर 20 साल का युवक था और उसका खाता खुलवाने वाले से लेकर कैश निकालने और अकाउंट कमीशन पर लेने सहित 10 लोगों के नाम सामने आए। जिसके बाद एसआईटी की टीम ने एक-एक आरोपी को चिह्नित कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया है। इस मामले में पुलिस अब तक 19 आरोपियों को गिरफ्तार कर चुकी है। इनमें 6 आरोपी उज्जैन के नागदा, 3 आरोपी दिल्ली-नोएडा और दस आरोपी लखनऊ यूपी से पकड़े गए हैं।

यह आरोपी पकड़े गये

शौर्य (21) पुत्र अश्विनी शुक्ला निवासी लालकुआं, अर्सलान (22) पुत्र इरफान अली निवासी लखीमपुर खीरी, सचित (29) पुत्र सत्यनारायण गुप्ता निवासी लखनऊ, सुल्तान मंसूर अली (22) निवासी सितापुर, शिवांश (21) पुत्र मुकेश सैनी निवासी लखीमपुर खीरी, रवि (22) पुत्र आनंद साहनी निवासी वलसाड गुजरात, मोहम्मद अकरम खान (21) निवासी लखीमपुर खीरी, शिवम सिंह (21) उर्फअनुज गोरखपुर, विनायक प्रताप सिंह (20) निवासी प्रतापगढ़ हनुमानगंज, हिरतेश (19) उर्फ ह्रदेश कुमार निवासी विकास नगर लखनऊ पकड़े गए हैं।

दिल्ली-नोएडा के दो बैंक खातों में पहुंची थी रकम

रामकृष्ण मिशन के सचिव के खाते से 2.5 लाख रुपए दिल्ली की बैंक ऑफ बड़ौदा ब्रांच में वरदान उर्फउज्जवल के खाते में ट्रांसफर हुए थे। यह वरदान बीबीए प्रथम वर्ष का छात्र है। पुलिस ने जब वरदान को हिरासत में लेकर पूछताछ की तो पुलिस को पता चला कि उसका यह खाता उसके मामा के लड़के दीपांशु मौर्य ने खुलवाया था। इसका पता चलते ही पुलिस ने उसे भी हिरासत में लिया है। इसके साथ ही एक अन्य आरोपी गुरजीत सिंह को भी पकड़ा था। उसके यश बैंक के खाते में 2.80 लाख रुपए आए थे। गुरजीत बीए सेकेंड ईयर का छात्र है। वह नौकरी के लिए किसी कंसल्टेंसी पर गया था। वहां नवीन नाम के युवक ने उसे नौकरी से पहले अकाउंट में कुछ ट्रांजेक्शन दिखाने के लिए बोला था। जिस पर उसने एक लाख 15 हजार रुपए डलवाए थे। जिसे छात्र ने ही निकालकर उसे दिए थे।

नागदा उज्जैन से पकड़े थे छह आरोपी

ग्वालियर पुलिस की एसआईटी ने नागदा, उज्जैन व रतलाम में दबिश देकर छह लोगों को पकड़ा था, जिनमें बंधक बैंक का असिस्टेंट मैनेजर व महिला कैशियर भी शामिल थीं। पुलिस द्वारा पकड़े गए आरोपियों में अकाउंट होल्डर सब्जी वाला राहुल कहार (22), तुषार गोमे (26), किशोर विनाज्ञा (19), शुभम सिंह राठौर (23), रतलाम का विश्वजीत बर्मन (46) जो बैंक में असिस्टेंट मैनेजर है और उज्जैन की बंधन बैंक की महिला कैशियर काजल जैसवाल (27) शामिल है।

प्रयागराज के इंडसइंड बैंक में पहुंच थी ठगी की रकम

ठगी के रुपयों में से सबसे बड़ी राशि 1.30 करोड़ रुपए उत्तर प्रदेश के प्रयागराज (इलाहाबाद) के इंडसइंड बैंक के खाते में पहुंची थी। ये रुपए तत्काल 20 अन्य बैंक अकाउंट में ट्रांसफर कर दिए गए थे। जिस अकाउंट में ठगी की रकम पहुंची थी, जब उसकी डिटेल निकाली तो पता लगा कि यह किसी बोगस फर्म के नाम पर संचालित हो रहा था।

ग्वालियर के जंगल की खैर लकड़ी माफिया ले जा रहे थे राजस्थान

- वन विभाग ने जब्त किए लकडी से भरे दो ट्रक

- तीन आरोपी गिरफ्तार कर भेजे जेल

ग्वालियर। सोन चिरैया अभ्यारण्य वन क्षेत्र के वन विभाग ने शुक्रवार तडके राजस्थान के पास से दो बडे ट्रक जब्त किए है। वहीं अवैध कटाई व तस्करी करने वाले मुख्य तीन अंतरराज्जीय आरोपी गिरफ्तार कर जेल भेजे गए है। ग्वालियर के जंगल का खैर काटकर ट्रकों के माध्यम से राजस्थान ले जा रहे थे। जिसकी भनक मुखबिर के माध्यम से वन विभाग को लगी। तो संयुक्त रूप से मैदानी वन अमले की टीम ने कार्रवाही कर मौके से दो अलग अलग बीटों में खैर की लकडी से भरे दो ट्रक जब्त किए है। ट्रक में लगभग 8 घन मीटर लकडी भरी हुई थी। जबकि कुछ लकडी मौके पर भी रखी मिली है। उक्त दोनों वाहन व लकडी की कीमत वन विभाग ने करीब एक करोड रूपये आंकी है।

वन विभाग से मिली जानकारी के अनुसार दो तीन दिन पहले मुखबिर से मिली सूचना के आधार पर खैर की लकडी की अवैध कटाई और तस्करी के खिलाफ टीम को लगाया गया था। गुरूवार की रात को अभ्यारण्य का समस्त स्टाफऔर घाटीगांव मोहना तथा ग्वालियर रेंज के संयुक्त स्टाफ ने घेराबंदी कर घाटीगांव गेम रेंज की बीट जखोदी व महुआखेडा से दो न्यू ट्रक मर्सडीज कंपनी के जब्त किए गए । जबकि दूसरे ट्रक के आरोपी ताला डालकर गायब हो गए थे। बाद में बमुश्किल ताला खुलवाकर उक्त ट्रक को भी जब्त किया गया। दोनों ट्रक में लगभग 8 घनमीटर खैर की लकडी वह भी छिली हुई जब्त हुई है। साथ ही मौके से तीन आरोपी बिरफ्तार किए गए है। जिन्हें कोर्ट के माध्यम से जेल भेज दिया गया है। पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि इससे पहले शिवपुरी अशोकनगर आदि जिले के जंगल से खैर की तस्करी कर चुके है। यह खैर कत्था के लिए दिल्ली व राजस्थान ले जाते है। यहां प्राइवेट डिपो पर बेची जाती है। जिसमें स्थानीय लोगों के नाम भी बताए है। वन अधिकारियों ने बताया कि आरोपियों में हामिद पुत्र इसराइल निवासी अलवर राजस्थान जबकि शाउन खान पुत्र जुम्मा खान और अजरूददीन सभी निवासी अलवर राजस्थान के है। जो वाहन क्रमांक आरजे 29 जीबी 3498 और आरजे 29 जीबी 3499 जब्त किए गए है। दोनों वाहन वर्या 2024 पास है। इसके साथ ही मुख्य आरोपियों ने ग्वालियर निवासी सतीश यादव और जखोदी निवासी रामनिवास गुर्जर तथा अरूण यादव का भी नाम बताया गया है। अब वन अधिकारी आरोपियों के कथन पर आगामी जांच पड़ताल कर रहे है।

आपने कहा

वन विभाग की पूरी टीम व उडनदस्ता ने संयुक्त रूप से सराहनीय कार्य कर अवैध कटाई व तस्करी के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है। आरोपियों को जेल भेजा है। जबकि जब्त दोनों ट्रक को ग्वालियर डिपो में रखा गया है।

अरविंद सिंह सेंगर, सीसीएफ ग्वालियर

युवती ने फांसी लगाकर दी जान

ग्वालियर। अज्ञात कारणों के चलते एक युवती ने फांसी लगाकर जान दे दी। घटना झांसी रोड थाना क्षेत्र के विजय नगर की है। घटना का पता चलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच के बाद मर्ग कायम कर लिया है। फिलहाल पता नहीं चला है कि उसने किन कारणों के चलते जान दी है। युवती यहां पर अकेली रहती थी और उसके परिजनों को सूचना दे दी है।

झांसी रोड थाना क्षेत्र के विजय नगर निवासी 19 वर्षीय रायमोनी सुंडी पुत्री चंद्रया सुंडी किराए का कमरा लेकर रहती है। वह झारखंड की रहने वाली है और प्राइवेट जॉब करती है। बीते रोज वह जॉब से आई और अपने कमरे में चली गई। कुछ देर बाद मकान मालिक जब ऊपरी मंजिल पर किसी काम से आए तो पता चला कि उसने फांसी लगाकर जान दे दी है। मामले की सूचना पुलिस को दी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच के बाद मर्ग कायम कर लिया है। फिलहाल पता नहीं चला है कि उसने किन कारणों के चलते फांसी लगाकर जान दी है। पुलिस ने मृतका के परिजनों को घटना की जानकारी दी है। घटना का पता चलते ही परिजन ग्वालियर के लिए रवाना हो गए हैं और शाम तक उनके आने की संभावना है।

अधेड़ ने जहर खाकर दी जान

मुरार थाना क्षेत्र के काशीपुरा निवासी पचास वर्षीय राकेश जाटव पुत्र छविराम जाटव ने जहर खा लिया। घटना का पता उस समय चला जब उनकी तबियत बिगडने लगी तो परिजन उन्हें उपचार के लिए अस्पताल लेकर पहुंचे। जहां पर डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया है। मामले का पता चलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच के बाद मर्ग कायम कर लिया है। फिलहाल पता नहीं चला है कि किन कारणों के चलते उन्होंने जान दी है।

इलाज कराने गए युवक का शव मिला

ग्वालियर थाना क्षेत्र के किलागेट स्थित टेम्पो स्टैण्ड पर एक युवक का शव पड़ा मिला। मामले का पता चलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच की तो पता चला कि मृतक प्रसाद नगर का रहने वाला जितेन्द्र शर्मा उर्फ मटरू पुत्र दाताराम शर्मा है। इसका पता चलते ही उसके परिजन मौके पर पहुंचे और उसकी शिनाख्त की। परिजनों ने पुलिस को बताया कि बीते रोज वह दवा लेने के लिए निकला था और उसके बाद वापस नहीं आया। साथ ही बताया कि वह शराब पीने का आदी था। पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

गर्मी से बुजुर्ग की मौत

गर्मी से एक बुजुर्ग की मौत हो गई। घटना इंदरगंज थाना क्षेत्र के डीडी मॉल के सामने चिढिया घर की बाउण्ड्री के पास की है। घटना का पता चलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच के बाद मर्ग कायम कर लिया है। फिलहाल मृतक की पहचान नहीं हो सकी है। पुलिस ने मृतक का शव पीएम हाउस पहुंचा दिया है। इंदरगंज थाना पुलिस ने बताया कि गुरुवार की शाम सूचना मिली थी कि एक बुजुर्ग का शव डीडी मॉल के सामने पड़ा हुआ है। मामले का पता चलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच के बाद मर्ग कायम कर लिया। पुलिस ने बुजुर्ग की पहचान करने का प्रयास किया, लेकिन उनकी पहचान नहीं हुई है। अब पुलिस ने बुजुर्ग की शिनाख्ती के लिए शहर के साथ ही देहात में भी जानकारी दी है। जिससे मृतक की पहचान हो सकें।

सेना के सम्मान में ये तिरंगा यात्रा ग्वालियर के हर नागरिक की है: जयप्रकाश राजौरिया

ग्वालियर। ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बाद भारतीय सेना के सम्मान में गुरुवार को राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए नागरिक द्वारा तिरंगा यात्रा निकाली गई। यह तिरंगा यात्रा फ्लैग प्वाइंट कटोरातल से प्रारंभ होकर अचलेश्वर महादेव मंदिर, इंदरगंज, दालबाजार से होते हुए माधव डिस्पेंसरी के सामने से कटोरातल होकर वापस फ्लैग प्वाइंट पर समाप्त हुई। इस दौरान यात्रा में शामिल लोगों ने जोश के साथ भारत माता की जय और पाकिस्तान मुदार्बाद के नारे लगाए। लोग हाथों में तिरंगा लेकर चल रहे थे और देशभक्ति के गीत बजाए जा रहे थे।

इस अवसर पर सांसद भारत सिंह कुशवाह ने कहा कि जिस प्रकार भारतीय सेना ने अपना शौर्य और पराक्रम दिखाया हैं हमें उस पर गर्व है, भारतीय सेना ने पाकिस्तान के आतंकवादियों को मुंहतोड़ जवाब दिया है। इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष जयप्रकाश राजौरिया ने कहा कि ये यात्रा किसी राजनीतिक दल की नहीं है, ये भारतीय सेना के सम्मान में ग्वालियर के हर नागरिक की है। उन्होंने कहा कि पहलगाम के बाद देशवासियों के मन में जो ज्वार था, उसे हमारे सैनिकों ने पाकिस्तान में बने आतंकी अड्डों को नेस्तनाबूत कर शांत कर दिया। उन्होंने कहा कि सेना ने हमारी बहनों का सिंदूर उजाड़ने वालों को मिट्टी में मिला दिया। इस अवसर पर पूर्व सांसद विवेक नारायण शेजवलकर, भाजपा के प्रदेश मीडिया प्रभारी आशीष उषा अग्रवाल, पूर्व जिलाध्यक्ष अभय चौधरी, सभापति मनोज तोमर, पूर्व विधायकघनश्याम पिरोनिया, पूर्व महापौर श्रीमती समीक्षा गुप्ता, देवेंद्र प्रताप सिंह तोमर, श्रीमती खुशबू गुप्ता, रामेश्वर भदौरिया, मीडिया प्रभारी नवीन चौधरी सहित शहर की संस्थाएं, सभी समाज के प्रबुद्धजन एवं गणमान्य नागरिक, स्कूली बच्चे उपस्थित थे।

युवक को कार में पटक कर किया अगवा, बेल्टों से पीटा

ग्वालियर। एक दिन पहले हुए विवाद का बदला लेने के लिए दो बदमाशों ने एक युवक को कार में अगवा कर बेल्टों से पीटा था। घटना माधौगंज थाना क्षेत्र के एसएएफपेट्रोल पंप के पास स्थित कलारी के सामने की है। बेरहमी से युवक की मारपीट कर अपहरण करने वाले उसे जान से मारने की धमकी देकर सड़क पर पटककर चले गए थे। वारदात का शिकार पीडित थाने पहुंचा और मामले की शिकायत पुलिस से की। पुलिस ने मामला दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू कर दी है।

माधौगंज थाना क्षेत्र के मोहिते साहब के बाड़े के सामने लक्कडखाना निवासी मोंटी उर्फ सचिन राठौर पुत्र रामजी राठौर का एक दिन पहले देवू शिवहरे निवासी हेमसिंह की परेड से विवाद हो गया था। बुधवार की दोपहर करीब सवा दो बजे वह अपने घर वापस आ रहा था और अभी एसएएफ पेट्रोल पंप के पास स्थित कलारी के पास पहुंचा ही था कि तभी उसका सामना शिवम शिवहरे व उसके दोस्त से हुआ। शिवम देवू का भतीजा है। उसे देखते ही शिवम व उसके दोस्त ने उसे जबरन कार में पटका और अगवा कर ले गए। इसके बाद रास्ते भर उसकी बेरहमी से बेल्टों से मारपीट कर चाचा देवू शिवहरे से उलझने पर उसे जान से मारने की धमकी दी। इसके बाद आरोपी उसे पटककर चले गए। घटना का शिकार पीडित थाने पहुंचा और मामले की शिकायत की। पुलिस ने उनकी शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया है।

12 वर्षीय छात्र लापता

गोला का मंदिर थाना क्षेत्र के नारायण विहार कॉलोनी निवासी 12 वर्षीय छात्र बुधवार की सुबह साढ़े नौ बजे घर से कोचिंग पढने की कहकर निकला था। इसके बाद वह वापस नहीं लौटा। छात्र के वापस नहीं आने पर परिजनों ने उसकी तलाश शुरू की। इसकी शिकायत पुलिस से की। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है।

तीन हजार रुपए का इनामी पकड़ा

ग्वालियर। टेरर टैक्स मांगने के मामले में छह साल से फरार चल रहे तीन हजार रुपए के इनामी आरोपी को क्राइम ब्रांच व इंदरगंज थाना पुलिस ने लक्ष्मणगढ़ पुल से गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपी को पुलिस ने हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है। डीएसपी क्राइम नागेन्द्र सिंह सिकरवार ने बताया कि सूचना मिली थी कि टेरर टैक्स मांगने के मामले में फरार आरोपी हरेन्द्र सिंह भदौरिया पुत्र जगदीश सिंह निवासी ग्राम सिलौली थाना गोरमी जिला भिंड लक्ष्मणगढ़ पुल के पास देखा गया है। सूचना पर क्राइम ब्रांच थाना प्रभारी अमित शर्मा और इंदरगंज थाना प्रभारी दीप्ति सिंह तोमर को आरोपी को पकडने के निर्देश दिए। जिस पर पुलिस ने आरोपी को दबोच लिया। पुलिस पकड़े गए आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ में जुट गई है।

ग्वालियर में गर्मी ने तोड़ा रिकार्ड

- इस साल पहली बार दिन का तापमान 45 पर
- बीते साल 18 मई को पहुंचा था इतना पारा

ग्वालियर। शुक्रवार को दिन के तापमान ने रिकार्ड तोड़ दिया है। इस साल पहली बार अधिकतम तापमान 45 डिग्री सेल्सियस आंका गया है। इससे पहले सर्वाधिक गर्म दिन 26 अप्रैल रहा था। तब दिन का तापमान 43.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ था। उसके बाद मौसम सामान्य हो गया था तथा दिन का तापमान घटकर 34 डिग्री पर भी पहुंचा था। लेकिन मई माह के तीसरे सप्ताह में गर्मी ने फिर से पांव पसारने शुरू कर दिये।

स्थानीय मौसम कार्यालय के अनुसार बीते दिन शुक्रवार को दिन का तापमान 43 डिग्री सेल्सियस आंका गया था। जबकि शुक्रवार को दो अंक बढ़कर 45 डिग्री सेल्सियस आंका गया है। वहीं बीते दिन गुरूवार को न्यूनतम तापमान 29.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ था। जबकि शुक्रवार को रात का पारा 27.7 डिग्री सेल्सियस आंका गया है।

शुक्रवार को सुबह की आर्दता 31 प्रतिशत तथा शाम की आर्दता 18 फीसदी आंकी गई। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार बीते वर्ष 16 मई को अधिकतम तापमान 43.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ था। जबकि बीते साल 18 मई को पारा 45 डिग्री सेल्सियस पर पहुंचा था। जो इस साल 16 मई को ही दर्ज हो चुका है। आगामी मौसम को लेकर अनुमान है कि अब फिर से बादलों की आमद रहेगी। 22 मई तक सिस्टम का असर रहेगा।

युवाओं को मानसिक दृढ़ता और अनुशासन सिखाता है शतरंज खेल: आशीष अग्रवाल

ग्वालियर। ऑल ग्वालियर चेस एसोसिएशन (ए.जी.सी.ए.) द्वारा गुरूवार को ब्रिलिएंट स्टार हायर सेकंडरी स्कूल में आयोजित प्रथम अंतर्राष्ट्रीय फिडे रेटेड क्लासिकल शतरंज टूर्नामेंट का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। पूर्व सांसद विवेक नारायण शेजवलकर ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि यह आयोजन न केवल शहर के खेल क्षेत्र में एक ऐतिहासिक कदम साबित हुआ, बल्कि इसमें भाग लेने वाले खिलाड़ियों ने अपनी मानसिक दक्षता, धैर्य और रणनीतिक कौशल से सभी को प्रभावित किया। खेलों को अपनाकर हम न केवल अपने शरीर को स्वस्थ रखते हैं, बल्कि जीवन जीने की सही कला भी सीखते हैं।

कार्यक्रम में भाजपा के प्रदेश मीडिया प्रभारी आशीष उषा अग्रवाल ने कहा कि शतरंज टूर्नामेंट केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि ग्वालियर के खेल इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय है। भाजपा के प्रदेश मीडिया प्रभारी आशीष उषा अग्रवाल ने कहा कि ऑल ग्वालियर चेस एसोसिएशन (ए.जी.सी.ए.) के अंतर्राष्ट्रीय फिडे रेटेड क्लासिकल शतरंज टूर्नामेंट के आयोजन ने शतरंज के क्षेत्र में एक अमिट छाप छोड़ी है।

देश-विदेश के शतरंज खिलाड़ियों, पदाधिकारियों और युवा प्रतिभाओं की उपस्थिति ने इसे और भी खास बना दिया। टूर्नामेंट में विभिन्न आयु वर्गों के खिलाडियों ने भाग लेकर अपनी रणनीति और कौशल का प्रदर्शन किया है। इस अवसर पर भाजयुमो नेता देवेन्द्र प्रताप सिंह तोमर, एलएनआईपीई के चीफ प्रॉक्टर डॉ. भारत वर्मा, आईटीएम यूनिवर्सिटी के कुलसचिव ओमवीर सिंह उपस्थित थे।

जवान की पत्नी के बैग से ढाई लाख के गहने ले उड़े चोर

ग्वालियर। बहन की शादी में शामिल होने के लिए आ रही सीआईएसएफजवान की पत्नी का टेम्पो में बैग काटकर चोर सोने व चांदी के गहनों सहित नकदी पार कर ले गए। घटना थाटीपुर थाना क्षेत्र की है।

प्रेम नगर डबरा निवासी सुनील कुमार पवैया सीआईएसएफ जवान है और 11 मई को वह तथा उनकी पत्नी मोहिनी पवैया शादी में शामिल होने के लिए ग्वालियर आए थे। शादी मोहिनी की बहन काजल की थी। सुनील को कुछ काम था तो वह रेलवे स्टेशन से मोहिनी और बेटे को विक्रम टेम्पो में बिठाकर चले गए थे। टेम्पो से उतरने के बाद मोहिनी वह घर पहुंची तो पता चला कि उसका बैग कटा हुआ था। इसका पता चलते ही उसने बैग चेक किया तो उसके होश उड़ गए, क्योंकि बैग में रखे दो तोला वजनी सोने, आधा किलो चांदी के साथ ही तीन सौ रुपए नकदी गायब थी। मामले का पता चलते ही पुलिस को सूचना दी। सूचना पर पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस चोरों का पता लगाने के लिए सीसीटीवी खंगाल रही है।

आम सूचना

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि, देवेन्द्र सिंह, नबाब सिंह, सुरेन्द्र सिंह पुत्रगण श्री देवी सिंह यादव ठाकुर, निवासीगण–ग्राम बरोठा, तहसील डबरा, जिलाा ग्वालियर (म.प्र.) के द्वारा ग्राम बरोठा, तहसील डबरा, जिला ग्वालियर में स्थित कृषि भूमि सर्वे क्रमांक 153, रकवा 1.13 हेक्टेयर, सर्वे नंबर 154 मिन रकवा 0.16 हेक्टेयर तथा सर्वे क्रमांक–705,706, 707 मिन रकवा 0.61हेक्टेयर तथा सर्वे नंबर–708 मिन रकवा 0.21हेक्टेयर कुल रकवा 2.11 हेक्टेयर है, में से तीनों का कुल रकवा 6.11 हेक्टेयर भूमि के शामलाती रकवे में से उनको रूपयों की आवश्यकत होने के कारण 0.730 हेक्टेयर भूमि जो लगभग 4 बीघा होती है को 45,00,000/–(पैतालीस लाख) रूपये प्रतिबीघा के हिसाब से विक्रय करने का अनुबंध मुझ कैलाश सिंह गुर्जर पुत्र स्व.श्री भूरा सिंह गुर्जर, निवासी–ग्राम ओहदपुर, जिला ग्वालियर के हक में संपादित कर बयाने पेटे कुल 19,00,000/–(उन्नीस लाख) रूपये नकद एवं चैक के माध्यम से तीनों भाईयों ने प्राप्त किये है तथा निकट भविष्य में वयनामा संपादित किया जान शेष है।

अतः उपरोक्त वर्णित सम्पत्ति कृषि भूमि के संबंध में कोई भी व्यक्ति संस्था, निकाय, बैंक, शासकीय अर्द्धशासकीय संस्था, प्रायवेट फायनेंसर अथवा अन्य उक्त विक्रेतागण देवेन्द्र सिंह, नबाब सिंह, सुरेन्द्र सिंह पुत्रगण श्री देवी सिंह यादव ठाकुर, निवासीगण–ग्राम बरोठा, तहसील डबरा, जिलाा ग्वालियर (म.प्र.) से किसी भी प्रकार का कोई संव्यवहार न करे, ना ही कोई दस्तावेज संपादित करावे, ना ही विकयपत्र संपादित करावे। अन्यथा की स्थिति ऐसे किये गये समस्त संव्यवहार मेरे हितों के मुकाबले शून्य होकर निष्प्रभावी होगें। अतः सूचित हो।

दिनांक : 16/05/2024

प्रेषक

कैलाश सिंह गुर्जर पुत्र स्व.श्री भूरा सिंह गुर्जर, निवासी–ग्राम ओहदपुर, जिला ग्वालियर, मोबा–9425113562

पौने तीन किलो गांजे के साथ तस्कर पकड़ा, चार लाख नकद बरामद

ग्वालियर। गांजा बेच रहे तस्कर को सिरोल थाना पुलिस ने सिरोल कॉलोनी से पकड़ा है। पकड़े गए तस्कर से पुलिस ने करीब पौने तीन किलो गांजे के साथ ही 4 लाख 19 हजार रुपए बरामद किए हैं। रुपए और गांजा बरामद होते ही पुलिस ने आरोपी को हिरासत में लेकर उसके खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस पूछताछ में पता चला है कि उसे गांजा बेचने के लिए कमीशन मिलता था, यह सारा कारोबार उसके मामा राजवीर जाटव का है। इसका पता चलते ही पुलिस अब उसके मामा की तलाश शुरू कर दी है।

सीएसपी विश्वविद्यालय हिना खान ने बताया कि उन्हें जरिये मुखबिर सूचना मिली थी कि सिरोल कॉलोनी में एक तस्कर गांजा बेच रहा है। सूचना मिलते ही सिरोल थाना प्रभारी गोविन्द बंगोली को सूचना की तस्दीक व कार्रवाई के लिए निर्देशित किया। पुलिस टीम जब मुखबिर के बताए स्थान पर पहुंची, उस समय एक युवक गांजे की पुडिया बेचते पुलिस को दिखा। पुलिस ने उसे दबोचा और उसकी तलाशी ली तो उसके पास से गांजे की पुडिया बरामद हुई। गांजा बरामद होते ही पुलिस ने उसके कमरे की तलाशी ली तो टेबल के नीचे करीब पौने तीन किलो वजनी गांजा बरामद हुआ। साथ ही कमरे में 4 लाख 19 हजार रुपए बरामद हुए हैं। पुलिस ने नकदी और गांजा बरामद कर तस्कर को हिरासत में ले लिया है। पुलिस पूछताछ में पकड़े गए तस्कर ने बताया कि यह सारा काम उसके मामा राजवीर का है और उसे तो गांजा बेचने के लिए कमीशन मिलता है। इसका पता चलते ही पुलिस ने पकड़े गए तस्कर भूपेन्द्र पुत्र नाथूराम जाटव के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है।

पुलिस ने पकड़े गए आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर पूछताछ करना शुरू कर दिया है, साथ ही उसके मामा राजवीर की तलाश में दबिश देना शुरू कर दिया है। बताया गया है कि उसका मामा थाने का हिस्ट्रीशीटर बदमाश है।

पांच हजार रूपये का इनामी लुटेरा पकड़ा

ग्वालियर। पांच हजार रूपये के इनामी एक शातिर लुटेरे को आंतरी थाना पुलिस ने दांगीबाबा मंदिर के पास से गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इनामी लुटेरे को गिरफ्तार कर उससे पूछताछ शुरू कर दी है।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक धर्मवीर सिंह ने बताया कि उन्हें जरिये मुखबिर सूचना मिली थी कि आंतरी थाना क्षेत्र से फरार एक पांच हजार रूपये का इनामी दांगीबाबा मंदिर के पास घूम रहा है। सूचना मिलते ही उन्होंने क्राइम ब्रांच और आंतरी थाना प्रभारी को आरोपी को पकड़ने के निर्देश दिये। जिसके बाद क्राइम ब्रांच की टीम और आंतरी थाना पुलिस की टीम ने मुखबिर के बताये स्थान पर घेराबंदी कर इनामी बदमाश को धर दबोचा। पकड़े गये बदमाश ने स्वयं को ग्राम जैतपुर थाना बामौर जिला मुरैना का रहने वाला बताया।

दो हजार रूपये का इनामी ठग पकड़ा

ग्वालियर। नौकरी लगवाने का झांसा देकर ठगी करने वाले एक दो हजार रूपये के इनामी ठग को क्राइम ब्रांच और पड़ाव थाना पुलिस ने संयुक्त कार्रवाई करते हुये नादरिया माता बीजासेन मौहल्ला के पास से पकड़ा है। पुलिस पकड़े गये इनामी बदमाश से पूछताछ कर रही है। थाना प्रभारी क्राइम ब्रांच अमित शर्मा एवं थाना प्रभारी पड़ाव आलोक परिहार ने बताया कि क्राइम ब्रांच और पड़ाव थाना पुलिस ने संयुक्त कार्रवाई करते हुये दो हजार रूपये के इनामी ठग को नादरिया माता बीजासेन मौहल्ला के पास से पकड़ा है। पुलिस की गिरफ्त में आये ठग ने एक युवक को नौकरी लगवाने का झांसा देकर चार लाख रूपये की ठगी की थी। पुलिस की गिरफ्त में आये ठग ने स्वयं को ग्राम विजकपुर थाना भितरवार हाल बीजासेन मौहल्ला नादरिया माता के पास गुडा जिला ग्वालियर का रहने वाला बताया।

संपादकीय

पाकिस्तान से तनाव के बीच बीएसएफ जवान की वापसी, भारत की कूटनीतिक प्रयास से मिली कामयाबी

भारत और पाकिस्तान के बीच किसी गलती से जवानों के सीमा पार कर जाने की कई घटनाएं सामने आ चुकी हैं। अगर युद्ध या तनाव की स्थिति न हो तो रिहाई में ज्यादा मुश्किल नहीं होती है। भारत के सीमा सुरक्षा बल यानी बीएसएफ के एक जवान को पाकिस्तान ने लौटा दिया है और स्वाभाविक ही इसे भारत की एक और कूटनीतिक कामयाबी माना जा रहा है। गौरतलब है कि भारत के बीएसएफ के जवान पूर्णम साव तेईस अप्रैल को गलती से पाकिस्तानी सीमा में दाखिल हो गए थे और वहां उन्हें पकड़ लिया गया था। सीमा पार किन्हीं हालात में अगर अन्य देश के जवान को पकड़ लिया जाता है तो उसके जीवन तक को लेकर आशंकाएं पैदा हो जाती हैं। यही वजह है कि पूर्णम साव की वापसी को लेकर उनके परिवार सहित देश के लोगों की चिंताएं गहरा रही थीं। इस बीच भारत और पाकिस्तान के बीच किस स्तर का टकराव हुआ, यह दुनिया ने देखा। लेकिन अब बुधवार को जब पूर्णम साव की पाकिस्तान से रिहाई की खबर आई, तो निश्चित तौर पर यह उनके परिवार वालों के साथ-साथ समूचे देश के लोगों के लिए राहत की बात थी। दोनों देशों के डीजीएमओ स्तर पर हुई बातचीत के नतीजे में बीस दिनों के बाद पूर्णम शा को छोड़ा गया। दरअसल, जिन परिस्थितियों में बीएसएफ के जवान गलती से पाकिस्तानी सीमा में दाखिल हो गए थे, वे इतनी ज्यादा संवेदनशील थीं कि उनके कारण दोनों देशों के बीच संघर्ष की नौबत आई। पहलगाम में आतंकी हमले में छब्बीस लोगों के मारे जाने के बाद भारत के पास एक तरह से जवाबी कार्रवाई करना अंतिम विकल्प था। इस टकराव की तीव्रता का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि इसे दोनों देशों के बीच पूर्ण संघर्ष के तौर पर भी देखा गया। ऐसे में अगर बीएसएफ जवान की सुरक्षा और जान को लेकर भारत में चिंता गहरा रही थी, तो यह लाजिमी था। यों भी पाकिस्तान के अतीत और उसकी प्रकृति अक्सर उसके विवेक आधारित फैसले नहीं लेने के ही सूचक रहे हैं। हालांकि इस बीच उम्मीद जरूर की जा रही थी कि तमाम विपरीत हालात के बावजूद भारत के लगातार कूटनीतिक प्रयासों से जवान की वापसी सुनिश्चित हो सकेगी। मगर जब दोनों देशों के बीच संघर्ष विराम की घोषणा हुई तब यह उम्मीद और मजबूत हुई कि अब शायद माहौल शांत होने के बाद इस मसले पर कूटनीतिक बातचीत आगे बढ़ेगी। भारत और पाकिस्तान के बीच किसी गलती से जवानों के सीमा पार कर जाने की कई घटनाएं सामने आ चुकी हैं। अगर युद्ध या तनाव की स्थिति न हो तो रिहाई में ज्यादा मुश्किल नहीं होती है। मगर पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान स्थित आतंकी ठिकानों पर जिस तरह का हमला किया था, उसे एक तरह से सीधा संघर्ष मान लिया गया था। पाकिस्तान पहले ही अवांछित गतिविधियों के अंजाम देने से लेकर आतंकवादियों को शह और समर्थन देकर भारत को नुकसान पहुंचाने की कोशिश करता रहा है। ऐसे में वहां पकड़ लिए गए बीएसएफ जवान के प्रति उसके व्यवहार या रिहाई को लेकर आशंका बनी हुई थी, क्योंकि इसके लिए शुरू होने वाली प्रक्रिया काफी संवेदनशील और जटिल होती है। अंतरराष्ट्रीय कानून और सैन्य संधियों के तहत अगर कोई जवान गलती से सीमा पार कर जाता है तो उसके खिलाफ ज्यादा गंभीर कार्रवाई नहीं की जाती। हालांकि यह दोनों देशों के बीच संवाद और समझौते पर निर्भर करता है। इस लिहाज से देखें तो बीते कुछ दिनों के दौरान तेजी से बदलते घटनाक्रम में जवान की रिहाई के लिए भारत ने कूटनीतिक प्रयास तेज कर दिए थे और आखिर इसमें कामयाबी मिली।

जीवन का आधार है संबंध, इसी से हमारे कर्म का होता है निर्धारण

इन दिनों सोशल मीडिया पर संबंधों पर खूब बातें होती हैं। उसे बनाने, चलाने और बढ़ाने पर चर्चा, बहस मुबाहिसा आदि चलते ही रहते हैं। सुबह से लेकर देर रात तक बड़ी-बड़ी सारगर्भित उक्तियां लिखी, कही और कहीं से उठा के कहीं लगा ली जाती है। बहुत सारे लोग सुबह, दोपहर, शाम तीनों वक्त अपने मित्रों और इष्टजनों को शुभवचन, मंगलकानाएं आदि भेजते रहते हैं। किसी को याद करना, उनके हर दिन को स्मरणीय बनाने की कोशिश करना एक अच्छी बात है। पर अफसोस की बात यह होती है कि ऐसी बातें ज्यादातर इन्हीं खानों तक सीमित रह जाती हैं।

मनुष्य का संबंध सिर्फ मनुष्य से ही नहीं होता, बल्कि स्वयं से, विचारों, वातावरण, प्रकृति, जीव-जंतु आदि से जुड़ना भी संबंध ही है। न सबके साथ अपने रिश्तों को समझ कर ही व्यक्ति जीवन को भली-भांति समझ सकता है। उसके व्यक्तित्व का विस्तार तथा जीवन की पूर्णता का रहस्य इसी में समाहित है। इन दिनों सोशल मीडिया पर संबंधों पर खूब बातें होती हैं। उसे बनाने, चलाने और बढ़ाने पर चर्चा, बहस मुबाहिसा आदि चलते ही रहते हैं। सुबह से लेकर देर रात तक बड़ी-बड़ी सारगर्भित उक्तियां लिखी, कही और कहीं से उठा के कहीं लगा ली जाती है। बहुत सारे लोग सुबह, दोपहर, शाम तीनों वक्त अपने मित्रों और इष्टजनों को शुभवचन, मंगलकानाएं आदि भेजते रहते हैं। किसी को याद करना, उनके हर दिन को स्मरणीय बनाने की कोशिश करना एक अच्छी बात है। पर अफसोस की बात यह होती है कि ऐसी बातें ज्यादातर इन्हीं खानों तक सीमित रह जाती हैं। महत्त्वपूर्ण यह भी कि इन्हें कहने और सुनने वाले अधिकांश लोगों का लगभग सारा समय उनके हाथों की परिधि में समाए 'डिजिटल स्लेटों' की गुत्थियों को सुलझाने-उलझाने में ही बीत जाती है। संबंधों की दुहाई देते ये लोग दूर के रिश्तेदारों की कौन कहे, अपने परिजनों, यहां तक कि माता-पिता के साथ भी सही तरीके से रिश्तों का निर्वहन नहीं कर पाते। संबंधों के निर्माण और निबाह की अधिकांश बातें इंस्टाग्राम, वाट्सएप और फेसबुक आदि से शुरू होकर वहीं खत्म भी हो जाती हैं। संबंध ही हमारे जीवन और सामाजिक जीवन का आधार है। उसका विकास और विस्तार समाज के निर्माण की बुनियाद है। महान राजनीतिक विचारक अरस्तू कहते हैं, 'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज से बाहर रहने वाला या तो पशु है या देवता।' मनुष्य अलग-थलग नहीं रह सकता। समाज में ही उसका विकास होता है। गौरतलब है कि समाज के निर्माण का आधार लोगों के बीच का परस्पर संबंध है। आपसी संबंध और समाज एक दूसरे के पर्यायवाची हैं। एक के बिना दूसरा अस्तित्वहीन है। हमारे जीवन का आधार संबंध है और इसी से हमारे कर्म भी निर्धारित होते हैं। यानी संबंधों का ताना-बाना ही मनुष्य को कुछ करने या कुछ बनने के लिए उत्प्रेरित करता है। हम अपनी जरूरतों की पूर्ति और घर-परिवार, गांव, देश और समाज के लिए अपनी उपादेयता सिद्ध करने के लिए कर्म से जुड़ते हैं। कहा जा सकता है कि जीवन संबंध है और संबंध ही कर्म। संबंध का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है। मनुष्य का संबंध सिर्फ मनुष्य से ही नहीं होता, बल्कि स्वयं से, विचारों, वातावरण, प्रकृति, जीव-जंतु आदि से जुड़ना भी संबंध ही है। इन सबके साथ अपने रिश्तों को समझ कर ही व्यक्ति जीवन को भली-भांति समझ सकता है। उसके व्यक्तित्व का विस्तार तथा जीवन की पूर्णता का रहस्य इसी में समाहित है। यह एक अजीब बात है कि हममें से दुनिया के ज्यादातर हिस्से से नाता जोड़ते और सामंजस्य स्थापित करते-करते स्वयं की क्षमताओं, मन की गति, सोच आदि से ही अनभिज्ञ होते जाते हैं। उनकी सारी उम्र इसी अनभिज्ञता में बीत जाती है। वास्तव में जीवन के सहज और संतोषप्रद प्रवाह के लिए आत्म साक्षात्कार सबसे पहली जरूरत है। स्वयं को जानना, मन की गति को समझना, उससे जुड़ना और उसी दिशा में कर्मरत होना मनुष्य और समाज के बेहतर संबंधों के लिए जरूरी है। जो व्यक्ति स्वयं को नहीं पहचानता, अपनी जरूरतों, खुशियों के लिए पहल नहीं करता या उसे महत्त्व नहीं देता, वह समाज से भी सकारात्मक जुड़ाव स्थापित नहीं कर पाता। बिना संबंध के मनुष्य या किसी भी जीव मात्र का होना असंभव है। हमारे होने का मतलब ही संबंधित होना है। सूर्य, चांद, धरा, पर्वत, नदी, वृक्ष, जल, थल, नभ, जीव सहित प्रकृति का हर जर्रा एक दूजे के साथ स्थापित संबंधों पर ही टिके हैं। सच यह है कि सृष्टि का चक्र इसी के बदौलत चलायमान है। हमारे द्वारा संबंधों की इन गुत्थियों को समझ नहीं पाना संघर्ष और विवाद का कारण बनता है। बहुत सारे लोग संबंधों को जीते नहीं है, बल्कि आवश्यकतानुसार उसका उपयोग करते हैं। जन्म से मिले संबंधों के अलावा (अक्सर उसमें भी) अधिकांश में उसकी लाभप्रदता और महत्त्व की तलाश करते हैं। व्यक्ति की स्वार्थपरकता उसे ऐसा करने को विवश करती है। अपने वृद्ध माता-पिता और परिजनों को वृद्धाश्रम में रखना, संपत्ति के लिए परिवारजनों, मित्रों से विश्वासघात, छोटी-छोटी बातों को लेकर रिश्ते तोड़ना, अपने फायदे के लिए किसी भी हद तक जाना आदि स्वार्थपरकता की पराकाष्ठा है। गौरतलब है कि स्वार्थपरता और संबंध एक दूसरे के धुर विरोधी हैं। दोनों का साथ चलना असंभव है। अगर हम मानव जीवन की गहन पड़ताल करें तो पाएंगे कि वह अलग-अलग समय में अलगाव की विभिन्न प्रक्रियाओं से गुजरता है। वह ज्यादातर उन्हीं संबंधों को तरजीह देता है, जिनसे उसका हित जुड़ा होता है और हितों की समाप्ति के साथ ही उनसे छुटकारा पा लेता है या पाने की कोशिश करता है। यह स्थिति संबंध के मर्म पर आघात है। वास्तव में संबंधों को समझना जीवन को समझने के समान है। यह मनुष्यता का द्योतक है। जिसने भी इसकी गूढ़ता और महत्त्व को समझा है, वही सफल इंसान बन पाया है। विडंबना यह है कि आज के समाज में सफलता की जो परिभाषा तय की गई है, उसका अंधानुकरण किया जा रहा है, उसे प्राप्त करने के क्रम में संबंधों को दरकिनार कर दिया जाता है। सवाल है कि अगर हम सफलता की ऊंचाई पर पहुंच जाते हैं, लेकिन उस सफलता पर उल्लसित होने वाला हमारा कोई करीबी या संबंधी हमारे आसपास नहीं होता, तो उसकी क्या कीमत होगी।

भारत को विकसित बनाने वाली मुद्रा योजना, उपलब्धियों पर हमें गर्व करना चाहिए

विकसित भारत के हमारे सपने को साकार करने में मुद्रा सर्वथा उपयुक्त पहल है क्योंकि यह जनसांख्यिकीय स्थिति का लाभ उठाने की दिशा में शहरी क्षेत्रों के साथ-साथ दूरदराज के स्थानों में भी सदैव आकांक्षी वर्ग की उद्यमशीलता की क्षमता को सक्रिय करती है और उत्पादन के दो महत्वपूर्ण कारकों-विनिर्माण और कृषि/संबद्ध गतिविधियों को मजबूत करती है। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) भारतीय अर्थव्यवस्था के आधार स्तंभ हैं। ये व्यवसाय मुख्य रूप से अपंजीकृत संगठनों के रूप में कार्य करते हुए भारत के सकल घरेलू उत्पाद में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। 2024-25 में भारत के कुल निर्यात में उनका योगदान 45.79 प्रतिशत रहा। एमएसएमई को ऋण उपलब्ध कराना हमारी वित्तीय प्रणाली के लिए एक चुनौती रही है, लेकिन हाल के समय में बैंकों द्वारा भारत की नवीन प्रौद्योगिकी को पूरी तरह आत्मसात कर लिया गया है। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना यानी पीएमएमवाइ उद्यमशीलता और स्वरोजगार को गति देकर व्यापक परिवर्तन लाने में सफल रही है। पीएमएमवाइ के अधिकांश लाभार्थी सामान्य शुरुआत कर पहली पीढ़ी के व्यवसायी बने हैं। वित्त वर्ष 2015-16 से आरंभ पीएमएमवाइ एक युगांतकारी अग्रणी कार्यक्रम है। इसका उद्देश्य वित्त विहीन सूक्ष्म उद्यमों और छोटे व्यवसायों को वित्त उपलब्ध कराना है। प्रारंभ में इस योजना का लक्ष्य विनिर्माण, व्यापार और सेवा क्षेत्रक सहित गैर-कृषि क्षेत्र था। बाद में इसके अंतर्गत कृषि गतिविधियों को भी शामिल कर लिया गया। पीएमएमवाइ के तहत कुल ऋण भुगतान वित्त वर्ष 2016 में 1.37 लाख करोड़ रुपये रहा, जो वित्त वर्ष 2025 में फरवरी के अंत तक 4.8 लाख करोड़ रुपये हो गया। औसत ऋण राशि जो 2016 में 38,100 रुपये थी, वह 2025 में बढ़कर 1,02,870 रुपये हो गई। इस दौरान लगभग सभी बैंकों में औसत ऋण राशि में वृद्धि देखी गई। पीएमएमवाइ की कुछ प्रमुख विशेषताएं इसे पिछली ऐसी योजनाओं से अलग करती हैं। पीएमएमवाइ को जोखिम मुक्त रखने की कोशिश की गई है, ताकि ऋण प्रवाह निरंतर सुनिश्चित हो। पीएमएमवाइ में सिक्योरिटी/जमानत आधारित ऋण के बजाय नकदी प्रवाह आधारित ऋण देने पर जोर दिया गया है। अब ऋण लेने वाले उद्यम मित्र पोर्टल पर आनलाइन आवेदन कर सकते हैं। इस योजना के अंतर्गत लगभग 52 करोड़ मुद्रा ऋणों में 33.19 लाख करोड़ रुपये की राशि प्रदान की गई है। पीएमएमवाइ का सामाजिक प्रभाव भी बहुत गहरा है। इसे सामाजिक समूहों, महिलाओं और अल्पसंख्यकों पर इसके प्रभाव से समझा जा सकता है। सामाजिक समूहों के संदर्भ में पीएमएमवाइ ने कमजोर वर्गों को चरणबद्ध तरीके से ऋण प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित किया है। इसमें एससी-एसटी और ओबीसी जैसी उपश्रेणियों की हिस्सेदारी लगातार बढ़ी है, जो लाभार्थियों का लगभग 50 प्रतिशत हिस्सा (52 करोड़ में से 26 करोड़ रुपये) हैं। महिलाएं भी पीएमएमवाइ का अभिन्न हिस्सा हैं। कुल खातों का लगभग 69 प्रतिशत महिला लाभार्थियों का है। पीएमएमवाइ ने समावेशन के मामले में भी अच्छा प्रदर्शन किया है। अल्पसंख्यक समुदायों के लाभार्थियों द्वारा 5.70 करोड़ मुद्रा ऋणों का लाभ उठाना इसका उदाहरण है। मुद्रा इकोसिस्टम के साथ जुड़ाव समग्र रूप से बैंक और उसके कार्यबल के लिए एक उत्साहवर्धक अनुभव रहा है। भारतीय बैंकर के रूप में एसबीआई नेक और न्यायपूर्ण उद्देश्यों को पूरा करने में सदैव सबसे आगे रहा है। हम लाखों सूक्ष्म और लघु उद्यमियों, विशेष रूप से नए आवेदकों को अपनी वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने के लिए अथक प्रयास करते हैं। हमारी शाखाओं के साथ-साथ हम अपने डिजिटल बुनियादी ढांचे की उपलब्धता यथासमय सुनिश्चित करते हैं, जिससे बैंक रहित या अल्प-बैंकिंग सुविधा वाले लोगों की जरूरतों और आशाओं के अनुरूप सरलता से समयबद्ध ऋण वितरण किया जाता है। बैंक ने 1.72 करोड़ से अधिक मुद्रा ऋणों का वित्तपोषण किया है, जिसमें तीन लाख करोड़ से अधिक की राशि स्वीकृत की गई। इससे देश के आर्थिक विकास को आगे बढ़ाने के लिए एक गतिशील व्यवसाय अनुकूल इकोसिस्टम बना है। अभी, यह केवल एक शुरुआत मात्र है। डिजिटलीकरण और मुद्रा ऋणों की लोन प्रोसेसिंग और उसकी मंजूरी को सुव्यवस्थित करने पर ध्यान केंद्रित करने के कारण हम इसमें अधिकाधिक योगदान देने में सक्षम हुए हैं। एसबीआई ने जनसमर्थ प्लेटफार्म के माध्यम से 10 लाख तक के ऋण के लिए एक डिजिटल ऋण निर्णय माडल मुद्रा-बीआरई शुरु किया है। यह पहल मानवीय हस्तक्षेप को कम करती है और त्वरित ऋण मंजूरी सुनिश्चित करती है। जैसे-जैसे महत्वाकांक्षी इकाइयां तेजी से विकास करती हैं, वैसे-वैसे हमारे बैंक की उपस्थिति एवं निगमित ऋण से जुड़ाव उन्हें सहयोग प्रदान करता है। नए बाजारों में पैठ बनाने/सही तकनीक आत्मसात करने एवं मूल्यवान संसाधनों की बचत के साथ उपयुक्त भागीदारों के साथ जुड़ने की इच्छुक इकाइयों के लिए हमारी कागज रहित ऋण वितरण प्रणाली में असीम संभावनाएं हैं। विकसित भारत के हमारे सपने को साकार करने में मुद्रा सर्वथा उपयुक्त पहल है, क्योंकि यह जनसांख्यिकीय स्थिति का लाभ उठाने की दिशा में शहरी क्षेत्रों के साथ-साथ दूरदराज के स्थानों में भी सदैव आकांक्षी वर्ग की उद्यमशीलता की क्षमता को सक्रिय करती है और उत्पादन के दो महत्वपूर्ण कारकों-विनिर्माण और कृषि/संबद्ध गतिविधियों को मजबूत करती है। जब यह योजना अपने अतुल्य प्रभाव के 10 वर्ष पूरे कर रही है, तब हमें इसकी व्यापक उपलब्धियों पर गर्व की अनुभूति होती है।

न्यायिक सक्रियता अच्छी बात है, लेकिन जब वह अति सक्रियता में बदल जाए और इस क्रम में संविधान की अनदेखी कर अपनी सीमा का अतिक्रमण करता दिखने लगे तो फिर उससे सवाल किए ही जाने चाहिए। यह आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य था कि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु सुप्रीम कोर्ट से अन्य प्रश्नों के साथ यह पूछतीं कि जब संविधान में विधेयकों की मंजूरी के लिए समय सीमा का प्रविधान नहीं है तो फिर वह यह काम कैसे कर सकता है?

सवालों से घिरा सुप्रीम कोर्ट, राष्ट्रपति को कई सवाल पूछने पड़ रहे

सुप्रीम कोर्ट को संविधान की व्याख्या का अधिकार है लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि वह संविधान को नए सिरे से लिखता हुआ दिखने लगे। यह पहली बार नहीं है जब उसने न्यायिक सक्रियता की अति की हो। उसने कृषि कानूनों की परख किए बिना ही उन पर रोक लगाकर भी ऐसा ही किया था। न्यायिक सक्रियता अच्छी बात है, लेकिन जब वह अति सक्रियता में बदल जाए और इस क्रम में संविधान की अनदेखी कर अपनी सीमा का अतिक्रमण करता दिखने लगे तो फिर उससे सवाल किए ही जाने चाहिए। यह आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य था कि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु सुप्रीम कोर्ट से अन्य प्रश्नों के साथ यह पूछतीं कि जब संविधान में विधेयकों की मंजूरी के लिए समय सीमा का प्रविधान नहीं है तो फिर वह यह काम कैसे कर सकता है? राष्ट्रपति को ऐसे कई सवाल इसलिए पूछने पड़ रहे हैं, क्योंकि कुछ समय पहले सुप्रीम कोर्ट ने तमिलनाडु मामले में अपने निर्णय में वहां के राज्यपाल को आदेशित किया था कि उन्हें विधानसभा से पारित विधेयकों पर तय समय में फैसला लेना होगा। उसने यह भी कहा था कि राज्यपाल की ओर से भेजे गए विधेयकों पर राष्ट्रपति को तीन महीने के भीतर फैसला लेना होगा और यदि तय समय सीमा में फैसला नहीं लिया जाता तो राष्ट्रपति को राज्य को इसका कारण बताना होगा। वह यहीं नहीं रुका था, उसने ऐसे किसी विषय पर राष्ट्रपति को खुद से सलाह लेने को भी कह दिया था। ऐसा आदेश देकर सुप्रीम कोर्ट ने एक तरह से राज्यपाल और राष्ट्रपति की संवैधानिक शक्तियों में बदलाव कर दिया था। किसी के लिए समझना कठिन था कि ऐसा किस अधिकार से किया गया? इससे भी विचित्र बात यह हुई थी कि सुप्रीम कोर्ट ने राज्यपाल के पास विचारार्थ तमिलनाडु के विधेयकों को खुद मंजूरी देकर उनके कानून बनने का रास्ता साफ कर दिया था। ऐसा इसके पहले कभी नहीं हुआ। उसने एक तरह से राज्यपाल और राष्ट्रपति, दोनों की शक्तियों को अपने हाथ ले लिया था। इसी कारण इस फैसले पर सवाल उठे थे और उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने तो सुप्रीम कोर्ट को निशाने पर लेते हुए तीखी टिप्पणी थी। सुप्रीम कोर्ट के उक्त विवादित और हैरान करने वाले फैसले पर इसलिए और भी सवाल उठे थे, क्योंकि वह फैसला दो न्यायाधीशों की पीठ ने दिया था, किसी संविधान पीठ ने नहीं। यह न्यायिक सीमा का अतिक्रमण नहीं तो और क्या था? इससे इन्कार नहीं कि राज्यपाल कई बार विधानसभा से पारित विधेयकों पर कोई फैसला नहीं लेते और महीनों उन्हें दबाए बैठे रहते हैं। इस समस्या का समाधान निकाला ही जाना चाहिए, लेकिन इसके नाम पर सुप्रीम कोर्ट ऐसा निर्णय कैसे दे सकता है, जो संविधानसम्मत न हो। सुप्रीम कोर्ट को संविधान की व्याख्या का अधिकार है, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि वह संविधान को नए सिरे से लिखता हुआ दिखने लगे। यह पहली बार नहीं है, जब उसने न्यायिक सक्रियता की अति की हो। उसने कृषि कानूनों की परख किए बिना ही उन पर रोक लगाकर भी ऐसा ही किया था।

पाकिस्तान में आतंकी ठिकानों पर भारत के 'आपरेशन सिंदूर' की कामयाबी पर जहां पूरा देश गौरवान्वित है, वहीं मध्य प्रदेश सरकार के एक मंत्री विजय शाह की बदजुबानी से सभी देशवासियों को शर्मिंदगी उठानी पड़ी। सार्वजनिक मंच पर कर्नल सोफिया कुरैशी के संदर्भ में मंत्री ने जिस तरह की बेहद आपत्तिजनक टिप्पणी की, उससे भारत की सौहार्द और धर्मनिरपेक्षता की भावना को ठेस पहुंची है। स्वाभाविक ही सभी ने इसकी भर्त्सना की।

कर्नल सोफिया कुरैशी के संदर्भ में मंत्री के बेलगाम बोल, बयान से देशवासियों को उठानी पड़ी शर्मिंदगी

एक जिम्मेदार पद पर बैठे व्यक्ति की अशोभनीय और आपत्तिजनक भाषा का समर्थन देश के प्रति सम्मान रखने वाला कोई भी व्यक्ति नहीं करेगा। पाकिस्तान में आतंकी ठिकानों पर भारत के 'आपरेशन सिंदूर' की कामयाबी पर जहां पूरा देश गौरवान्वित है, वहीं मध्य प्रदेश सरकार के एक मंत्री विजय शाह की बदजुबानी से सभी देशवासियों को शर्मिंदगी उठानी पड़ी। सार्वजनिक मंच पर कर्नल सोफिया कुरैशी के संदर्भ में मंत्री ने जिस तरह की बेहद आपत्तिजनक टिप्पणी की, उससे भारत की सौहार्द और धर्मनिरपेक्षता की भावना को ठेस पहुंची है। स्वाभाविक ही सभी ने इसकी भर्त्सना की। इस मामले की गंभीरता का अंदाजा मध्य प्रदेश हाई कोर्ट के न्यायाधीश की टिप्पणियों और मंत्री के खिलाफ बिना देर किए प्राथमिकी दर्ज करने के आदेश से लगाया जा सकता है। इस मामले में उच्च न्यायालय के न्यायाधीश ने साफ शब्दों में कहा कि मंत्री का बयान न केवल व्यक्तिगत मानहानि है, बल्कि समाज के ताने-बाने पर भी चोट करता है। इसके अलावा, जब एक न्यायाधीश को कानूनी कार्रवाई शुरू करने के लिए यह कहना पड़े कि 'हो सकता है कि कल मैं जीवित न रहूंज चार घंटे में आदेश का पालन हो' तो इससे व्यवस्था की जटिलता और उदासीनता का पता चलता है। विडंबना यह है कि अदालत के इस तरह के रुख के बावजूद आरोप को स्पष्टता के साथ दर्ज करने में लापरवाही बरती गई। सवाल उठता है कि जिस बेहद संवेदनशील समय में भारत ने पाकिस्तानी के खिलाफ कार्रवाई करते हुए भी बेहद संयमित और नपा-तुला रुख अपनाया, उससे हासिल गरिमा को कायम रखने के बजाय उसे बिगाड़ने की कोशिश करने वाले व्यक्ति को कैसे देखा जाना चाहिए। मंत्री ने महिला सैन्य अधिकारी की गरिमा को ही ठेस नहीं पहुंचाई, बल्कि सेना की प्रतिष्ठा को भी धूमिल करने की कोशिश की। मामले के तूल पकड़ने के बाद भले ही मंत्री ने सफाई दी, लेकिन ऐसे बयानों के असर को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। एक जिम्मेदार पद पर बैठे व्यक्ति की अशोभनीय और आपत्तिजनक भाषा का समर्थन देश के प्रति सम्मान रखने वाला कोई भी व्यक्ति नहीं करेगा। जरूरत इस तरह की बदजुबानी और बेलगाम बयानबाजी पर पूरी तरह रोक लगाने के लिए ठोस और नीतिगत पहल करने की है, ताकि देश के संविधान के मर्म और सौहार्द को कोई नुकसान न पहुंचे।

बार्सिलोना ने 28वीं बार जीता ला-लीगा, एस्पान्योल को 2-0 से हराया

दो मैच शेष रहते बना चैंपियन, 17 साल के यामल ने गोल दागा

नई दिल्ली। बार्सिलोना ने गुरुवार को एस्पान्योल को 2-0 से हराकर अपना 28वां स्पेनिश लीग खिताब जीत लिया। 17 साल के लामिने यामल ने शानदार प्रदर्शन करते हुए टीम को यह ऐतिहासिक जीत दिलाई। बार्सिलोना लीग के दो मैच बाकी रहते हुए ही खिताब अपने नाम कर लिया है।

स्पेनिश लीग में सबसे ज्यादा पॉइंट स्कोर करने वाली टीम खिताब जीतती है। बार्सिलोना के 36 मैच के बाद 85 पॉइंट हैं। वह पॉइंट टेबल में टॉप पर है। जबकि रियल मैड्रिड 36 मैचों के बाद 78 पॉइंट के साथ दूसरे स्थान पर है।

स्पेनिश लीग में 20 टीमें खेल रही है। प्रत्येक टीम को एक-दूसरे से दो-दो मैच खेलने हैं। एक मैच अपने होम ग्राउंड पर और दूसरा बाहर, यानी प्रत्येक टीम को 38 मैच लीग में खेलने हैं। सभी 20 टीमों ने 36-36 मैच खेल लिए हैं और लीग में सभी के दो-दो मैच बाकी है।

यामल ने टीम के लिए किया पहला गोल मैच के 53वें मिनट में यामल ने गोल कर टीम को 1-0 की बढ़त दिलाई। उन्होंने एस्पान्योल के दो डिफेंडरों को चकमा देते हुए गेंद को गोल पोस्ट में मार दिया।

मैच के 80वें मिनट में एस्पान्योल के लिएंड्रो काबरेरा को लाल कार्ड दिखाया गया, जिसकी वजह से टीम को मैच समाप्त होने तक 10 खिलाड़ियों के साथ ही खेलना पड़ा। काबरेरा को लाल कार्ड इसलिए दिया गया क्योंकि बॉल छीनने के दौरान उन्होंने यामल के पेट में मार दिया।

फर्मिन लोपेज ने इंजरी टाइम में बार्सिलोना के लिए दूसरा गोल किया फर्मिन लोपेज के गोल ने बार्सिलोना को जीत दिलाई। इंजरी टाइम में लोपेज ने 96 मिनट पर गोल करके टीम को 2-0 से बढ़त दिला दी।

पाटीदार ने माना कप्तानी सौंपे जाने के कारण वह दबाव महसूस कर रहे थे

नई दिल्ली। आईपीएल 2025 में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) टीम की अगुआई कर रहे रजत पाटीदार 2022 सत्र को लेकर काफी निराश थे जब आश्वासन के बावजूद फ्रेंचाइजी ने खिलाड़ियों की नीलामी में उन्हें नजरअंदाज कर दिया था। टीम में चोटिल खिलाड़ी के विकल्प के तौर पर शामिल हुए पाटीदार ने कहा कि वह तब दुखी और गुस्से में थे। इस बात का खुलासा उन्होंने खुद ही एक पॉडकास्ट में किया है। पाटीदार ने यह भी स्वीकार किया कि आईपीएल 2025 से पहले विराट कोहली द्वारा कप्तानी सौंपे जाने के कारण वह दबाव महसूस कर रहे थे, लेकिन इस दिग्गज खिलाड़ी के समर्थन भरे शब्दों ने उन्हें सहज कर दिया। पाटीदार इस सत्र में आरसीबी के मध्यक्रम के मुख्य खिलाड़ियों में से एक रहे हैं। उन्होंने 11 मैचों में 239 रन बनाए हैं। उनका लक्ष्य टीम को आईपीएल का पहला खिताब दिलाना है।

पाटीदार ने आरसीबी पॉडकास्ट पर कहा, मुझे आईपीएल 2022 के लिए मेगा नीलामी से पहले एक संदेश मिला था कि आप तैयार रहें, हम आपको चुनेंगे। मुझे थोड़ी उम्मीद थी कि मुझे एक और मौका मिलेगा, लेकिन मुझे मेगा नीलामी में नजरअंदाज किया गया। मैं इससे थोड़ा दुखी था। मध्यप्रदेश के इस 31 साल के बल्लेबाज को हालांकि अपने राज्य के ही एक खिलाड़ी के चोटिल होने के बाद आरसीबी में वापसी करने का मौका मिल गया।

पाटीदार हालांकि बेंगलुरु वापस आने के लिए उत्सुक नहीं थे, क्योंकि उन्हें पता था कि बड़े खिलाड़ियों से भरी टीम में खेलने का मौका शायद ही मिले। उन्होंने कहा, मैंने नीलामी में नहीं चुने जाने के बाद इंदौर में अपने स्थानीय मैचों में खेलना शुरू कर दिया था। मुझे फिर फोन आया कि हम आपको लवनीथ सिसोदिया की जगह चुन रहे हैं। सिसोदिया चोटिल होने के कारण उस सत्र में टीम से बाहर हो गए थे।

मुस्तफिज़ुर रहमान के आईपीएल खेलने का रास्ता साफ, मिचेल स्टार्क की जगह लेंगे

नई दिल्ली। बांग्लादेश के तेज गेंदबाज मुस्तफिजुर रहमान के आईपीएल खेलने का रास्ता साफ हो गया है। 29 साल के तेज गेंदबाज को बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड की ओर से नो ऑब्जेक्शन सर्टिफिकेट मिल गया है। बीसीबी ने शुक्रवार को एक स्टेटमेंट जारी कर बताया कि रहमान 18 से 24 मई के बीच आईपीएल खेलने के लिए उपलब्ध रहेंगे। इसके अनुसार, रहमान 17 मई को यूएई के खिलाफ पहला टी-20 मैच खेलेंगे। उसके बाद इंडिया के लिए रवाना होंगे। जहां 18 से 24 मई तक दिल्ली के बचे लीग मैचों में हिस्सा लेंगे, हालांकि वे प्लेऑफ शुरू होने से पहले लौट जाएंगे। रहमान को दिल्ली कैपिटल्स ने 6 करोड़ रुपए में अपने साथ जोड़ा था। वे ऑस्ट्रेलियाई पेसर मिचेल स्टार्क की जगह लेंगे। स्टार्क ने दिल्ली की ओर से आईपीएल के बचे मैच नहीं खेलने का फैसला लिया है। वे वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल की तैयारी कर रहे हैं। आईपीएल 2025 के बचे मुकाबले 17 मई से शुरू हो रहे हैं। इन्हें भारत-पाकिस्तान तनाव के बीच रोक दिया गया था। दिल्ली ने रहमान को 6 करोड़ रुपए में अपने साथ जोड़ा था। इसके बाद बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड के सीईओ निजामुद्दीन चौधरी ने कहा था- अभी तक बीसीबी से प्लेयर और बीसीसीआई ने इस एग्रीमेंट के लिए एनओसी नहीं मांगा गया है। उन्होंने कहा था- मुस्तफिजुर को टीम के साथ यूएई जाना है।

शास्त्री ने बताई कोहली के संन्यास की वजह लोगों के लगातार कमेंट्स से परेशान थे

नई दिल्ली। पूर्व भारतीय कोच रवि शास्त्री ने विराट कोहली के रिटायरमेंट की वजह का खुलासा किया है। शास्त्री के अनुसार कोहली लगातार सार्वजनिक टीका-टिप्पणी से मानसिक रूप से थक चुके थे। शास्त्री ने आईसीसी रिव्यू में बताया कि उन्होंने संन्यास का फैसला सार्वजनिक करने से पहले कोहली से बात की थी। उन्होंने रोहित के संन्यास पर भी बात की।

पूर्व भारतीय कोच ने कहा- मैंने उनसे इस बारे में बात की थी। मुझे लगता है कि उनके संन्यास की घोषणा से एक सप्ताह पहले उनका दिमाग बहुत स्पष्ट था। उन्हें कोई पछतावा नहीं है। विराट ने मुझे चौंका दिया क्योंकि मुझे लगा कि उनमें टेस्ट क्रिकेट के लिए कम से कम दो-तीन साल बाकी हैं। जब आप मानसिक रूप से थके हुए होते हैं तो यही आपके शरीर को बताता है।% उन्होंने रोहित शर्मा की फॉर्म पर कहा- अगर मैं भारतीय टीम का कोच होता तो सिडनी टेस्ट में रोहित शर्मा को बाहर नहीं होने देता।

विराट कोहली ने 12 मई को टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले लिया था। उन्होंने एक इंस्टा पोस्ट में लिखा- टेस्ट क्रिकेट ने मेरी परीक्षा ली, मुझे आकार दिया, वो पाठ सिखाए जो जिंदगीभर मुझे याद रहेंगे। कोहली ने 2011 में वेस्टइंडीज के खिलाफ डेब्यू किया था।

इंग्लैंड के खिलाफ टी20-वनडे सीरीज के लिए भारतीय टीम घोषित, शेफाली की वापसी

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने गुरुवार को इंग्लैंड दौरे के लिए भारतीय टीमों का एलान कर दिया। अगले महीने से दोनों देशों की महिला टीमों के बीच पांच टी20 और तीन वनडे मैचों की सीरीज खेली जाएगी। दोनों टीमों का नेतृत्व हरमनप्रीत कौर करेंगी जिसमें उनकी डिप्टी स्मृति मंधाना होंगी।

भारतीय महिला टीम अगले महीने इंग्लैंड दौरे पर जाएगी और टी20 तथा वनडे सीरीज खेलेगी। 28 जून से पांच मैचों की टी20 सीरीज का आगाज होगा जबकि तीन मुकाबलों की वनडे सीरीज 16 जुलाई से खेली जाएगी। बीसीसीआई ने सीनियर महिला टीम का एलान कर दिया। वनडे विश्व कप 2025 की तैयारियों के लिहाज से भारतीय टीम के लिए यह सीरीज काफी अहम है।

भारत ने जीती त्रिकोणीय सीरीज

हाल ही में टीम इंडिया ने दक्षिण अफ्रीका और श्रीलंका के खिलाफ त्रिकोणीय सीरीज खेली थी। भारत ने इस सीरीज के फाइनल में श्रीलंका को 97 रन से हराकर सीरीज अपने नाम की थी। इस मुकाबले में उपकप्तान स्मृति मंधाना का बोलबाला रहा था। उन्होंने शानदार शतकीय पारी खेलकर जीत की नींव रखी थी। इसके बाद अमनजोत कौर और स्नेह राणा ने अपनी घातक गेंदबाजी से विपक्षी टीम को तगड़ा झटका दिया। अब भारतीय टीम की नजर इंग्लैंड के खिलाफ भी ऐसा ही प्रदर्शन करने पर होगी।

शेफाली की वापसी

इंग्लैंड के खिलाफ टी20 सीरीज के लिए घोषित टीम में शेफाली वर्मा की वापसी हुई है। उन्होंने भारत के लिए पिछले साल से कोई भी मैच नहीं खेला है। वहीं, तेज गेंदबाज रेणुका सिंह और ऑफ स्पिनर श्रेयंका पाटिल को किसी भी टीम का हिस्सा नहीं बनाया गया है। आयरलैंड के खिलाफ हाल ही में डेब्यू करने वाली सयाली सतघरे को दोनों टीमों में शामिल किया गया है। त्रिकोणीय सीरीज में नजर आईं काश्वी गौतम इस दौरे पर नहीं जाएंगी।

व्यापार

ऑपरेशन-सिंदूर के बाद डिफेंस शेयरों में लगातार तेजी कोचीन शिपयार्ड और मझगांव डॉक 13 प्रतिशत तक चढ़े

नई दिल्ली। पाकिस्तान के खिलाफ ऑपरेशन सिंदूर के बाद से भारतीय डिफेंस स्टॉक्स में लगातार तेजी बनी हुई है। शुक्रवार,16 मई को कोचीन शिपयार्ड, गार्डन रीच शिप बिल्डर्स और मझगांव डॉक जैसी कंपनियों के शेयर 15त्न तक चढ़े। पारस डिफेंस में 20 प्रतिशत का अपर सर्किट लगा, वहीं निफ्टी इंडिया डिफेंस इंडेक्स में 6 प्रतिशत की तेजी रही। ब्रोकरेज फर्म्स का मानना है कि पाकिस्तान से तनाव के बीच सरकारी ऑर्डर बढ़ने, घरेलू उत्पादन पर फोकस और निर्यात में बढ़ोतरी की संभावना के चलते डिफेंस स्टॉक्स लगातार निवेश हो रहा है। पिछले 5 दिनों में कोचीन शिपयार्ड ने 35 प्रतिशत तो वहीं गार्डन रीच शिप बिल्डर्स ने 36 प्रतिशत रिटर्न दिया है। डिफेंस इलेक्ट्रॉनिक्स बनाने वाली कंपनी पारस डिफेंस का शेयर आज 20त्न तेजी के साथ 1,817 रुपए पर बंद हुआ। क्क डिफेंस शेयर्स में गार्डन रीच शिप बिल्डर्स 10 प्रतिशत तेजी के साथ 2,486 रुपए पर बंद हुआ है। वहीं कोचीन शिपयार्ड का शेयर 13 प्रतिशत की तेजी के साथ 2,047 रुपए पर रहा। मझगांव डॉक के शेयर में करीब 11 प्रतिशत की तेजी रही।

गार्डन रीच शिप बिल्डर्स ने एफवाई25 में 48 प्रतिशत की उछाल के साथ 527 करोड़ रुपए का नेट प्रॉफिट दर्ज किया है। चौथी तिमाही में लाभ 118 प्रतिशत बढ़कर 244 करोड़ रुपए रहा। इसके चलते शेयर में पिछले एक साल में 125 प्रतिशत रिटर्न दिया है।

डिफेंस सेक्टर में तेजी की मुख्य वजह एफवाई27 तक 8.45 लाख करोड़ रुपए के ऑर्डर मिलने की संभावना है। डिफेंस एक्विजिशन काउंसिल ने हाल ही में ञ्ज-90 टैंक इंजन, वरुणास्त्र टॉरपीडो समेत 54,000 करोड़ रुपए के प्रोजेक्ट्स को मंजूरी दी है। एंटिक स्टॉक ब्रोकिंग के अनुसार, सरकार के मेक इन इंडिया पुश और घरेलू उत्पादों पर जोर देने की नीतियों से शिपयार्ड कंपनियों को लंबे समय तक फायदा मिलेगा। वर्तमान में देश का 65 प्रतिशत रक्षा उपकरण स्थानीय स्तर पर बन रहा है।

तुर्किए की फर्म से अडाणी ने पार्टनरशिप खत्म की, मुंबई-अहमदाबाद एयरपोर्ट पर सर्विसेज देती है सेलेबी एविएशन

नई दिल्ली। अडाणी एयरपोर्ट होल्डिंग्स ने मुंबई के छत्रपति शिवाजी महाराज इंटरनेशनल एयरपोर्ट और अहमदाबाद के सरदार वल्लभभाई पटेल इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर ग्राउंड हैंडलिंग सर्विसेज के लिए तुर्किए की फर्म सेलेबी के साथ अपनी पार्टनरशिप खत्म कर दी है।

भारत के सिविल एविएशन सिक्योरिटी ब्यूरो के एक नोटिफिकेशन के बाद ये पार्टनरशिप खत्म की गई है। 15 मई को ब्रष्ट्र ने सेलेबी का सिक्योरिटी क्लीयरेंस कैंसिल कर दिया था। ऐसे में सेलेबी को तुरंत सभी ग्राउंड हैंडलिंग फैसिलिटीज अडाणी को ट्रांसफर करनी होगी।

सेलेबी की सुरक्षा मंजूरी रद्द करने का फैसला भारत-पाक तनाव के बीच लिया गया है। पहलगाम आतंकी हमले का जवाब देने के लिए भारत द्वारा लॉन्च किए गए 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद तुर्किए ने पाकिस्तान का समर्थन किया था। ऐसे में तुर्किए की भारत में आलोचना हो रही है।

सिविल एविएशन सिक्योरिटी ब्यूरो ने क्या कहा?

15 मई को एक आदेश में, विमानन नियामक ने कहा कि राष्ट्रीय सुरक्षा के हित में सेलेबी एयरपोर्ट सर्विसेज इंडिया प्राइवेट लिमिटेड की सुरक्षा मंजूरी तत्काल प्रभाव से रद्द की जाती है। तुर्किए और अजरबैजान ने पाकिस्तान का समर्थन किया था और ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में आतंकवादी शिविरों पर भारत के हालिया हमलों की निंदा की। पाकिस्तान ने संघर्ष में बड़े पैमाने पर तुर्किए के ड्रोन्स का भी इस्तेमाल किया था।

मौजूदा कर्मचारी नई ग्राउंड हैंडलिंग एजेंसी में शामिल होंगे

अडाणी ने कहा कि दोनों हवाई अड्डों पर सेलेबी के सभी मौजूदा कर्मचारियों को उनकी मौजूदा शर्तों और रोजगार के आधार पर नई ग्राउंड हैंडलिंग एजेंसियों में शामिल किया जाएगा। अडाणी ने ये भी कहा कि हमारे हवाई अड्डों पर ग्राउंड हैंडलिंग ऑपरेशन अप्रभावित रहेगा।

इससे पहले दिल्ली इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड ने इसी तरह के कदम में इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर ग्राउंड हैंडलिंग और कार्गो संचालन के लिए सेलेबी के साथ अपने संबंधों को औपचारिक रूप से समाप्त कर दिया था। राष्ट्रीय सुरक्षा को इसका कारण बताया गया था।

निर्यात 9 फीसदी बढ़ा, व्यापार घाटा पांच माह के उच्च स्तर पर, इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पादों की अच्छी रही मांग

नई दिल्ली। इलेक्ट्रॉनिक्स और इंजीनियरिंग उत्पादों की मांग में अच्छी वृद्धि के कारण भारत का निर्यात अप्रैल, 2025 में सालाना आधार पर 9.03 फीसदी बढ़कर 38.49 अरब डॉलर पहुंच गया।?कच्चे तेल और उर्वरक की खरीदारी बढ़ने से देश का आयात भी एक साल पहले की तुलना में 19.12 फीसदी बढ़कर 64.91 अरब डॉलर पहुंच गया।?वाणिज्य मंत्रालय की ओर से बृहस्पतिवार को जारी आंकड़ों के मुताबिक, निर्यात की तुलना में अधिक आयात के कारण?अप्रैल में देश का व्यापार घाटा पांच महीने के उच्च स्तर 26.42 अरब डॉलर पर पहुंच गया। इससे पहले नवंबर, 2024 में सबसे ज्यादा 31.77 अरब डॉलर का व्यापार घाटा हुआ?था। अप्रैल, 2024 में देश से 35.30 अरब डॉलर का निर्यात किया गया था, जबकि आयात 54.49 अरब डॉलर रहा था।?

मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक, इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पादों का निर्यात अप्रैल में 39.51 फीसदी बढ़कर 3.69 अरब डॉलर पहुंच गया। इंजीनियरिंग निर्यात 11.28 फीसदी बढ़कर 9.51 अरब डॉलर हो गया।

सेवाओं का मूल्य 35.3 अरब डॉलर

आंकड़ों के अनुसार, अप्रैल, 2025 के लिए सेवाओं के निर्यात का अनुमानित मूल्य 35.31 अरब डॉलर था जो अप्रैल, 2024 में 30.18 अरब डॉलर था। सेवाओं के आयात का अनुमानित मूल्य 17.54 अरब डॉलर रहा, जो अप्रैल, 2024 में 16.76 अरब डॉलर था।

अमेरिका-चीन को बढ़ा निर्यात

आंकड़ों के मुताबिक, टैरिफ वार के बीच भारत से अमेरिका निर्यात 27.3 फीसदी बढ़कर 8.42 अरब डॉलर पहुंच गया।?वहीं, आयात भी 63.76 फीसदी की वृद्धि के साथ?5.24 अरब डॉलर रहा।?वहीं, चीन को निर्यात भी एक साल पहले के 1.25 अरब डॉलर से बढ़कर 1.41 अरब डॉलर पहुंच गया।

2030 तक इलेक्ट्रिक कारों का होगा दबदबा, 40 प्रशितात रहेगा हिस्सा, 2019 की तुलना में बिक्री में 146 गुना वृद्धि

नई दिल्ली। वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं के बावजूद इलेक्ट्रिक वाहनों का बाजार तेजी से विस्तार कर रहा है। अनुमान है कि 2030 तक दुनिया भर में बिकने वाली कारों में 40 फीसदी से अधिक इलेक्ट्रिक होंगी। वर्ष 2025 के अंत तक वैश्विक इलेक्ट्रिक कारों की बिक्री 20 करोड़ के पार जा सकती है, यानी हर चौथी बिकने वाली कार इलेक्ट्रिक होगी।

यह जानकारी अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (आईईए) की ताजा रिपोर्ट 'ग्लोबल ईवी आउटलुक 2025' में दी गई है। रिपोर्ट के अनुसार इलेक्ट्रिक कारों की बढ़ती लोकप्रियता का मुख्य कारण उनकी घटती कीमतें हैं और यह पहले के मुकाबले ज्यादा किफायती भी हो गईं हैं। जैसे-जैसे बाजारों में इनकी कीमतें आम उपभोक्ता की पहुंच में आ रही हैं, वैसे-वैसे बिक्री में भी तेजी देखी जा रही है। 2024 में दुनिया भर में 1.7 करोड़ से अधिक इलेक्ट्रिक कारें बिकीं, जिससे वैश्विक बाजार में इनकी हिस्सेदारी पहली बार 20 फीसदी के पार पहुंच गई। वहीं 2025 की पहली तिमाही में बिक्री में 35 फीसदी की वार्षिक वृद्धि दर्ज की गई और कई बड़े बाजारों में नए कीर्तिमान स्थापित हुए हैं।

भारत समेत एशिया और लैटिन अमेरिका के उभरते बाजारों में इलेक्ट्रिक वाहनों की मांग तेज़ी से बढ़ी है। 2024 में इन क्षेत्रों में ईवी की बिक्री में 60 फीसदी से अधिक की वृद्धि देखी गई। भारत में 2019 में मात्र 680 इलेक्ट्रिक कारें बिकी थीं, लेकिन 2024 तक यह आंकड़ा बढ़कर एक लाख पार हो गया, यानी 146 गुना वृद्धि हुई। 2023 में यह संख्या 82,000 थी और 2025 की पहली तिमाही में लगभग 35,000 इलेक्ट्रिक कारों की बिक्री हुई, जो साल दर साल 45 फीसदी की वृद्धि को दर्शाता है।

पेन्शनर संघ की बैठक, सेवा निवृत्त शिक्षकों के अर्जित अवकाश का शीघ्र हो निराकरण

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

देवास। पेंशनर एवं वरिष्ठ नागरिक कल्याण संघ जिला देवास के पदाधिकारी की बैठक संघ के संरक्षक एम एल मालवीय देवड़ा के मार्गदर्शन में एवं जिला अध्यक्ष पंडित देवीशंकर तिवारी की अध्यक्षता में हुई। बैठक का संचालन जिला सचिव अरविंद शर्मा ने किया।स्थानीय मल्हार स्मृति मंदिर परिसर में संघ की मासिक समीक्षा बैठक आयोजित की गई इसमें सबसे प्रमुख बिंदु था भारत-पाक सीमा पर हुए तनाव की स्थिति को लेकर संघ द्वारा राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में सहयोग राशि दिए जाने हेतु रखे गए प्रस्ताव को संकल्प लेते हुए सभी ने सहमति प्रदान की,वर्तमान में सीजफायर होने से यह तय किया गया की संघर्षपूर्ण स्थिति बनने पर ओर आवश्यकता होने पर संघ द्वारा पुरे जिले से सहयोग दिये जाने का प्रस्ताव

सर्वसम्मति से तय किया गया।दूसरे बिंदु शिक्षा विभाग के सेवा निवृत्त शिक्षक की प्रमुख समस्या अर्जित अवकाश का नगदी करण में हो रहे विलम्ब एवं 30 जून और 31 दिसंबर को सेवानिवृत होने वाले शिक्षकों को एक इंक्रीमेंट का लाभ नहीं दिए जाने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए जिले में हो रही अनियमितता और विलंब किया जा रहा है।इस लिए जिला शिक्षा अधिकारी से चर्चा कर निराकरण करने की मांग कि जाय।यथा समय निराकरण नहीं होता है तो जिलाधीश को संपूर्ण समस्या से अवगत कराया जाएगा। तीसरे बिंदु सदस्यता अभियान 15 जून तक पूर्ण लिया जाए। साथ ही वर्तमान संघर्ष में शहीद हुए भारतीय सैनिकों,भारतीय नागरिकों की मृत्यु पर एवं वरिष्ठ पेंशनर साथी अंबाराम वर्मा पूर्व विकासखंड शिक्षा अधिकारी सोनकच्छ के निधन होने पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

इस अवसर पर प्रदेश उपाध्यक्ष लक्ष्मी नारायण मोहरी,वरिष्ठ सदस्य शिवनारायण पाठक,उपाध्यक्ष अरुण शैव्य, सोनकच्छ तहसील अध्यक्ष प्रमोद भावसार,सतीश तिवारी, शंकरलाल शर्मा, कालुराम नवगोत्रि, पूर्व अध्यक्ष छोटेलाल माली,नाथूलाल राठौर, कांतिलाल पटेल आदि पदाधिकारी एवं कार्यकारणी सदस्य उपस्थित थे। अंत में आभार प्रदर्शन देवास तहसील अध्यक्ष अनिल नागर ने व्यक्त किया।

पुलिस चौकी फुनगा थाना भालूमाड़ा के द्वारा एक व्यक्ति से अवैध मादक पदार्थ गांजा 09 किलो 80 ग्राम व स्कूटी मो.सा. सहित कुल कीमती 150000/- जप्त कर कार्यवाही की गयी

(ब्यूरो राजेश शिवहरे)

अनूपपुर। पुलिस अधीक्षक मोती उर रहमान एंव अति.पुलिस अधीक्षक इसरार मंसूरी के द्वारा जिला अनूपपुर में अवैध मादक पदार्थ गांजा रखने वालो के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के तहत एसडीओपी कोतमा आरती शाक्य के मार्गदर्शन मे थाना प्रभारी भालूमाड़ा संजय खलको के दिशा निर्देशन में अवैध मादक पदार्थ गांजा रखने वाले एक आरोपी पर कार्यवाही की गई है - दिनांक 15.05.25 को हमराह स्टाफ शासकीय वाहन के कस्बा दैहात व हाईवे रोड पेट्रोलिंग हेतु रवाना हुआ था । दौरान पेट्रेलिंग हाईवे NH43 कोतमा अनूपपुर हाईवे पर सफेद रंग के स्कूटी चालक पर संदेह होने पर शासकीय वाहन को रोक कर वेयर हाउस के सामने किराना दुकान के पास मौके के

गवाहनो के समक्ष उक्त सफेद स्कूटी वाले के पास जाकर नाम पता पूछे जो अपना नाम जुगेश उर्फ राजेश बरगाही पिता कन्धई बरगाही उम्र 50 वर्ष निवासी समदाटोला पकरिया थाना बुढ़ार जिला शहडोल का होना बताया समक्ष गवाहान एवं हमराह स्टाप के स्कूटी पर रखे कंबल का बण्डल की तलाशी लेने पर कंबल के अंदर लपेटे हुये प्लास्टिक की सफेद रंग की दो अदद बोरी में मादक पदार्थ गांजा मिला । आवैध मादक पदार्थ गांजा को तौल किया गया जो दो प्लास्टिक की बोरी में कूल बजन 09 किलो 80 ग्राम कीमती 90000 /- रुपये का पाया गया । बरामदशुदा गांजा एवं स्कूटी मोटर साइकल कूल कीमत 150000/- रुपये का जप्त कर कब्जे पुलिस लिया गया । आरोपी जुगेश उर्फ राजेश बरगाही पिता कन्धई बरगाही उम्र 50 वर्ष निवासी समदाटोला पकरिया थाना बुढ़ार जिला शहडोल का यह कृत्य धारा 8/20 बी एनडीपीएस एक्ट का दण्डनीय पाये जाने पर आरोपी को वजह सबूत गिरफ्तारी किया गया है ।

उक्त कार्यवाही में ङ्क सोने सिंह परस्ते चौकी प्रभारी फुनगा, सउनि कोमल अरजरिया, आर. वीर सिंह, आर राकेश कनासे, शामिल रहे ।

एबी रोड़ पर लगे बेरिकेड्स बिगाड़ रहे यातायात व्यवस्था : पं. उपाध्याय

- बस स्टेण्ड सहित अन्य मुख्य मार्गों पर दिनभर लगा रहता है जाम

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

देवास। शहर में यातायात व्यवस्था को सुचारू बनाने हेतु यातायात पुलिस विभिन्न प्रयोगों का उपयोग कर रही है। लेकिन यातायात की व्यवस्था देख ऐसा लगता है कि सभी प्रयोग नाकाम साबित हो रहे है। सामाजिक कार्यकर्ता पं. रोहित उपाध्याय ने बताया कि वर्षो से शहर की यातायात व्यवस्था ध्वस्त है। भोपाल चौराहा से बावडिया तक एबी रोड पर यातायात व्यवस्था सुधारने के लिए विभाग विभिन्न प्रयोग अपना रही है। उसके बावजूद यातायात का दबाव कम होने

का नाम नही ले रहा है। जबकि पहले से अब ज्यादा यातायात बिगड रहा है। एबी रोड पर बस स्टेण्ड, स्टेशन रोड, नगर निगम, सयाजीद्वार आदि जगह पर बैरिकेड्स लगाकर आवागमन बंद कर रखा है। जिससे यातायात सुधरा तो नही, बल्कि दिन में कई बार जाम की स्थिति पैदा हो रहे है। लोग अपने वाहनों को गलग दिशा में ले जा रहे है। वही स्टेशन रोड की ओर से आने वाले लोगों को काफी घूमकर जाना पड रहा है। नवीन यातायात व्यवस्था के कारण दिन में दो से तीन दुर्घटनाएं भी देखने को मिल रही है। बस स्टेण्ड यातायात चौकी के सामने दिनभर जाम की स्थिति रहती है। पं. उपाध्याय ने बताया कि यदि शहर के मुख्य चौराहो पर लगाए गए बैरिकेड्स हटा दिए जाते तो यातायात व्यवस्था काफी सुचारू हो सकती है। विभाग नवीन प्रयोग न करते हुए पुराने रूप में यातायात व्यवस्था निर्मित करे, जिससे आम नागरिकों को भी परेशानी न हो।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे की 02 जोड़ी एक्सप्रेस गाड़ियों में अतिरिक्त एसी-3 इकॉनमी कोच की सुविधा स्थायी रूप से

-अधिकाधिक यात्रियों को उपलब्ध होगी कन्फर्म बर्थ की सुविधा

अनूपपुर/बिलासपुर। रेलवे प्रशासन द्वारा यात्री सुविधाओं में निरंतर वृद्धि करने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। इसी क्रम में यात्रियों की बेहतर यात्रा सुविधा व अधिकाधिक यात्रियों को कन्फर्म बर्थ उपलब्ध कराने हेतु दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे से चलने वाली 02 जोड़ी एक्सप्रेस गाड़ियों में एक अतिरिक्त एसी-3 इकॉनमी कोच की सुविधा स्थायी रूप से उपलब्ध कराई जा रही है। जिसका विवरण इस प्रकार है:-

गाड़ी संख्या 18241/18242 दुर्ग-अम्बिकापुर-दुर्ग एक्सप्रेस में एक अतिरिक्त एसी-3 इकॉनमी कोच की सुविधा दुर्ग से 20 मई 2025 तथा अम्बिकापुर से 21 मई 2025 से स्थायी रूप से उपलब्ध रहेगी।

गाड़ी संख्या 18756/18755 अम्बिकापुर-शहडोल-अम्बिकापुर एक्सप्रेस में एक अतिरिक्त एसी-3 इकॉनमी कोच की सुविधा अम्बिकापुर से 21 मई 2025 तथा शहडोल से 21 मई 2025 से स्थायी रूप से उपलब्ध रहेगी।

11 के.व्ही. अनूपपुर शहर फीडर में 17 व 18 मई को विद्युत आपूर्ति रहेगी अवरुद्ध

अनूपपुर। म.प्र. पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड अनूपपुर के अधीक्षण अभियंता (संचा./संधा.) ने बताया है कि उपसंभाग अनूपपुर अंतर्गत वितरण केन्द्र अनूपपुर (शहर) के 11 के.व्ही. टाउन फीडर का रेलवे ओव्हर ब्रिज अनूपपुर के पास लाइन मेन्टेनेंस एवं लाइन चार्ज का कार्य किया जाएगा। उक्त कार्य के प्रभावी रूप से सम्पादन हेतु 17 व 18 मई को 11 के.व्ही. अनूपपुर शहर फीडर से संबंधित समस्त विद्युत उपभोक्ताओं के यहां प्रातः 7:30 बजे से प्रातः 8:30 बजे तक विद्युत आपूर्ति अवरुद्ध रहेगी। कार्य के अनुसार विद्युत आपूर्ति अवरुद्ध रहने की समयावधि को बढ़ाया या घटाया जा सकता है।

सोनी सब के 'वागले की दुनिया' में सखी फंसी हिट एंड रन केस में

फोटो बागले

मुंबई। सोनी सब का लोकप्रिय शो 'वागले की दुनिया - नई पीढ़ी, नए किस्से' भारतीय मध्यमवर्गीय परिवार की जिंदगियों से जुड़ी जद्दोजहद को

सजीव रूप से दर्शाकर दर्शकों का दिल जीत रहा है। आने वाले एपिसोड्स में सखी (चिन्मयी साल्वी) एक बेहद तनावपूर्ण स्थिति में फंस जाती है, जब सड़क पर रहने वाला बच्चा अचानक उसकी कार के सामने आ जाता है और दुर्घटना हो जाती है। इस हादसे से सखी बेहद घबरा जाती है। बच्चे को तुरंत अस्पताल ले जाया जाता है, लेकिन उसी दौरान हादसे का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो जाता है और बच्चे की माँ सखी के खिलाफ पुलिस में शिकायत दर्ज करवा देती है। आगे आने वाले एपिसोड्स में, वागले परिवार सखी के समर्थन में खड़ा नजर आता है, क्योंकि पुलिस का आरोप है कि हादसे के वक्त सखी ने सिग्नल तोड़ा था। सखी पर हिट एंड रन का मामला दर्ज किया जाता है और पुलिस उसे गिरफ्तार करने पहुँच जाती है। वागले परिवार घायल बच्चे के माता-पिता से बात करता है, इस दौरान सखी ईमानदारी से अपने सभी मेडिकल खर्चे उठाने की पेशकश करती है और यह भी पूछती है कि वह और क्या कर सकती है। लेकिन इसके बाद जो होता है, वह सबको चौंका देता है – बच्चे के माता-पिता सखी से अपने बच्चे के लिए सरोगेट माँ बनने की मांग करते हैं। वे बताते हैं कि वे वर्षों से दूसरा बच्चा पाने की कोशिश कर रहे हैं लेकिन सफल नहीं हो सके, और अगर सखी मान जाती है, तो वे केस वापस ले लेंगे। यह अप्रत्याशित और चौंकाने वाली मांग पूरे वागले परिवार को हिला कर रख देती है।

इसी बीच, अथर्व (शीहान कपाही) अपने तेज़ दिमाग से वायरल वीडियो के हर पहलू का विश्लेषण करता है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि असल में हुआ क्या था।

क्या अथर्व की पड़ताल समय रहते सखी को बचा पाएगी, या फिर सखी को एक असंभव निर्णय लेना पड़ेगा?

शो में राजेश वागले की भूमिका निभा रहे सुमित राघवन ने कहा, 'एक पिता के तौर पर राजेश हमेशा अपने बच्चों की सुरक्षा को लेकर बेहद सतर्क रहता है, खासकर ड्राइविंग जैसी चीज़ों में। जब यह हादसा होता है, तो उसकी पहली प्रतिक्रिया चिंता और अविश्वास की होती है। दिल के किसी कोने में वह जानता है कि सखी इतनी लापरवाह नहीं हो सकती, लेकिन जब पुलिस और सबूत उसके खिलाफ जाते हैं, तो वह भीतर से हिल जाता है। राजेश और वंदना दोनों ही उस छोटे बच्चे की चोट से दुखी हैं और अस्पताल में उसका पूरा ख्याल रखते हैं। साथ ही वे सच्चाई जानने की कोशिश कर रहे हैं कि असल में क्या हुआ था और सखी को इस गंभीर आरोप से कैसे बचाया जाए।'

देखते रहिए 'वागले की दुनिया - नई पीढ़ी, नए किस्से', सोमवार से शनिवार, रात 9:30 बजे सिर्फ सोनी सब पर

यातायात एवं परिवहन विभाग की संयुक्त वाहन चेकिंग

-यात्री बसों के परमिट, फिटनेस, बीमा, प्रदूषण सर्टिफिकेट ड्राइवर कंडक्टर की लाइसेंस, अग्निशमन यंत्र, फास्ट एड बॉक्स एवं प्रेशर हॉर्न किए चेक

(ब्यूरो राजेश शिवहरे)

अनूपपुर। हाल ही में भोपाल में हुई सड़क दुर्घटना को दृष्टिगत रखते हुए, ऐसी घटनाओं के पुनरावृत्ति रोकने के उद्देश्य पुलिस मुख्यालय द्वारा यात्री बसों एवं स्कूली बसों की चेकिंग हेतु 31 मई तक विशेष अभियान चलाया गया है, जिसके तहत आज ट्रैफिक प्रभारी द्वारा बस स्टैंड में वाहन चेकिंग लगाई जाकर 15 यात्री बसों को चेक किया, चेकिंग में मुख्य रूप से बस के आवश्यक दस्तावेज जैसे परमिट,फिटनेस, बीमा, प्रदूषण सर्टिफिकेट, ड्राइवर ,कंडक्टर का लाइसेंस, प्रेशर हॉर्न, अग्निशमन, फास्ट एड बॉक्स आदि की सघन चेकिंग की गई, कमी पाए जाने पर 09 बसों पर चालानी कार्यवाही करते हुए 4500 का समन शुल्क वसूल किया गया। बसों में लगे प्रेशर हॉर्न निकलवाए जाकर चालानी कार्यवाही की गई। वाहन चेकिंग में जिला परिवहन अधिकारी सुरेंद्र सिंह गौतम, जिला यातायात प्रभारी ज्योति दुबे सहायक उप निरीक्षक बृजेश सिंह चौहान आरक्षक योगेंद्र सिंह योगेंद्र शर्मा ,गणेश यादव ओमप्रकाश प्रजापति एवं प्रधान आरक्षक विष्णु तिवारी उपस्थित रहे।

नागरिक सुरक्षा के तहत होमगार्ड एवं एस.डी.ई.आर.एफ. की टीम द्वारा दिया गया प्रशिक्षण

अनूपपुर। कलेक्टर हर्षल पंचोली के निर्देशन में नागरिक सुरक्षा के तहत शासकीय तुलसी महाविद्यालय अनूपपुर में गुरूवार को होमगार्ड एवं एस.डी.ई.आर.एफ. की टीम द्वारा सिविल डिफेन्स वॉलेन्टियर्स को प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान नागरिक सुरक्षा एवं 12 सेवाएं, हवाई हमले चेतावनी एवं सायरन व ब्लैक आउट के दौरान की कार्यवाही,अग्नि आपदा तथा प्रथमोपचार के अंतर्गत सीपीआर,पट्टी ड्रेसिंग आदि के संबंध में प्रशिक्षणार्थियों को मॉक ड्रिल अभ्यास कराया गया। इस अवसर पर होमगार्ड जिला सेनानी अजय सिंह कश्यप, प्लाटून कमाण्डर रामनरेश भवेदी, प्राचार्य शासकीय तुलसी महाविद्यालय अनूपपुर डॉ. अनिल सक्सेना, एस.डी.ई.आर.एफ. की टीम के सदस्य, महाविद्यालय के स्टॉफ, विद्यार्थीगण उपस्थित रहे।

कलेक्टर श्रीमती चौहान ने गोपाचल पर्वत का किया अवलोकन

ग्वालियर । कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने गोपाचल पर्वत का अवलोकन किया एवं जैन समाज की स्थापित प्रतिमाओं के दर्शन भी किए। ग्वालियर का गोपाचल पर्वत धार्मिक दृष्टि से बहुत ही प्रसिद्ध स्थान है। यह स्थान धार्मिक पर्यटन की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। गोपाचल पर्वत पर देश भर के लोग पधारते हैं। कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने भ्रमण के दौरान गोपाचल पर्वत पर पर्यावरण संरक्षण के लिये किए गए वृक्षारोपण कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की। कलेक्टर श्रीमती चौहान ने गोपाचल पर्वत पर स्थित जैन प्रतिमाओं का अवलोकन भी किया। इसके साथ ही गोपाचल पर्वत पर किए गए सघन वृक्षारोपण कार्य को भी देखा। उन्होंने कहा कि ग्वालियर में जिस प्रकार गोपाचल पर्वत पर वृक्षारोपण कर हरियाली की गई है। इसी प्रकार की हरियाली शहर की अन्य पहाड़ियों पर भी की जायेगी। हरि पर्वत एवं आनंद वन के रूप में समाज के सभी वर्गों को साथ में लेकर वृक्षारोपण का कार्य किया जा रहा है। कलेक्टर के साथ समाजसेवी अजीत बरैया एवं पर्यटन विभाग के अधीक्षण यंत्री राजीव श्रीवास्तव भी उपस्थित थे।

ब्रह्मलीन संत दद्दाजी की पुण्यतिथि पर अम्बाह में होगा दो दिवसीय भव्य धार्मिक आयोजन

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/अम्बाह। अनंत श्री विभूषित ब्रह्मलीन संत पंडित देव प्रभाकर शास्त्री (दद्दाजी) की पुण्यतिथि के पावन अवसर पर अश्वबाह बरेह शिष्य परिवार एवं भक्तमंडल द्वारा दो दिवसीय भव्य धार्मिक आयोजन किया जा रहा है। यह आयोजन आज शनिवार 17 मई से प्रारंभ हो रहा है, जिसमें श्रद्धालुओं की भारी उपस्थिति रहने की संभावना है।

आज का कार्यक्रम (17 मई)

आयोजन की शुरुआत शनिवार सुबह 8 बजे, किला स्थित हनुमानजी मंदिर पर रामचरितमानस पाठ के साथ होगी। दिन भर धार्मिक वातावरण में भजन संध्या का आयोजन भी किया जाएगा, जिसमें भक्ति गीतों और भजनों से वातावरण गुंजायमान होगा।

कल का कार्यक्रम (18 मई)

रविवार को प्रातः 7 बजे से असंख्य पार्थिव शिवलिंग निर्माण की भव्य शुरुआत होगी, जिसमें श्रद्धालु सहभागिता करेंगे। इसके बाद

धार्मिक आयोजन के साथ सामाजिक समरसता

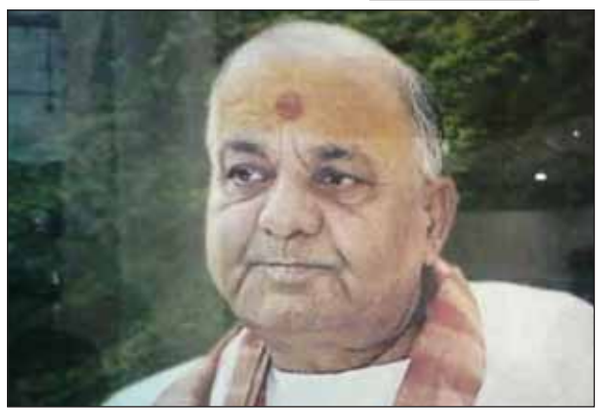

महामृत्युंजय जाप, महारुद्राभिषेक, हवन-पूजन, हनुमान चालीसा, और सुंदरकांड पाठ सम्पन्न होगा। इस पावन अवसर पर पूरे विधि-विधान के साथ दद्दाजी की महाआरती का आयोजन किया जाएगा।

पूजा-पाठ के बाद कन्या भोज और संत प्रसादी का आयोजन होगा, जिसमें सभी श्रद्धालुओं को भोजन कराया जाएगा। यह आयोजन श्रद्धा और भक्ति के साथ सामाजिक समरसता और सेवा भाव का भी परिचायक होगा।

भजन और सत्कर्मों से बढ़ती है आयु : कौशिक महाराज

ग्वालियर। भजन एवं सत्कर्मों से न सिर्फ परलोक सुधरता है, बल्कि आयु भी बढ़ जाती है। इसके साथ योग, प्राणायाम, जप,जप और दान से भी व्यक्ति की आयु बढती है। कलयुग में व्यक्ति के कुकर्मों की वजह से उसकी उम्र घट रही है। यह विचार पुराण मनीषी कौशिक महाराज ने फूलबाग शिवलोक धाम में शिवमहापुराण की कथा के दूसरे दिन शुक्रवार को व्यक्त किए। विधायक एवं कथा संयोजक सतीश सिंह सिकरवार ने कथा शुभारंभ अवसर पर व्यासपीठ का पूजन किया। विश्व जागरण मानव सेवा संघ द्वारा आयोजित शिवकथा महिमा का बखान करते हुए कौशिक महाराज ने कहा कि जिस घर में भगवान शिव की आराधना होती है, वहां किसी से बैर भाव नहीं होता है। जो जितनी दूर से कथा सुनने आता है, उसे उतना अधिक पुण्यफल प्राप्त होता है। शिवकथा सुनने से वंशवृद्धि बढ़ती है।

उन्होंने बताया कि जिस नारी के पति नहीं होता है, भूलकर भी उसका अपमान नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से सारे पुण्य क्षीण हो जाते हैं। किसी ग्रंथ में नहीं लिखा कि विधवा स्त्री बेटी का कन्यादान नहीं कर सकती है। वो साध्वी का जीवन जीती है, उसे परेशान न करें बल्कि उसका संबल बने। कौशिक महाराज ने बताया कि गर्भकाल में पति-पत्नी की जैसी भावना होती है, वैसी ही संतान उत्पन्न होती है। अच्छी संतान के लिए सात्विक जीवन निवर्हन करना होता है। जमीन पर सोए। सूतक वाले घर में न जाएं। संयमित रहें। जहां वासना हैं, वहां अच्छी संतान पैदा नहीं हो सकती है। ईश्वर से जुड़कर जो संतान आएगी, वो गणेश की तरह होगी। कौशिक महाराज ने कहा कि संपदा और संतान व्यक्ति को अभिमानी और अनाचारी बना देती हैं। रावण के पास लाखों संतान और अकूट संपदा थी जिसकी वजह से वह अंहकारी हो गया और उसका नाश हो गया। मौत से दो दिन पहले भी व्यक्ति भगवान का भजन कर ले तो उसके सारे पाप कट जाते हैं, लेकिन माया मौत का अहसास नहीं होने देती और जिसकी वजह से व्यक्ति बिना भजन किए ही संसार से विदा हो जाता है। इस मौके पर आदित्य सिंह सिकरवार गोंची, कांग्रेस नेता प्रेमसिंह यादव, शिक्षक केपी सिंह भदौरिया, कथा परीक्षत नरेंद्र शर्मा, मनीष शर्मा, उमेश उप्पल, राम पांडे, रामबाबू अग्रवाल, दिनेश पाराशर सहित हजारों श्रद्धालु श्रोता मौजूद थे।

सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविज़न के 'चक्रवर्ती सम्राट पृथ्वीराज चौहान' में चंद बरदाई बनकर आशुतोष राणा सुना रहे हैं अपने मित्र और भारत के वीर सम्राट की गौरवगाथा

मुंबई। सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविज़न गर्व के साथ प्रस्तुत कर रहा है अपना आगामी ऐतिहासिक धारावाहिक जीवंत करता है, जिसकी विरासत आज भी इतिहास के पन्नों में गूँजती है।

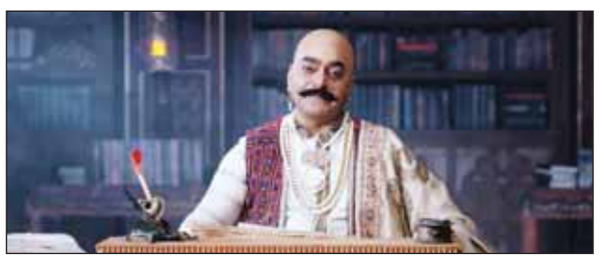

चक्रवर्ती सम्राट पृथ्वीराज चौहान, जो एक ऐसे युवा राजकुमार की अद्भुत यात्रा को दर्शाता है, जिसने असाधारण पराक्रम और बुद्धिमत्ता से भारत के इतिहास में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में दर्ज कराया। यह भव्य गाथा पृथ्वीराज चौहान के प्रारंभिक जीवन, उनके सामने आई चुनौतियों और उन्हें पार करने के उनके साहस, विवेक और अदम्य उत्साह को प्रभावशाली रूप से चित्रित करती है। बचपन से लेकर उनके शासन की निर्णायक लड़ाइयों तक, यह शो एक ऐसे वीर सम्राट की प्रेरणादायक कहानी को इस ऐतिहासिक कहानी में प्रसिद्ध अभिनेता आशुतोष राणा गहराई जोड़ने का काम कर रहे हैं, जो पृथ्वीराज चौहान के परम मित्र चंद बरदाई की भूमिका में अपने प्रभावशाली स्वर से कथा को स्वर देंगे। अपनी सशक्त आवाज़ और गूँजते संवादों के लिए अलग पहचान रखने वाले राणा दर्शकों को इस ऐतिहासिक यात्रा से भावनात्मक रूप से जोड़ेंगे और उन्हें उस युग की गहराइयों में ले जाएँगे। उनका यह स्वरूप कथा में गंभीरता, प्रामाणिकता और गौरव का भाव लेकर आएगा।

इस शो से जुड़ने को लेकर अपने विचार साझा करते हुए आशुतोष राणा ने कहा, 'इस महान ऐतिहासिक गाथा का नैरेटर बनना मेरे लिए अत्यंत गर्व और आनंद का विषय है। बचपन में मैंने पृथ्वीराज चौहान की वीरता, बुद्धिमत्ता और अद्वितीय साहस की कई कहानियाँ सुनी थीं, जिन्होंने मुझ पर हमेशा-हमेशा के लिए गहरा प्रभाव छोड़ा है। अब उसी महापुरुष की कथा का हिस्सा बनना मेरे लिए अत्यंत विशेष अनुभव है। एक अभिनेता के रूप में, मैं हमेशा ही यह मानता हूँ कि आवाज़ में अपार शक्ति होती है। इस नैरेशन के माध्यम से मैं इस कहानी में गरिमा, गंभीरता और भावनात्मक गहराई लाने का प्रयास करूँगा। मेरे भीतर जो भावनाएँ हैं, वो शक्ति, सम्मान और समर्पण से भरी हैं, और ये ही इस शो की आत्मा से मेल खाती हैं।'

देखिए चक्रवर्ती सम्राट पृथ्वीराज चौहान, 04 जून से, हर सोमवार से शुक्रवार, शाम 7:30 बजे, सिर्फ सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविज़न और सोनीलिव पर

बिना परमिट के वाहनों से वसूला एक लाख 68 हजार का जुर्माना

ग्वालियर। जिले में बगैर परमिट व फिटनेस के चल रहे वाहनों के खिलाफ कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान के निर्देश पर विशेष मुहिम जारी है। मुहिम के चौथे दिन शुक्रवार को राजस्व, यातायात पुलिस एवं परिवहन विभाग की संयुक्त टीम द्वारा ओवर लोडेड व डिजिट नम्बर प्लेट न पाए जाने पर 14 यात्री ध् स्कूली वाहनों से एक लाख 68 हजार रूपए का जुर्माना वसूला गया। जिले में पिछले चार दिनों से जारी इस मुहिम के तहत अब तक 51 वाहनों से 2 लाख 83 हजार रूपए का जुर्माना वसूला जा चुका है। साथ ही बगैर फिटनेस व परमिट के मिले 14 वाहन जब्त कर पुलिस अभिरक्षा में खड़े कराए गए हैं। इन वाहनों के खिलाफ मोटर व्हीकल एक्ट के प्रावधानों के तहत भी कार्रवाई प्रस्तावित की गई है। शुक्रवार को संयुक्त टीम ने ग्वालियर शहर में गोला का मंदिर चौराहा व विक्की फैक्ट्री चौराहे पर चौकिंग प्वॉइंट लगाकर वाहनों की जाँच की। इस संयुक्त टीम में उप पुलिस अधीक्षक यातायात नरेश अन्नौटिया, तहसीलदार कुलदीप दुबे, नायब तहसीलदार संजय अगरैया तथा यातायात प्रभारी पूर्व क्षेत्र अभिषेक रघुवंशी व परिवहन निरीक्षक प्रदीप नाहर सहित अन्य अधिकारी-कर्मचारी शामिल थे।

बानमोर पुलिस ने कार से पकड़ी 24 पेटी अवैध देशी शराब

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। पुलिस अधीक्षक द्वारा अवैध मादक पदार्थों-शराब की तस्करी एवं बिक्री करने वालों एवं अवैध शराब के कारोबार में लिप्त व्यक्तियों को चिन्हित कर उनके विरूद्ध प्रभावी कार्यवाही करने हेतु संपूर्ण मुरैना जिले में विशेष अभियान संचालित कराया जा रहा है। उक्त अभियान के तारतम्य में अति. पुलिस अधीक्षक सुरेन्द्र पाल सिंह डावर के निर्देशन एवं प्रभारी एसडीओपी बानमोर श्रीमती बिन्दु परमार के मार्गदर्शन में थाना बानमोर पुलिस द्वारा 24 पेटी अवैध देशी शराब मय टोयटा ग्लेंजा कार कुल कीमती 7,96,000 /- रुपये का जब्त किया गया।

दिनांक 15.05.2025 को निरीक्षक अमित सिंह भदौरिया थाना प्रभारी बानमोर हमराह फोर्स को जरिए मुखबिर सूचना प्राप्त हुई कि बुध्दीपुरा गांव जाने वाले रास्ते से कार के माध्यम से अवैध शराब तस्करी हेतु ले जाई जा रही है। मुखबिर की उक्त सूचना पर त्वरित कार्यवाही करते हुए थाना बानमोर पुलिस द्वारा मुखबिर द्वारा बताये स्थान पर चैकिंग लगाई गई, चैकिंग के दौरान सामने से एक सफेद रंग की टोयोटा कार आती दिखी, जिसे हमराह फोर्स की मदद से घेर कर रोका गया परंतु कार का चालक आरोपी अंधेरे का फायदा उठाकर भाग गया, जिसके बाद कार की तलाशी ली गई तो कार की डिग्गी में से 12 पेटी देशी मदिरा प्लेन, 12 पेटी देशी मसाला कुल 24 पेटी शराब कीमती 96,000/- रुपये की रखी मिली।

उक्त शराब के संबंध में कोई दस्तावेज आदि उपलब्ध न होने के कारण उक्त 24 पेटी अवैध शराब कीमती 96000/- रूपये एवं ग्लेंजा कार कीमती 7,00,000/- रुपये कुल मशरुका कीमती 7,96,000 /- रुपये को जप्त किया गया। बाद थाना वापसी पर अज्ञात आरोपियों के विरूद्ध अपराध क्रमांक- 119/25 धारा 34(2) आबकारी अधिनियम का पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया।

आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिका के जिला स्तरीय दावे-आपत्तियों के निराकरण की बैठक 21 मई को

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। आंगनबाड़ी,मिनी कार्यकर्ता, सहायिका के दावे-आपत्तियों के निराकरण संबंधी जिला स्तरीय बैठक 21 मई को दोपहर 12 बजे जिला पंचायत के सभागार में आयोजित की गई है।

जिला कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती उपासना राय ने बताया कि आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, मिनी कार्यकर्ता, सहायिका के प्राप्त आवेदनों पर दावे-आपत्तियों के संबंध में निराकरण हेतु बैठक आयोजित की गई है। बैठक में अध्यक्ष सीईओ जिला पंचायत होंगे। जबकि सदस्य के रूप में कलेक्टर द्वारा नामांकित सदस्य डिप्टी कलेक्टर श्रीमती प्रतिज्ञा शर्मा, अध्यक्ष स्वास्थ्य एवं महिला बाल विकास समिति श्रीमती गिरिजा देवी, जिला पंचायत अध्यक्ष द्वारा नामांकित सदस्य श्रीमती रेश्मा कुशवाह और संबंधित परियोजनाओं के परियोजना अधिकारी मौजूद रहेंगे।

बाल संस्कार शिविर में बच्चों को संगीत गायन व नृत्य का अभ्यास कराया गया

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। भारत विकास परिषद शाखा एवं जैन इंटरनेशनल स्कूल के संयुक्त तत्वधान में 10 मई से 25 मई तक 15 दिवसीय बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया किया जा रहा है। सातवें दिवस सर्वप्रथम गीता अध्ययन, योग, व्यायाम, राष्ट्रीय गीत, वक्तव्य, ताइकांडो, आर्ट एंड क्राफ्ट, संगीत गायन, नृत्य का अभ्यास कराया गया। इस कार्यक्रम का संचालन आसाराम प्रजापति के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में प्रशांत आचार्य जी द्वारा बच्चों को इस संस्कृत श्लोक ''अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोंपसेविनः चत्वारी तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम)।''

के द्वारा संस्कार से लेकर कैसे हमें आयु ,विद्या, यश और बल प्राप्त हो।यह सभी बाते हमारे शिविर में आए भईया बहनों को बताई।

बाल संस्कार शिविर में विजिट अतिथि के रूप में डॉ. देवेंद्र तोमर (अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष, विश्व साहित्य सेवा संस्थान) एवं राकेश रुस्तम सिंह (संयोजक, सामाजिक समरसता मंच मुरैना) उपस्थित रहे। दोनों के द्वारा बच्चों का मार्गदर्शन किया गया।

इस सत्र में प्रांतीय अध्यक्ष अमित जैन, अध्यक्ष अर्चना शर्मा, सचिव रजनी गुप्ता, कोषाध्यक्ष वीणा मोदी, (महिला सहभागिता प्रमुख) शुभा कोठरी, अंजू त्रिवेदी, शिवानी शर्मा, (संस्कार प्रमुख) गौरव मोदी,, आनंद त्रिवेदी, राजकुमार तोमर, ओम मोदानी, पवन शर्मा, अतुल महेश्वरी (श्रीजी), बालकृष्ण शर्मा, सौरव अग्रवाल, नीरज मोदी अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

छात्रा के साथ आपत्तिजनक हरकत करते कैमरे में कैद हुआ ग्ल्र्स कॉलेज में पदस्थ शिक्षक

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद मुरैना इकाई द्वारा गर्ल्स कॉलेज की प्राचार्य को ज्ञापन दिया गया, जिसमें कॉलेज में पदस्थ प्रयोगशाला सहायक शिक्षक अमित शर्मा का एक छात्रा के साथ कॉलेज परिसर का ही आपत्तिजनक हालत का वीडियो वायरल हुआ। विद्यार्थी परिषद ने प्राचार्य को तत्काल प्रभाव से ज्ञापन दिया और उस शिक्षक को निलंबित करने एवं उसे पर कठोर कार्रवाई करने की मांग की गई। सत्यादित्य तोमर ने बताया कि एक शिक्षक अपनी छात्रा के साथ ही कुकर्म किया और साथ ही गुरु और शिष्य के संबंध को तार-तार कर दिया, साथ ही शासकीय कन्या अग्रण महाविद्यालय को कलंकित भी कर दिया। जिले भर में छात्रों के लिए सिर्फ एक ही महाविद्यालय है, उसमें भी शिक्षक के द्वारा छात्र के साथ जो कुकर्म किया जा रहा है वह बहुत गलत है। इसका सीधा असर पालकों और वहां पढ़ने आने वाली छात्राओं पर पड़ेगा और पालक अपनी बच्चियों को उस महाविद्यालय में पढ़ने के लिए नहीं भेजेंगे। साथ ही जो छात्राएं पढ़ना चाहती हैं वह भी कहीं ना कहीं ऐसे शिक्षकों की वजह से पढ़ने से भी वंचित रहेंगे। विद्यार्थी परिषद ने कॉलेज प्राचार्य भारती शुक्ल से कहा कि शिक्षक अमित शर्मा को तत्काल प्रभाव से निलंबित किया जाए अन्यथा विद्यार्थी परिषद पूरे जिले भर में उग्र आंदोलन करेगी, जिसकी जिम्मेदारी कॉलेज प्रशासन की होगी।

सिविल डिफेंस वॉलंटियर्स को नागरिक सुरक्षा एवं आपदा प्रबंधन का एक दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न

आपदा के समय घर में जो भी उपलब्ध सामग्री से बचने के उपाय बताये

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। देश की बदलती आंतरिक एवं बाह्य परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए कलेक्टर अंकित अस्थाना एवं डिस्ट्रिक्ट कमांडेंट श्रीमती सुमन लिटोरिया के मार्गदर्शन में शुक्रवार को नगर निगम मुरैना के सभागार में प्रशिक्षण सिविल डिफेंस वॉलेंटियर्स के लिए दो पालियों में दिया गया। जिसमें प्रथम पाली में ग्रामीण क्षेत्र एवं द्वितीय पाली में नगरीय क्षेत्र के वॉलेंटियर्स को एसडीआरएफएवं होमगार्ड की टीम के द्वारा दिया गया।

प्रशिक्षण में स्टेट डिजास्टर इमरजेंसी रिस्पॉन्स फोर्स की टीम द्वारा आपदा प्रबंधन, नागरिक सुरक्षा, प्राथमिक उपचार, हवाई हमले के बाद राहत एवं बचाव तथा ब्लैकआउट की जानकारी, इमरजेंसी रेस्क्यू मेथड्स, प्रथमोपचार, अग्नि आपदा प्रबंधन आदि का प्रशिक्षण दिया गया। सिविल डिफेंस वॉलंटियर्स को आपदा एवं संकट की घड़ी में तत्पर, जागरूक एवं सक्षम बनाना है, ताकि वे समाज की सेवा में प्रभावी भूमिका निभा सकें। प्रशिक्षण के दौरान दोंनो पालियों में लगभग 350 वॉलेटियर्स ने भाग लिया।

जाटव महापंचायत में मृत्युभोज नहीं करने का निर्णय हुआ

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। शुक्रवार को ग्राम रजेई का पुरा में जाटव महापंचायत के सभी सदस्यगण बारेलाल बाजोरिया की माताजी श्रीमती भागवती जी की मृत्यु हो जाने पर समाज में व्याप्त कुरीतियों, मृत्युभोज बन्द कराने, जैसा कि दिनांक 04.05.25 जाटव महापंचायत के निर्णय अनुसार जो सभी उपस्थित, समाज के बन्धुओं द्वारा संकल्प लिया कि मृत्यु होने पर कोई भी व्यक्ति मृत्युभोज नहीं करेगा एवं न मृत्यु भोज में खाना खायेंगें इसी संकल्प की पूर्ण करने हेतु जाटव महापंचायत के सभी सदस्यगण उपस्थित होकर के संकल्प करते है।

भविष्य में इसी तरह की कुरीतियों को बंद करने का प्रण लेते हैं। इसी बात पर ग्राम के सभी सदस्यगण उपस्थित होकर जाटव महापंचायत के सदस्यों के समक्ष बारेलाल की माताजी का मृत्यु भोज न करने का निर्णय लिया गया है। जिसमें लगभग 2500 लोगों का खाना होना था, उसको सीमित कर कन्या भोज 100 लोगों तक सीमित किया है, जिससे समाज की आर्थिक हानि न हों।

इस अवसर पर एड. रामहेत पिप्पल, विनोद जोनवार, नीरज चंदसोरिया, जवरसिंह दिनकर, राकेश सोलंकी, रामवीर फौजी, नरेंद्र पिप्पल, नवीन जी, हरिनारायण, रामअवतार, गजेंद्र, जगदीश, गिरवर, रमेश बाजोरिया, सनी, रितेश, बारेलाल, हेमराज, राहुल, जसराथ, अमित आदि लोग उपस्थित थे।

कार्यालय नगर पालिका परिषद, जौरा, जिला-मुरैना (म.प्र.)

क्रमांक- 1397 दिनांक- 16.05.2025

ऑनलाइन निविदा आमंत्रण सूचना (तृतीय)

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि नगर पालिका परिषद जौरा, मुरैना सीमान्तर्गत वित्तीय वर्ष 2025-26 से 2027-28 (01 जून 2025 से 31 मार्च 2028 (34 माह) की अवधि हेतु होर्डिंग विज्ञापन वसूली ठेके पर दिये जाने हेतु ऑनलाइन निविदा उच्चतम ऑफर (प्रस्ताव) ई-निविदा वेबसाइट www.mptenders.gov.in पर आमंत्रित की जाती है। इच्छुक विज्ञापन एजेंसियों जिनका कारोबार 10.00 लाख से अधिक हो उक्त विज्ञापन ठेका हेतु ऑनलाइन निविदायें दिनांक- 28.05.2025 तक प्रस्तुत कर सकते हैं:-

क्र.	वसूली कार्य का मद	ऑनलाइन टेण्डर आई.डी.	वसूली ठेका का शासकीय ऑफर प्रीमियम राशि	ठेका की अमानत राशि	निविदा ऑफर प्रपत्र मूल्य
1.	होर्डिंग विज्ञापन बोर्ड	2025_UAD_423919_1	5,76,584=00	57,658=00	2,000

नोटः- शर्तें-

1. वसूली ठेका विज्ञप्ति संबंधित समस्त नियम एवं शर्तें ऑनलाइन वेबसाइट www.mptenders.gov.in पर देखी जा सकती हैं।

(अखिल माहेश्वरी)
अध्यक्ष
नगर पालिका परिषद जौरा, मुरैना

(वीरेंद्र रावत)
मुख्य नगर पालिका अधिकारी
नगर पालिका परिषद जौरा,

आम सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम दतहरा तह. व जिला मुरैना में कृषि भूमि सर्वे क्र. 417 रकवा 0.65 आरे, सर्वे क्र. 491 रकवा 0.29 आरे, सर्वे क्र. 426 रकवा 0.29 आरे, सर्वे क्र. 427 रकवा 0.26 आरे, सर्वे क्र. 442 रकवा 0.28 आरे, सर्वे क्र. 443 रकवा 0.29 आरे, सर्वे क्र. 487 रकवा 0.27 आरे, सर्वे क्र. 577 रकवा 0.11 आरे के संबंध में मेरे व्यवहारी पूरन सिंह कुशवाह पुत्र श्री मंगल सिंह कुशवाह निवासी ग्राम दतहरा तह. व जिला मुरैना म.प्र. द्वारा शीलावाई पुत्री रामकिशन पत्नी श्री रामेश्वर निवासी-ग्राम जगतपुर तह. व जिला मुरैना एवं रामाबाई पत्नी रामकिशन पत्नी केवल सिंह निवासी ग्राम उमरियापुरा तह. अम्वाह जिला मुरैना के विरूद्ध अपील न्यायालय श्रीमान अनुविभागीय अधिकारी मुरैना के समक्ष प्रस्तुत की है। जिसमें दिनांक 28.03.2025 को आदेश पारित कर स्थगन आदेश दिया है। इस प्रकार उक्त कृषि भूमियां विवादित है। इस कारण कोई भी व्यक्ति उक्त भूमियों को शीलावाई व रामावाई से क्रय न करें, यदि कोई अंतरण किया जाता है तो मेरे व्यवहारी के स्वत्वों के मुकाबले शून्य व निष्प्रभावी होगा।

दिनांक- 16.05.2025

सूचनाकर्ता
श्रीनिवास शर्मा एडवोकेट
जिला न्यायालय परिसर, मुरैना म.प्र.

अम्बाह शाखा नहर की आर.डी. 10532 मी. पर जंगल सफाई का कार्य किया

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। जल संसाधन संभाग मुरैना के अधीनस्थ जल संसाधन ए.बी सी. उपसंभाग क्र. 1 सबलगढ़ के अमीन सोनबीर सिंह भदौरिया, श्री लिजो एवं श्याम बाथम कण्डेक्टर तथा अन्य विभागीय मैदानी कर्मचारियों द्वारा 15मई 2025 को जल गंगा संवर्धन अभियान-2025 के अंतर्गत अम्बाह शाखा नहर की आर.डी. 10532 मी. पर जंगल सफाई का कार्य जन भागीदारी/जन सहयोग से किया गया। कार्यक्रम में गणमान्य नागरिकों ने विभागीय मैदानी कर्मचारियों के साथ श्रमदान किया।

कार्यालय नायब तहसीलदार तहसील व जिला मुरैना म.प्र.

प्रकरण क्रमांक 0393/अ6/2024-25 ग्राम- पिपरसा

दिनांक- 16.05.2025

//इश्तहार//

एतद् द्वारा आम जनता ग्राम पिपरसा को सूचित किया जाता है कि आवेदक राकेश सिंह गुर्जर पुत्र श्री रामओतार सिंह जाति गुर्जर निवासी- पिपरसा तहसील व जिला मुरैना म.प्र. द्वारा मौजा पिपरसा स्थित भूमि सर्वे क्र. 0389 रकवा 0.523 हे. सर्वे क्र. 433 रकवा 0.4080 हे. का स्वत्व हेतु न्यायालय में वाद दायर किया था, जिसका प्रकरण क्रमांक 0393/अ6/2024-25 है। उक्त प्रकरण माननीय न्यायालय अमोल सांघी, प्रथम व्यवहार न्यायालय कनिष्ठ खण्ड के अतिरिक्त षष्ठम न्यायाधीश, मुरैना, जिला मुरैना (म.प्र.) के डिक्री के आधार पर स्वीकृत होकर अभिलेख में अमल कराने हेतु आवेदन पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत हुआ है।

उक्त संबंध में अनावेदक रामअख्यार पुत्र देवलाल जाटव, बदले पुत्र फेरन, इंदर पुत्र आशा जाटव समस्त जाति जाटव निवासीगण इमलिया तथा सर्व साधारण आम जनता को सूचित किया जाता है कि प्रकरण के संबंध में कोई भी हितबद्ध व्यक्ति दिनांक- 30.05.2025 को 11 बजे स्थान- मुरैना में इस न्यायालय के समक्ष स्वयं या अपने अधिवक्ता जिसे सम्यक रूप से अनुदेश दिये गये हों, या वैध प्रतिनिधि के द्वारा उपस्थित होकर उक्त प्रकरण के संबंध में अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर सकता है। नियत दिनांक के वाद प्राप्त आपत्तियों पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।

यह इश्तहार आज दिनांक- 16.05.2025 को मेरे हस्ताक्षर व न्यायालय की पदमुद्रा से जारी किया गया है।

नायब तहसीलदार
वृत्त मृगपुरा
परगना व जिला मुरैना म.प्र.

कार्यालय कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण विभाग संभाग मुरैना

सूबात रोड, मुरैना (म.प्र.)

क्रमांक 1722-1723 / निविदा/नि.सू.क्र. 03/2025-26 मुरैना दिनांक 09-05-2025

निविदा विज्ञप्ति

मध्यप्रदेश लोक निर्माण विभाग में केन्द्रीकृत पंजीयन प्रणाली के अन्तर्गत पंजीकृत ठेकेदारों से मध्यप्रदेश के राज्यपाल की ओर से निम्नलिखित कार्यों हेतु भवन कार्यों की दर अनुसूची प्रभावशील दिनांक 01.01.2024 पर निविदा आमंत्रण सूचना जारी होने के दिनांक तक समस्त संशोधनों सहित ई-टेंण्डरिंग पद्धिति द्वारा ऑनलाइन निविदाऐं अपेन्डिक्स 2.10 में निहित शर्तों के अनुरूप आमंत्रित की जाती हैं, जिसकी विस्तृत निविदा सूचना एवं कार्यो का विवरण वेब-साइट **http://mptenders.gov.in** पर देखी जा सकती है। वेब-साइट पर होने वाली तकनीकी समस्याओं हेतु विभाग जिम्मेदार नहीं होगा।

टेण्डर आई.डी. क्र.	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (रूपयों में)	अर्नेस्ट मनी डिपोजिट (रूपयों में)	निविदा प्रपत्र का मूल्य (रू.)	कार्य पूर्ण करने की अवधि
1	2	3	4	5	6
2025_PWDRB_422546	ले.नि.वि. संभाग मुरैना के अन्तर्गत रिपेयर एण्ड मेंटीनेंस कार्य आर.बी. एण्ड एन.आर.बी. कार्य	9000000.00 (नब्बे लाख)	90000/-	10000.00 + Portal Charges	31.03.26 तक
2025_PWDRB_422547	ले.नि.वि. उपसंभाग मुरैना के अन्तर्गत रिपेयर एण्ड मेंटीनेंस कार्य आर.बी. एण्ड एन.आर.बी. कार्य	5000000.00 (पचास लाख)	50000/-	5000.00 + Portal Charges	31.03.26 तक
2025_PWDRB_422548	ले.नि.वि. उपसंभाग सबलगढ़ के अन्तर्गत रिपेयर एण्ड मेंटीनेंस कार्य आर.बी. एण्ड एन.आर.बी. कार्य	5000000.00 (पचास लाख)	50000/-	5000.00 + Portal Charges	31.03.26 तक
2025_PWDRB_422549	ले.नि.वि. उपसंभाग अम्बाह के अन्तर्गत रिपेयर एण्ड मेंटीनेंस कार्य आर.बी. एण्ड एन.आर.बी. कार्य	5000000.00 (पचास लाख)	50000/-	5000.00 + Portal Charges	31.03.26 तक
	योग-04 कार्य	24000000.00 (दो करोड़ चालीस लाख)			

1. ऑन लाइन टेण्डर पब्लिश दिनांक – 15.05.2025 समय 10:30 बजे
2. निविदा प्रपत्र डाउनलोड/विक्रय प्रारंभ दिनांक – 15.05.2025 समय 10:30 बजे से
3. निविदा प्रपत्र डाउनलोड/विक्रय अंतिम दिनांक – 30.05.2025 समय 17:30 बजे तक
4. ऑन लाईन बिड सबमिशन का प्रारंभ दिनांक – 15.05.2025 समय 10:30 बजे सक
5. ऑन लाईन बिड सबमिशन का अंतिम दिनांक – 30.05.2025 समय 17:30 बजे तक
6. बिड ओपनिंग दिनांक – 31.05.2025 समय 10:30 बजे

a. अनुबंध के पूर्व एवं अनुबंध अवधि में लेवर पंजीयन करना अनिवार्य होगा, निविदा की वैधता अवधि 120 दिवस होगी।
b. निविदा संबंधी संशोधन उसी टेण्डर में ऑन लाईन देखे जा सकेंगे, अतिरिक्त प्रेस नोट नहीं निकाला जावेगा।
c. सक्षम अधिकारी को निविदा को बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार सुरक्षित होगा।
d. संबंधित मद में आवंटन उपलब्ध होने पर ही भुगतान हो सकेगा।
e. निविदाऐं ऑन-लाईन ही प्रस्तुत की जावें, भौतिक रूप से कोई भी दस्तावेज स्वीकार नहीं किया जावेगा।
f. शासन द्वारा समय-समय पर जारी समस्त नियम एवं संशोधन प्रभावशील होंगे।
g. निविदा के साथ संलग्न शिड्यूल में दर्शाये गये आयटमों के अतिरिक्त प्रचलित एस.ओ.आर. के समस्त आयटम के कार्य सम्मिलित माने जावेंगे।

उपरोक्त वेब-साइट ऑन लाइन भुगतान करने के उपरान्त निविदा प्रपत्र (टेंडर डॉक्यूमेंट) वेब-साइट के माध्यम से प्राप्त हो सकेंगे। विस्तृत एन.आई.टी. एवं अन्य जानकारी उपरोक्त वेब-साइट में देखी जा सकती है।

(अन्वेश प्रताप सिंह)
कार्यपालन यंत्री
लोक निर्माण विभाग संभाग मुरैना
फोन नं. 07532-226361

G12902/25

कार्यालय कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण विभाग संभाग मुरैना

सूबात रोड, मुरैना (म.प्र.)

क्रमांक 1720-1721 / निविदा/नि.सू.क्र. 02/2025-26 मुरैना दिनांक 09-05-2025

निविदा विज्ञप्ति

मध्यप्रदेश लोक निर्माण विभाग में केन्द्रीकृत पंजीयन प्रणाली के अन्तर्गत पंजीकृत ठेकेदारों से मध्यप्रदेश के राज्यपाल की ओर से निम्नलिखित कार्यों हेतु सड़क एवं पुल कार्यों की दर अनुसूची प्रभावशील दिनांक 11.04.2025 पर निविदा आमंत्रण सूचना जारी होने के दिनांक तक समस्त संशोधनों सहित ई-टेंण्डरिंग पद्धिति द्वारा ऑनलाइन निविदाऐं अपेन्डिक्स 2.10 में निहित शर्तों के अनुरूप आमंत्रित की जाती हैं, जिसकी विस्तृत निविदा सूचना एवं कार्यों का विवरण वेब-साइट **http://mptenders.gov.in** पर देखी जा सकती है। वेब-साइट पर होने वाली तकनीकी समस्याओं हेतु विभाग जिम्मेदार नहीं होगा।

टेण्डर आई.डी. क्र.	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (रूपयों में)	अर्नेस्ट मनी डिपोजिट (रूपयों में)	निविदा प्रपत्र का मूल्य (रू.)	कार्य पूर्ण करने की अवधि
1	2	3	4	5	6
2025_PWDRB_422542	ले.नि.वि. संभाग मुरैना के अन्तर्गत सड़क मरम्मत संबंधी (डब्ल्यू.एम.एम., बी.टी. पेंच, रिटेनिंग वॉल/ गार्ड वॉल, सोल्डर एवं पुल-पुलियों की मरम्मत, रिस्क एण्ड कॉस्ट एवं अन्य सड़क मरम्मत) सम्पूर्ण मरम्मत एवं व्ही.व्ही.आई.पी. के आगमन हेतु अति आवश्यक कार्य (बैरीकेटिंग, हैलीपेड कार्य	7500000.00 (पिचहत्तर लाख)	75000/-	10000.00 + Portal Charges	31.03.26 तक
2025_PWDRB_422543	ले.नि.वि. उपसंभाग मुरैना के अन्तर्गत सड़क मरम्मत संबंधी (डब्ल्यू.एम.एम., बी.टी. पेंच, रिटेनिंग वॉल/ गार्ड वॉल, सोल्डर एवं पुल-पुलियों की मरम्मत, रिस्क एण्ड कॉस्ट एवं अन्य सड़क मरम्मत) सम्पूर्ण मरम्मत एवं व्ही.व्ही.आई.पी. के आगमन हेतु अति आवश्यक कार्य (बैरीकेटिंग, हैलीपेड कार्य	5000000.00 (पचास लाख)	50000/-	5000.00 + Portal Charges	31.03.26 तक
2025_PWDRB_422544	ले.नि.वि. उपसंभाग सबलगढ़ के अन्तर्गत सड़क मरम्मत संबंधी (डब्ल्यू.एम.एम., बी.टी. पेंच, रिटेनिंग वॉल/ गार्ड वॉल, सोल्डर एवं पुल-पुलियों की मरम्मत, रिस्क एण्ड कॉस्ट एवं अन्य सड़क मरम्मत) सम्पूर्ण मरम्मत एवं व्ही.व्ही.आई.पी. के आगमन हेतु अति आवश्यक कार्य (बैरीकेटिंग, हैलीपेड कार्य	5000000.00 (पचास लाख)	50000/-	5000.00 + Portal Charges	31.03.26 तक
2025_PWDRB_422545	ले.नि.वि. उपसंभाग अम्बाह के अन्तर्गत सड़क मरम्मत संबंधी (डब्ल्यू.एम.एम., बी.टी. पेंच, रिटेनिंग वॉल/ गार्ड वॉल, सोल्डर एवं पुल-पुलियों की मरम्मत, रिस्क एण्ड कॉस्ट एवं अन्य सड़क मरम्मत) सम्पूर्ण मरम्मत एवं व्ही.व्ही.आई.पी. के आगमन हेतु अति आवश्यक कार्य (बैरीकेटिंग, हैलीपेड कार्य	5000000.00 (पचास लाख)	50000/-	5000.00 + Portal Charges	31.03.26 तक
	योग-04 कार्य	22500000.00 (दो करोड़ पच्चीस लाख)			

1. ऑन लाइन टेण्डर पब्लिश दिनांक – 15.05.2025 समय 10:30 बजे
2. निविदा प्रपत्र डाउनलोड/विक्रय प्रारंभ दिनांक – 15.05.2025 समय 10:30 बजे से
3. निविदा प्रपत्र डाउनलोड/विक्रय अंतिम दिनांक – 30.05.2025 समय 17:30 बजे तक
4. ऑन लाईन बिड सबमिशन का प्रारंभ दिनांक – 15.05.2025 समय 10:30 बजे सक
5. ऑन लाईन बिड सबमिशन का अंतिम दिनांक – 30.05.2025 समय 17:30 बजे तक
6. बिड ओपनिंग दिनांक – 31.05.2025 समय 10:30 बजे

a. अनुबंध के पूर्व एवं अनुबंध अवधि में लेवर पंजीयन करना अनिवार्य होगा, निविदा की वैधता अवधि 120 दिवस होगी।
b. निविदा संबंधी संशोधन उसी टेण्डर में ऑन लाईन देखे जा सकेंगे, अतिरिक्त प्रेस नोट नहीं निकाला जावेगा।
c. सक्षम अधिकारी को निविदा को बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार सुरक्षित होगा।
d. संबंधित मद में आवंटन उपलब्ध होने पर ही भुगतान हो सकेगा।
e. निविदाऐं ऑन-लाईन ही प्रस्तुत की जावें, भौतिक रूप से कोई भी दस्तावेज स्वीकार नहीं किया जावेगा।
f. शासन द्वारा समय-समय पर जारी समस्त नियम एवं संशोधन प्रभावशील होंगे।
g. निविदा के साथ संलग्न शिड्यूल में दर्शाये गये आयटमों के अतिरिक्त प्रचलित एस.ओ.आर. के समस्त आयटम के कार्य सम्मिलित माने जावेंगे।

उपरोक्त वेब-साइट ऑन लाइन भुगतान करने के उपरान्त निविदा प्रपत्र (टेंडर डॉक्यूमेंट) वेब-साइट के माध्यम से प्राप्त हो सकेंगे। विस्तृत एन.आई.टी. एवं अन्य जानकारी उपरोक्त वेब-साइट में देखी जा सकती है।

(अन्वेश प्रताप सिंह)
कार्यपालन यंत्री
लोक निर्माण विभाग संभाग मुरैना
फोन नं. 07532-226361

G12897/25

जन-जन तक पहुँचाना होगी सौर ऊर्जा की जानकारी : संभाग आयुक्त

ग्वालियर । नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में जन भागीदारी और जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन संभागीय आयुक्त मनोज खत्री की अध्यक्षता में आयोजित हुई। सौर ऊर्जा के क्षेत्र में जनभागीदारी बढ़ाने और इसकी जानकारी जन-जन तक पहुँचाने के लिये अभियान के रूप में कार्य करने की बात कही गई।

संभागीय आयुक्त मनोज खत्री ने कहा कि केन्द्र सरकार एवं प्रदेश सरकार द्वारा सौर ऊर्जा के क्षेत्र में विभिन्न योजनाओं के माध्यम से विशेष कार्य किए जा रहे हैं। सौर ऊर्जा के लिये शासन द्वारा संचालित योजनाओं और कार्यक्रमों की जानकारी जन-जन तक पहुँचाना जरूरी है। इसके लिये सभी विभागीय अधिकारी अपने-अपने कार्य क्षेत्र में इसकी जानकारी अधिक से अधिक लोगों को दें। उन्होंने कहा कि निर्माण एजेंसियों के माध्यम से भी निर्माण कार्यों की शुरूआत में भी सौर ऊर्जा के कार्य को भी शामिल किया जाना चाहिए। संभागीय आयुक्त ने कहा कि प्रदेश भर में विभिन्न निर्माण एजेंसियों के माध्यम से किए जाने वाले निर्माण कार्यों की कार्ययोजना में ही सौर ऊर्जा को अनिवार्य किया जाए। इसके लिये शासन स्तर पर प्रयास किए जाना चाहिए। उन्होंने विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया है कि वे अपने-अपने विभाग में सौर ऊर्जा को प्राथमिकता से लागू कराने के प्रयास करें। इसके साथ ही केन्द्र सरकार द्वारा संचालित पीएम कुसुम योजना एवं सूर्य घर योजना की जानकारी भी जन-जन तक पहुँचाकर इसका व्यापक क्रियान्वयन किया जाना चाहिए।

संभागीय आयुक्त खत्री ने कहा कि ग्वालियर-चंबल संभाग में सभी विभागों के माध्यम से सौर ऊर्जा के लिये विभागीय अधिकारी कार्ययोजना बनाकर क्रियान्वयन करें। सौर ऊर्ज के क्षेत्र में कार्य कर रहे विभागीय अधिकारी भी अन्य विभागों के अधिकारियों से समन्वय स्थापित कर सौर ऊर्जा से अधिक से अधिक प्रोजेक्ट स्थापित कराएं। उन्होंने यह भी कहा कि सौर ऊर्जा के क्षेत्र में जो बेहतर कार्य किए गए हैं उनको भी अधिक से अधिक प्रचारित किया जाए ताकि लोग प्रेरित होकर अपने घरों, प्रतिष्ठानों के साथ ही शासकीय भवनों में भी इसका उपयोग प्रारंभ कर सकें। कार्यशाला में राज्य समन्वयक श्रीमती नेहा सिंह एवं उनके साथ आए प्रतिनिधियों ने प्रजेंटेशन के माध्यम से सौर ऊर्जा के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों और विभिन्न योजनाओं की जानकारी प्रस्तुत की। इसके साथ ही केन्द्र सरकार की कुसुम योजना एवं सूर्य घर योजना के संबंध में भी विस्तार से जानकारी दी।

चीनौर तहसील के निरीक्षण में कलेक्टर को मिली खामियां, रीडर निलंबित

ग्वालियर। चीनौर तहसील कार्यालय का कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने शुक्रवार को औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान कार्यालय में मिली अव्यवस्थायें और राज्य शासन द्वारा निर्धारित समय-सीमा में प्रकरणों के निराकरण में देरी सामने आने पर उन्होंने सख्त नाराजगी जताई। कलेक्टर श्रीमती चौहान ने यहाँ के रीडर राजेन्द्र परिहार को निलंबित करने व लिपिक शैलेन्द्र तिवारी की 2 वेतन वृद्धियाँ रोकने के लिये कारण बताओ नोटिस नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। साथ ही यहाँ के तहसीलदार मनीष जैन को भी कारण बताओ नोटिस जारी करने की हिदायत दी है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि यदि तहसीलदार द्वारा दो हफ्ते के भीतर लंबित प्रकरणों का निराकरण नहीं किया गया तो उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जायेगी।

निरीक्षण के दौरान कलेक्टर श्रीमती चौहान ने निर्देश दिए कि जिन प्रकरणों में आदेश जारी हो चुके हैं, उन सभी आदेशों को ऑनलाइन पोर्टल पर अपलोड किया जाए। उन्होंने जोर देकर कहा कि तहसील कार्यालय में एक वर्ष से अधिक अवधि के प्रकरण लंबित नहीं रहना चाहिए। उन्होंने एक वर्ष से अधिक अवधि के 36 प्रकरण लंबित मिलने पर नाराजगी जताई और तहसीलदार को दो हफ्ते के भीतर इन सभी प्रकरणों का निराकरण करने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्रीमती चौहान ने कहा कि जिले के सभी राजस्व कार्यालयों का इसी तरह औचक निरीक्षण किया जायेगा। जिस भी कार्यालय में इस तरह की खामियां पाई जायेंगी वहाँ के तहसीलदार व नायब तहसीलदार सहित अधीनस्थ कर्मचारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जायेगी। उन्होंने जिले के सभी एसडीएम एवं अन्य सभी राजस्व अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि सभी राजस्व प्रकरण आरसीएमएस में दर्ज करें और शासन के दिशा-निर्देशों के तहत निर्धारित समयावधि में प्रकरणों का निराकरण किया जाए। कलेक्टर ने कहा है कि राजस्व न्यायालयों में तारीख पर तारीख देने की प्रवृत्ति से बचें और नियमित सुनवाई कर राजस्व प्रकरणों का निपटारा किया जाए। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर श्रीमती चौहान ने जन समस्यायें भी सुनीं। उन्होंने तहसील कार्यालय में अपने काम से आए क्षेत्रीय किसानों से एक - एक कर चर्चा की और उनके आवेदनों के निराकरण के निर्देश तहसीलदार को दिए।

बरसात से पहले पूर्ण कराएँ सभी खेत तालाबों का काम: कलेक्टर श्रीमती चौहान

ग्वालियर । निर्माणाधीन खेत तालाब व अमृत सरोवरों सहित अन्य जल संरचनाओं का काम जून माह तक पूरा कराएं, जिससे बरसात में इन जल संरचनाओं का उपायोग वर्षा जल सहेजने में हो सके। इस आशय के निर्देश कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने खेत तालाबों के निरीक्षण के दौरान दिए। उन्होंने शुक्रवार को तपती दोपहरी में जिले की दूरस्थ ग्राम पंचायत भौरी व एराया में निर्माणाधीन खेत तालाबों का जायजा लिया।

ग्राम भौरी में महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) के तहत 9 किसानों के खेतों में खेत तालाब बनाए जा रहे हैं। कलेक्टर श्रीमती चौहान ने खेत तालाबों एवं अन्य जल संरचनाओं के निरीक्षण के दौरान निर्देश दिए कि कार्य स्थल पर पेयजल की पुख्ता व्यवस्था की जाए। उन्होंने कहा तालाबों में काम कर रहे श्रमिकों को भुगतान में देरी न हो। जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत ग्वालियर जिले की सभी ग्राम पंचायतों में कुल 854 खेत तालाब स्वीकृत किए गए हैं। इनमें से 794 खेत तालाबों का काम शुरू हो चुका है। इसी तरह जिले में 903 पुराने कुँओं को रीचार्ज करने के कार्य स्वीकृत किए गए हैं। इनमें से 810 कुँओं को रीचार्ज करने के लिये संरचनायें बनाने का काम जारी है। जिले में 6 अमृत सरोवर भी स्वीकृत किए गए हैं।

भारतीय संस्कृति का आधार है वैदिक शिक्षा: स्वामी प्रेमानंद

ग्वालियर। शुक्रवार को सरस्वती शिशु मंदिर चिटनिस की गोठ विद्यालय में श्रीमद भागवत कथा का प्रथम दिवस अत्यंत श्रद्धा, भक्ति एवं आध्यात्मिक उल्लास के साथ संपन्न हुआ। कथा का शुभारंभ ब्रह्मचारी स्वामी प्रेमानंद महाराज द्वारा ष्कृष्णाय नमःष् भजन से हुआ, जिसने उपस्थित भक्तजनों को भक्ति भाव में डुबो दिया। अपने दिव्य प्रवचन में स्वामी जी ने कहा कि वैदिक शिक्षा ही समस्त शिक्षाओं की मूल आधारशिला है। उन्होंने बताया कि वेदव्यास जी ने वेदों को सुव्यवस्थित रूप देकर मानव कल्याण के लिए उन्हें सुलभ किया। ऋषियों को ''मंत्रदृष्टा'' बताते हुए उन्होंने वैदिक परंपरा की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने सुंदर उपमा देते हुए कहा कि जैसे वृक्ष की जड़ें दिखाई नहीं देतीं, परंतु वे होती अवश्य हैं, उसी प्रकार वैदिक शिक्षा भी प्रत्यक्ष नहीं दिखती पर वह सभी शिक्षाओं की जड़ है। प्रथम दिवस की कथा में श्रीमद भागवत महात्मा की विस्तारपूर्वक चर्चा की गई। स्वामी जी ने भगवान श्रीकृष्ण के आनंद स्वरूप का मनोहर चित्रण करते हुए बताया कि जो परिवर्तनशील है वह जगत है, और जो अपरिवर्तनशील है वह जगदीश है। उन्होंने 'दैहिक', 'दैविक' और 'भौतिक' तापों का उल्लेख करते हुए उनके निवारण हेतु श्रीकृष्ण भक्ति को उपाय बताया। भारत की अरण्य संस्कृति का उल्लेख करते हुए कहा कि जहां रहकर संसार के बंधनों से मुक्ति मिले, वही जंगल है। कथा के दौरान गौमती अर्थात 'सात्विक मति' का भी वर्णन किया गया, और इसके माध्यम से 'भक्ति, ज्ञान एवं वैराग्य' की प्रेरणादायी झांकी प्रस्तुत की गई, जिसने उपस्थित श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया। भक्ति रस में डूबे अनेक भजनों का गायन हुआ, जिनमें दया निधि हम पर दया करिए और हरि शरणम हरि शरणमष् जैसे भजनों ने संपूर्ण वातावरण को भक्तिरस से सराबोर कर दिया। कार्यक्रम का समापन आरती एवं प्रसाद वितरण के साथ

शाक्य को सहायक यंत्री का प्रभार

ग्वालियर । कार्य सुविधा एवं प्रशासनिक दृष्टि से वीरेन्द्र शाक्य उपयंत्री के कार्यों में फेरबदल किया गया है। निगम आयुक्त संघप्रिय के जारी आदेशानुसार वीरेन्द्र शाक्य उपयंत्री को अपने वर्तमान कार्य के साथ साथ प्र. सहायक यंत्री जनकार्य (क्षेत्र क्रमांक 11,12,13,14) का दायित्व आगामी आदेश होने तक अस्थाई रूप से सौंपा गया है। साथ ही श्रीमती शालिनी सिंह सहायक यंत्री जनकार्य केवल क्षेत्र क्रमांक 11,12,13,14 के दायित्व से मुक्त रहेंगी एवं इनके शेष कार्य यथावत रहेंगे।

पिपरौआ निवासी सत्यवती को मिला जमीन का कब्जा

ग्वालियर। जिले के ग्राम पिपरौआ निवासी श्रीमती सत्यवती को अपनी जमीन का कब्जा मिल गया है। इसके लिये उन्होंने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान के प्रति धन्यवाद व्यक्त किया है। कलेक्टर श्रीमती चौहान के निर्देश पर राजस्व व पुलिस की संयुक्त टीम ने मौके पर पहुँचकर सत्यवती को विधिवत कब्जा दिलाया। जिले के ग्राम पिपरौआ निवासी श्रीमती सत्यवती ने कलेक्टर श्रीमती चौहान से भेंट कर फरियाद की थी कि जमीन का कब्जा न मिलने से मुझे काफी परेशानी हो रही है। इस पर कलेक्टर श्रीमती चौहान ने चीनौर तहसीलदार को मौके पर जाकर कब्जा दिलाने के निर्देश दिए। उनके निर्देश पर शुक्रवार को राजस्व टीम पिपरौआ पहुँची और जमीन की नपाई कराई। साथ ही पंचनामा बनाकर सत्यवती की जमीन का कब्जा दिलाया। जमीन का कब्जा मिला तो सत्यवती भावुक हो गई और सरकार को दुआएँ देतीं अपने घर गईं।

रोटरी क्लब ग्वालियर तेजस का प्रतिभा सम्मान समारोह एवं समर कैंप आयोजित

'सेवा ही जीवन है' की भावना को साकार कर रहा रोटरी क्लब ग्वालियर तेजसः आशीष उषा

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-
ग्वालियर। यह समारोह न केवल प्रतिभाओं को सम्मानित करने का एक मंच था, बल्कि समाज में सकारात्मकता और प्रेरणा का संचार करने का एक उत्कृष्ट प्रयास भी रहा। रोटरी क्लब ने एक बार फिर सिद्ध किया कि सामाजिक उत्थान के लिए उनकी प्रतिबद्धता अटूट है। रोटरी क्लब सदैव अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों को निभाते हुए समाज के लिए प्रेरणास्त्रोत बना हुआ है। 'सेवा ही जीवन है' की भावना को समर्पित यह संस्था निःस्वार्थ भाव से जनहित में कार्य कर रही है। यह बात भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश मीडिया प्रभारी आशीष उषा अग्रवाल ने रोटरी क्लब ग्वालियर तेजस द्वारा सांदीपनी पद्मा राजे कन्या विद्यालय में आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह एवं समर कैंप में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए कही।

भाजपा के प्रदेश मीडिया प्रभारी आशीष उषा अग्रवाल ने कहा कि रोटरी क्लब-तेजस ने एक शानदार प्रतिभा सम्मान समारोह एवं समर कैंप का आयोजन किया, जो शहर के सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य में एक सुनहरा अध्याय जोड़ गया। जब किसी मंच से प्रतिभाओं का सम्मान होता है तो निश्चित ही हम एक बेहतर कल को आकर दे रहे होते हैं। यह आयोजन बच्चों को कुछ नया सीखने का अवसर था। योग हमें शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाता है इसलिए आप लोगों ने जो यहां पर सीखा है उसे जीवन का प्रमुख अंग बनाएं और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत के संकल्प को साकार करने में सहभागी बनें। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय सेना ने न केवल सीमा पार घुसकर पाकिस्तान में 9 टेरर लॉन्चिंग पैड पूरी तरह तबाह किए, बल्कि उनके एयरबेसों को भी समूल नष्ट कर दिया। यह हमला केवल जवाब नहीं था -यह एक स्पष्ट संदेश था कि अब भारत सहन नहीं, समाप्त करता है। 'यह मोदी युग का भारत है- जो पहले चेतावनी नहीं देता, सीधे कार्रवाई करता है।' अब भारत चुप नहीं बैठता, अब भारत जवाब देता है – वह भी दुगुना और निर्णायक क्षमता के साथ। इस अवसर पर रोटरी क्लब-तेजस के अध्यक्ष रोटे. राकेश जैन, रोटे. चंद्रप्रकाश खंडेलवाल, रोटे. धर्मेंद्र जैन, चार्ट प्रेसिडेंट नरेश जैन, वैश्य महासम्मेलन तहसील मुरार के अध्यक्ष वैश्य महेंद्र जैन, महामंत्री वैश्य आशीष जैन, कोषाध्यक्ष वैश्य सचिन जैन, प्रदीप पाराशर, राजेश तायल, महेश चंद्र जैन, संजय श्रोतीय, अमरीश गुप्ता सहित संस्था के पदाधिकारी व गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

21 मई से शुरू होगा एक मुश्त राशन वितरण का काम

ग्वालियर। जिले में भी शासकीय उचित मूल्य की दुकानों से पात्र परिवारों को एक मुश्त तीन माह अर्थात जून, जुलाई एवं अगस्त का राशन वितरित किया जायेगा। कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने खाद्य विभाग के अधिकारियों को राज्य शासन के दिशा-निर्देशों के तहत सुव्यवस्थित ढंग से पात्र परिवारों को तीन माह का राशन वितरित कराने के निर्देश दिए हैं।

जिला आपूर्ति नियंत्रक विपिन कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि तीन माह का एक मुश्त खाद्यान्न वितरित कराने के लिये सभी उचित मूल्य की दुकानों पर 3гз का बैनर प्रदर्शित कराने के निर्देश दिए गए हैं। इस बैनर पर यह प्रदर्शित किया जायेगा कि मई माह का खाद्यान्न 20 मई 2025 तक वितरित किया जायेगा। इसके बाद 21 मई से जून, जुलाई एवं अगस्त का राशन एक मुश्त उचित मूल्य की दुकानों से वितरित होगा। जिले के सभी सहायक व कनिष्ठ आपूर्ति अधिकारियों एवं उचित मूल्य की दुकानों के प्रबंधक व विक्रेताओं को शेष बचे सभी सदस्यों की ई-केवायसी का काम 31 मई तक पूर्ण कराने के निर्देश भी दिए गए हैं।

6 चिकित्सा अधिकारियों की स्थानान्तरण सूची जारी

डॉ. अभिषेक शर्मा सिटी डिस्पेंसरी में पदस्थ होंगे

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-
भोपाल। वरिष्ठ संयुक्त संचालक संचालनालय लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा, मध्यप्रदेश डॉ. राजू निदारिया द्वारा छः चिकित्सा अधिकारियों की स्थानान्तरण सूची जारी की गई है। इनमें डॉ. सुनील कुमार यादव प्रभारी मुख्य खण्ड चिकित्सा अधिकारी श्योपुर को प्रभारी उप संचालक, कार्यालय क्षेत्रीय संचालक ग्वालियर, डॉ. भारती चौधरी दंत चिकित्सक सिविल अस्पताल पिपरिया जिला नर्मदापुरम को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र माढ़वताल जिला जबलपुर, डॉ. रुचि जोशी चिकित्सा अधिकारी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र गुर्रा जिला नर्मदापुरम को सिविल डिस्पेंसरी गोविंदपुरा जिला भोपाल, डॉ. अपूर्वा वाजपेयी चिकित्सा अधिकारी कार्यालय मुख्य कार्यपालन यंत्री आयुष्मान भारत दीनदयाल स्वास्थ्य सुरक्षा परिषद को सिविल डिस्पेंसरी बल्लभ भवन जिला भोपाल, डॉ. अभिषेक शर्मा चिकित्सा अधिकारी सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र नूराबाद जिला मुरैना को सिटी डिस्पेंसरी जिला मुरैना, डॉ. सुभाष कुमार सोनकर चिकित्सा अधिकारी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र चाचौड़ा जिला गुना को जिला चिकित्सालय गुना स्थानान्तरित किया गया है।

चतुर्थ पुण्य स्मरण
निर्भीक पराक्रमी एवं चरित्रवान व्यक्तित्व
विनम्र श्रद्धांजलि

श्री नवीन शिवहरे
पुत्र श्री आमेप्रकाश शिवहरे जी
श्रद्धांवत परिवार
श्रीमती निधि शिवहरे (धर्मपत्नि), कु. निकिता, कु. रिधिमा, रेवन्त (पुत्र-पुत्री), कु. जायस (भतीजी), श्रीमती वीना-ओमप्रकाश शिवहरे (माता-पिता), प्रशांत-नेहा शिवहरे (भाई-छोटी बहू), श्रीमती स्वीटी-मनीष गुप्ता (बहन-बहनोई), ऐंजल (भांजी), अजय कुलश्रेष्ठ (मास्टर), प्रदीप शर्मा (कल्लू आर.टी.ओ.), दिनेश राजपूत, बॉबी शर्मा, मुनेश यादव (मुन्ना), मनोज यादव (शेरू) एवं समस्त मित्रगण
प्रतिष्ठान
होटल शिवम पैलेस स्टेशन रोड़ मुरैना, शिवहरे सैल्स
मोबा.- 98063-74445

हार्टीकल्चर क्लस्टर विकास कार्यक्रम पर क्षेत्रीय जागरूकता बैठक

बागवानी क्षेत्र को सशक्त करने और किसानों की आय बढ़ाने पर हुआ मंथन

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-
भोपाल। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय तथा राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड, भारत सरकार के समन्वय से मध्यप्रदेश के उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग द्वारा ''हार्टीकल्चर क्लस्टर विकास कार्यक्रम (CDP)'' के अंतर्गत ''क्षेत्रीय जागरूकता कार्यक्रम सह हितधारक बैठक'' का आयोजन भोपाल स्थित मध्यप्रदेश उद्योग विकास निगम, पंचानन भवन में किया गया।

आयुक्त, उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण श्रीमती प्रीति मैथिल ने कहा कि बागवानी क्षेत्र में समग्र विकास, अधोसंरचना विस्तार, बाजार सुविधा, मूल्य संवर्धन एवं किसानों की आमदनी में वृद्धि जैसे उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए यह कार्यक्रम अत्यंत महत्वपूर्ण है। आयुक्त श्रीमती मैथिल ने प्रदेश से इच्छुक हितधारकों को योजना के अंतर्गत कॉन्सेप्ट नोट एनएचबी पोर्टल पर प्रस्तुत करने के लिये प्रोत्साहित किया और अधिक से अधिक सहभागिता की अपील की। सभी संबंधित एजेंसियाँ एवं निजी संस्थान इस कार्यक्रम में सक्रिय सहयोग करें जिससे बागवानी क्षेत्र को एक नई दिशा और किसानों को बेहतर लाभ मिल सके।

राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड, भारत सरकार के उप संचालक रविन्द्र दांगी ने सीडीपी योजना की विस्तृत जानकारी साझा की। उन्होंने बताया कि योजना के तहत हाई वैल्यू मल्टी कमोडिटी और पेरी अर्बन क्लस्टर्स विकसित किए जाएंगे। इसके लिए एक चिन्हित फोकस फसल होना आवश्यक है और उस फसल का वार्षिक फार्म गेट मूल्य कम से कम 100 करोड़ रुपये होना चाहिए। योजना में वित्तीय सहायता की अधिकतम सीमा फार्म गेट मूल्य के 25 प्रतिशत तक निर्धारित की गई है। बैठक में सीडीपी योजना के अंतर्गत आने वाले मुख्य पैरामीटर, फसल चयन, मूल्यांकन मापदंड, क्लस्टर विकास की प्रक्रिया, किसानों की भागीदारी तथा लाभार्थियों की पात्रता पर भी चर्चा की गई। हितधारकों द्वारा योजना के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए अपने सुझाव भी प्रस्तुत किए गए।

बैठक में भोपाल संभाग से श्रीमती यशोधरा कल्याण, सीडीपी प्रोजेक्ट मैनेजमेंट यूनिट से श्रीमती नीरू दुबे, एस.के विधान, मध्यप्रदेश कृषि उद्योग विकास निगम, किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग, मध्यप्रदेश राज्य कृषि विपणन बोर्ड, के प्रतिनिधि, तकनीकी विशेषज्ञ ओर निजी क्षेत्र के अन्य हितधारक ऑनलाईन एवं ऑफलाइन माध्यम से उपस्थित रहे।

स्वामित्वधिकारी प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक चन्द्रप्रकाश शिवहरे के लिए मै. अंजली पब्लिकेशन एबी रोड़ मथुरा से मुद्रित, एवं ए-44-फस्ट फ्लोर, अशोका इन्क्लेव, पार्ट-2 सेक्टर- 37 फरीदाबाद हरियाणा (NCR) से प्रकाशित,
आरएनआई नं. एचएआरएचआईएन /2009/ 28496 संपादक चन्द्रप्रकाश शिवहरे। मो. 9958434103 सभी विवादों का न्याय क्षेत्र फरीदाबाद न्यायालय होगा।